शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 39 पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | मंगलवार 05 मार्च 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

'मैं हूं मोदी का परिवार...'

परिवारवाद के खिलाफ पीएम ने दिया नया नारा; लालू के बयान पर किया पलटवार

आदिलाबाद (तेलंगाना)।
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज तेलंगाना में 56,000 करोड़ रुपये से अधिक की कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। इसके बाद पीएम मोदी ने आदिलाबाद की जनता को संबोधित करते हुए कहा कि आज यह चुनावी सभा नहीं, बल्कि विकास- उत्सव है। इस दौरान उन्होंने विपक्ष के बिगड़े बोल पर भी पलटवार किया।

'चुनावी सभा नहीं, विकास उत्सव है': जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा, "जैसे ही मैंने करोड़ों रुपये की विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया, कुछ लोगों ने इसे 'चुनावी सभा' कहा है। मैं उन 'विश्लेषकों' को बताना चाहता हूं कि अभी चुनाव की घोषणा भी नहीं हुई है। यह 'चुनावी सभा' नहीं, बल्कि तेलंगाना में 'विकास उत्सव' है, जिसे मनाने के लिए मैं आया हूं!"

'मेरा भारत-मेरा परिवार': पीएम मोदी: पीएम मोदी ने लालू प्रसाद यादव के बोल पर पलटवार करते हुए कहा निशाना साधा। उन्होंने कहा, "भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टिकरण में आकंठ डूबे कथित गठबंधन के नेता बौखलाते जा रहे हैं।

अब इन्होंने 2024 के चुनाव का अपना असली घोषणा पत्र निकाला है। मैं इनके परिवारवाद पर सवाल उठाता हूं, तो इन लोगों ने अब बोलना शुरू कर दिया है कि मोदी का कोई परिवार नहीं है। कल ये ऐसा भी कह सकते हैं कि तुम्हें कभी जेल की सजा नहीं हुई, इसलिए तुम राजनीति में भी नहीं आ सकते।"

'आपके लिए जी रहा हूं और जूझ रहा हूं': पीएम मोदी ने विपक्ष पर पलटवार करते हुए कहा, "140 करोड़ देशवासी ही मेरा परिवार है।

आज देश की करोड़ों बेटियां-माताएं-बहनें यही मोदी का परिवार है। देश का हर गरीब मेरा परिवार है। जिसका कोई नहीं है, वो भी मोदी के हैं और मोदी उनका है। मेरा भारत-मेरा परिवार, इन्हीं भावनाओं का विस्तार लेकर मैं सपनों को संकल्प के साथ सिद्ध करने के लिए, आपके लिए जी रहा हूं, आपके लिए जूझ रहा हूं और आपके लिए जूझता रहूंगा।"

'आदिवासी समाज के लिए किया काम'

पीएम मोदी ने कहा, "हमने आदिवासी समाज के लिए काम किया है, जो कुछ लोगों को पसंद नहीं आ रहा है। हमने पीएम जन-जन योजना शुरू की और सभी वर्गों के लोगों के लिए समान अवसर तैयार किया है।"

'तेलंगाना बनेगा गवाह'- पीएम मोदी

तेलंगाना को हजारों करोड़ रुपये की सौगात देने के बाद पीएम मोदी ने कहा, "तेलंगाना की धरती आज कई विकास परियोजनाओं की गवाह बन रही है। आज मैं आप सबके बीच 30 से ज्यादा विकास कार्यों के लोकार्पण और शिलान्यास करूंगा। 56 हजार करोड़ से भी ज्यादा की परियोजना तेलंगाना समेत देश के कई राज्यों का विकास करेंगे।" योजनाओं में ऊर्जा से जुड़े कई बड़े प्रोजेक्ट है, पर्यावरण के लिए कई कार्य है और आधुनिक रोड नेटवर्क विकसितक करने वाले हाईवे भी हैं। इस परियोजनाओं के लिए मैं सभी को बहुत-बहुत बधाई देता हूं।"

अगले पांच सालों में तेजी से होगा विकास

पीएम मोदी ने कहा, "पिछले 10 वर्षों में हमारी सरकार ने तेलंगाना के विकास के लिए कहीं ज्यादा राशि खर्च की है। हमारे लिए विकास का मतलब है, गरीब से गरीब का विकास, दलित, वंचित, आदिवासियों का विकास करना। हमारे इन प्रयासों का परिणाम है कि आज 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आ चुके हैं, ये हमारी गरीब कल्याण योजनाओं की वजह से मुमकिन हुआ है। विकास के इस अभियान को अगले 5 वर्षों में और तेजी से आगे बढ़ाया जाएगा।"

बढ़ेगी तेलंगाना की ऊर्जा उत्पादन क्षमता

पीएम मोदी ने अपने संबोधन में कहा, "तेलंगाना अपने गठन के 10 साल पूरे करने जा रहा है। केंद्र सरकार उन आकांक्षाओं को पूरा करने की पूरी कोशिश कर रही है, जो उस समय लोगों की थीं। हमने एनटीपीसी की दूसरी इकाई का उद्घाटन किया है, जिसकी क्षमता 800 मेगावाट ऊर्जा उत्पादन है। इससे तेलंगाना की ऊर्जा उत्पादन क्षमताएं बढ़ेंगी और अन्य संबंधित मुद्दों का समाधान मिलेगा।"

रोड और रेलवे कनेक्टिविटी से बढ़ेगा रोजगारः उन्होंने कहा, "आज राष्ट्रीय राजमार्गों का भी उद्घाटन किया गया है। रेलवे और राजमार्गों के माध्यम से कनेक्टिविटी बढ़ने से तेलंगाना के विकास की गति और बढ़ेगी। इससे न केवल यात्रा में लगने वाला समय कम होगा बल्कि पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र को भी बढ़ावा मिलेगा, जिससे क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।"

पिछली तिमाही में तेजी से बढ़ी अर्थव्यवस्था

"आज हर कोई भारत के विकास की गति के बारे में बात कर रहा है। भारत एकमात्र प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है, जो पिछली तिमाही में 8.4% की दर से बढ़ी है। पिछले 10 वर्षों में, भारत में काम करने का तरीका बदल गया है। हमारी सरकार ने तेलंगाना का विशेष ध्यान रखा है। हमारे लिए विकास का मतलब हाशिये पर पड़े लोगों की प्रगति है।"

हर महिला को 1000 रुपये महीना देगी केजरीवाल सरकार

नई दिल्ली

अरविंद केजरीवाल ने मुफ्त योजनाओं की घोषणा करने की जो राजनीति शुरू की थी, उसने उन्हें दिल्ली में अजेय बना दिया। इन्हीं मुफ्त की योजनाओं के दम पर आम आदमी पार्टी ने दिल्ली के बाद पंजाब में भी शानदार जीत हासिल की और बाद में राष्ट्रीय पार्टी भी बन गई। अब जबकि अरविंद केजरीवाल के ऊपर लोकसभा चुनावों से ठीक पहले शराब घोटाले में गिरफ्तार किए जाने का खतरा मंडरा रहा है, दिल्ली सरकार ने मुफ्त की घोषणाओं को एक नए स्तर पर पहुंचा दिया है। पार्टी ने राजधानी की हर महिला को एक हजार रुपये प्रति माह देने की घोषणा कर दी है। आम आदमी पार्टी ने स्वयं इसे राजधानी में राम राज्य आने की संज्ञा दी है। अरविंद केजरीवाल सरकार की इन घोषणाओं से गरीब-झुग्गी-झोपड़ी वालों के बीच उसकी लोकप्रियता को एक बार और बढ़ा सकते हैं, जिसमें फिलहाल कुछ कमी आने की बात कही जा रही थी। इसे आम आदमी पार्टी का बड़ा चुनावी दांव कहा जा रहा है।

क्या दिया दिल्ली सरकार ने?

दिल्ली सरकार में वित्त मंत्री आतिशी मारलेना ने विधानसभा में बजट पेश करते हुए कहा है कि अगले साल से मुख्यमंत्री महिला सम्मान योजना की शुरूआत की जाएगी। इसके अंतर्गत 18 वर्ष से ऊपर की हर महिला को एक हजार रुपये प्रति महीना दिया जाएगा। इसके पहले मध्यप्रदेश में तत्कालीन शिवराज सिंह सरकार ने लाड़ली योजना के अंतर्गत हर महिला को 1250 रुपये देने की घोषणा कर सारे राजनीतिक समीकरण पलट दिए थे। उसी प्रकार की सफलता दिल्ली में आम आदमी पार्टी को भी मिल सकती है। आम आदमी पार्टी अपने राज्यों में इस तरह की घोषणा कर सकती है, लेकिन भाजपा इस तरह का कोई चुनावी वादा नहीं कर सकती क्योंकि यदि वह ऐसी घोषणा करती है, तो उसे राष्ट्रीय स्तर पर इस तरह की योजना लानी होगी, जिसके लिए भारी धन खर्च होगा जिसकी सरकार के पास पहले ही कमी है। लेकिन अरविंद केजरीवाल यह दांव इसलिए खेल सकते हैं क्योंकि उन्हें यह वादा केवल दिल्ली और पंजाब में निभाना होगा, जहां उसकी सरकारें हैं। केजरीवाल सरकार की इस घोषणा से दिल्ली के राजनीतिक समीकरणों में एक बार फिर बड़ा बदलाव हो सकता है। भाजपा ने 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में एक तरफा जीत हासिल की थी, लेकिन इस बार आम आदमी पार्टी और कांग्रेस मिलकर चुनाव लड़ रहे हैं। इससे दिल्ली की राजनीतिक परिस्थितियों में बदलाव आ सकता है। केजरीवाल सरकार की इस तरह की घोषणाएं भी भाजपा की राह में मुश्किलें खड़ी कर सकती हैं।

स्वदेशीकरण की जरूरतः राजनाथ सिंह

नई दिल्ली

रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण को बढ़ावा देने के लिए डेफकनेक्ट सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान, एयर चीफ मार्शल विवेक आर चौधरी और रक्षा सचिव गिरिधर अरामाने भी शामिल हुए।

स्वदेशीकरण की जरूरतः राजनाथ सिंह

राजनाथ सिंह ने इस सेमिनार को संबोधित भी किया। उन्होंने कहा, "कोई भी देश सर्वोत्तम तकनीक साझा नहीं करता है।

दूसरे देशों से प्राप्त तकनीक का भी हमारे सीखने से कोई संबंध नहीं होता है। यह तभी हो सकता है जब हम इसे स्वदेशी तरीके से विकसित करें।" उन्होंने आगे कहा, "हम युवाओं को नए विचार लाने वाले युवाओं को प्रोत्साहित किया है। रक्षा क्षेत्र में

नवीनीकरण और तकनीक को बढ़ावा देने के लिए इनोवेशन ऑफ डिफेंस एक्सीलेंस (आईडीईएक्स) लाया गया है। मैं रक्षा उत्पादन विभाग को आईडीईएक्स (एडीआईटीआई) योजना के साथ विकास शुरू करने के और इस नाम के लिए बधाई देना चाहता हूं, जिसका अर्थ है देवताओं की मां।" राजनाथ सिंह ने कहा कि निजी क्षेत्र को फलने-फूलने देने के लिए एक मंच की आवश्यकता है। उस मंच के लिए हमें कानून-व्यवस्था, कर्मचारी, कानून का शासन और विकास के लिए पारिस्थितिकी तंत्र की आवश्यकता है।

घरेलू रक्षा उत्पादन पर बोले रक्षा मंत्रीः केंद्रीय रक्षा मंत्री ने कहा, हम रणनीतिक स्वायत्तता तभी बरकरार रख पाएंगे जब हथियार और साजो-सामान हमारे देश में, हमारे अपने लोगों द्वारा बनाए जाएं। हमने इस दिशा में काम किया और हमें सकारात्मक परिणाम भी दिखे। राजनाथ सिंह ने आगे बताया, ह्यह्यवर्ष 2014 के आसपास, हमारा घरेलू रक्षा उत्पादन लगभग 44,000 करोड़ रुपये था, आज हमारा घरेलू रक्षा उत्पादन एक लाख करोड़ रुपये के रिकॉर्ड आंकड़े को पार कर गया है और यह लगातार बढ़ रहा है।

राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत जैसा विशाल देश किसी भी महत्वपूर्ण क्षेत्र में आयात पर निर्भर नहीं रह सकता। अगर हम सैन्य साजो-सामान और हथियारों के आयात पर निर्भर रहेंगे तो यह निर्भरता हमारी रणनीतिक स्वायत्तता के लिए घातक हो सकती है

गुजरात में कांग्रेस को बड़ा झटका

पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और एमएलए अर्जुन मोढवाडिया ने दिया इस्तीफा

अहमदाबाद

राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा के गुजरात पहुंचने से एक दिन पहले कांग्रेस पार्टी को एक और बड़ा झटका लगा है। पोरबंदर से विधायक, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और एमएलए अर्जुन मोढवाडिया आज दोपहर विधानसभा पहुंचे और विधायक पद से इस्तीफा दे दिया है।

कांग्रेस से इस्तीफे के बाद अर्जुन मोढवाडिया ने कहा कि जब कोई पार्टी जनता से अपना जुड़ाव खो देती है तो वह ज्यादा दिनों तक टिक नहीं पाती। देश की जनता चाहती थी कि राम मंदिर का निर्माण हो। कांग्रेस ने भी तय किया था कि सुप्रीम कोर्ट से संवैधानिक फैसला आने के बाद हम इसका समर्थन करेंगे। फिर भी प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया गया। अर्जुन ने कहा कि मैंने तब भी

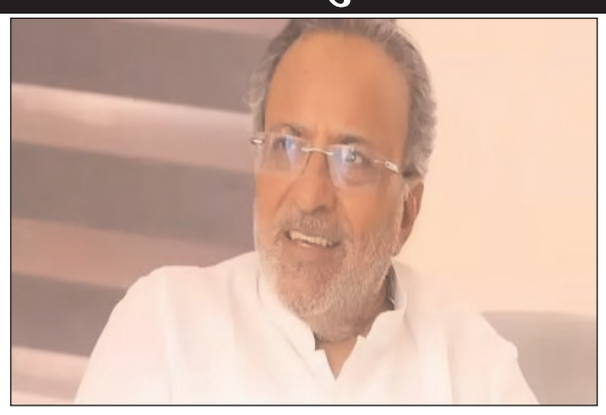

आवाज उठाई थी कि इससे जनता की भावना आहत होगी और हमें ऐसे राजनीतिक फैसले नहीं लेने चाहिए और उस फैसले से लोगों के साथ जुड़ाव की कमी का पता चलता है। मैंने कई अन्य मामलों में भी अपनी बात पहुंचाने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सका। आखिरकार, मैंने आज इस्तीफा देने का फैसला किया। अर्जुन मोढवाडिया अयोध्या में 22 जनवरी को हुए राम मंदिर में हुई प्राण प्रतिष्ठा में शामिल नहीं होने के कांग्रेस आलाकमान के फैसले से नाखुश थे। पार्टी के खिलाफ उनके बयान के बाद से ही कांग्रेस छोड़ने और बीजेपी में जाने की अटकलें शुरू हो गई थी। अंबरीश डेर के कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा देने के बाद से ही राजनीतिक चर्चा चल रही थी कि पोरबंदर विधायक अर्जुन मोढवाडिया भी इस्तीफा दे सकते हैं। हालांकि, शाम को अर्जुन मोढवाडिया विधानसभा पहुंचे और सभापति शंकर चौधरी से मुलाकात के बाद विधायक पद से इस्तीफा दे दिया। उनके जल्द ही बीजेपी में शामिल होने की संभावना है। वहीं अंबरीश डेर के पार्टी छोड़ने के एलान से पहले ही गुजरात के प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष शक्तिसिंह गोहिल ने रविवार को बताया कि पार्टी ने अंबरीश को छह साल के लिए पार्टी से निकाल दिया है। कल अटकलें लगाई जा रही थीं कि अंबरीश डेर बीजेपी में शामिल होंगे। अब इस अटकल पर विराम लग गया है। अंबरीश ने आज कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया और कल बीजेपी में शामिल होंगे।

भाजपा की दूसरी सूची कल आने की संभावना'

नई दिल्ली

लोकसभा चुनाव 2024 में भाजपा प्रत्याशियों की अगली सूची जल्द जारी होने की संभावना है। कद्दावर भाजपाई बीएस येदियुरप्पा ने बताया है कि भाजपा बुधवार को उम्मीदवारों की दूसरी सूची जारी कर सकती है। कर्नाटक के पूर्व सीएम येदियुरप्पा ने कहा कि भाजपा प्रत्याशियों की सूची बुधवार कोजारी किए जाने की संभावना है। उन्होंने कहा कि वे दिल्ली रवाना हो रहे हैं। प्रत्याशियों की सूची पर पार्टी आधिकारिक तौर पर जल्द ही अहम अपडेट शेयर करेगी।सोमवार को येदियुरप्पा ने कहा कि वे बुधवार को दिल्ली में आयोजित बैठक में शामिल होने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कर्नाटक सहित दूसरे प्रदेशों की संसदीय सीटों पर भी उम्मीदवारों की सूची को अंतिम रूप दिया जा सकता है। उन्होंने कहा , 'मेरा मानना है कि परसों सूची फाइनल हो जाएगी। राष्ट्रीय नेता सूची पर अंतिम फैसला करेंगे।'

आलाकमान करेगा अंतिम फैसला, राष्ट्रीय नेतृत्व का मन भांपना आसान नहीं: क्या भाजपा की दूसरी सूची में कर्नाटक की सभी 28 लोकसभा सीटों पर प्रत्याशियों के नाम का एलान कर दिया जाएगा? इस सवाल पर येदियुरप्पा ने कहा, अब संभवतः कोई देरी नहीं होगी। सभी सीटों पर प्रत्याशियों के नाम की घोषणा हो सकती है। कर्नाटक में नए प्रत्याशियों के नाम पर दांव लगाने के बारे में येदियुरप्पा ने कहा, 'इस बात का कोई अंदाजा नहीं है कि पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं के मन में क्या चल रहा है।' उन्होंने कहा कि पार्टी आलाकमान ही अंतिम फैसला करेगा।

पहली सूची में 195 उम्मीदवारों की घोषणाः गठबंधन सहयोगी जनता दल सेकुलर (जेडीएस) को कितनी सीटें दी जाएंगी? इस सवाल पर येदियुरप्पा ने मौन साध लिया। हालांकि, उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के नेतृत्व वाली पार्टी के साथ सीट शेयरिंग पर जल्द समझौता किया जाएगा। गौरतलब है कि भाजपा ने पहली सूची में 195 उम्मीदवारों के नाम का एलान किया है। दो मार्च को जारी इस सूची में पार्टी ने 16 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की लोकसभा सीटों पर प्रत्याशियों के नाम का एलान कर दिया।

गर्मियों में टूटेगा बिजली डिमांड का रिकॉर्ड

नई दिल्ली/समाचार क्यारी

हर साल गर्मी के सीजन में बिजली की डिमांड बढ़ जाती है। इसकी वजह फ्रिज, फैन, कूलर और एसी जैसे उपकरणों का इस्तेमाल बढ़ना होता है। यही वजह है कि गर्मियों में अक्सर बिजली संकट देखने को मिलता है। इस बार भी गर्मियों के दौरान देश में बिजली की अधिकतम मांग 260 गीगावॉट तक जा सकती है। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण के चेयरपर्सन घनश्याम प्रसाद ने लाइनमैन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम से इतर मीडिया से बात करते हुए कहा कि इसमें पिछले साल के मुकाबले 7 फीसदी का इजाफा हो सकता है। पिछले साल गर्मी में बिजली मंत्रालय ने अधिकतम मांग 229 गीगावॉट रहने का अनुमान जताया गया था।

'वकील पब्लिसिटी के लिए याचिकाएं दायर न करें', किसानों के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट की अहम टिप्पणी

नई दिल्लीः

सुप्रीम कोर्ट ने किसानों की मांगों के मुद्दे पर दायर एक याचिका को वापस लेने की इजाजत दे दी है। साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने अहम टिप्पणी करते हुए कहा कि ऐसे जटिल मुद्दों पर वकील सिर्फ पब्लिसिटी के लिए अखबारों की रिपोर्ट के आधार पर याचिकाएं दायर न करें। याचिका में मांग की गई थी कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन करना किसानों का अधिकार है और उनके इस अधिकार का उल्लंघन नहीं होना चाहिए।

क्या थी याचिका में मांगः सुप्रीम कोर्ट में दाखिल याचिका में मांग की गई थी कि सरकार किसानों के साथ उचित व्यवहार करे। किसान दिल्ली जाकर प्रदर्शन करना चाहते हैं तो उन्हें रोका न जाए क्योंकि ये उनका अधिकार है।

याचिका में पुलिस प्रशासन द्वारा किसानों को रोकने के लिए बनाए गए अवरोधों को भी हटाने की मांग की गई थी। प्रदर्शनकारी किसानों पर पुलिस बल प्रयोग की जांच हो और पुलिस कार्रवाई में घायल हुए या मारे गए लोगों के परिजनों को उचित मुआवजा दिया जाए।

कोर्ट ने जताई नाराजगीः इस याचिका पर कोर्ट ने नाराजगी जाहिर की तो याचिकाकर्ता ने याचिका वापस लेने की गुहार लगाई। जिसकी कोर्ट ने इजाजत दे दी। कोर्ट ने कहा कि ये गंभीर मामला है और सिर्फ मीडिया रिपोर्ट्स के आधार पर याचिका दाखिल नहीं की जानी चाहिए। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस केवी विश्वनाथन की पीठ ने याचिकाकर्ता एगनोस्तोस थियोस के खेद जताने के बाद याचिका वापस लेने की मंजूरी दे दी। जस्टिस कांत ने याचिकाकर्ता के वकील से कहा कि 'ये बहुत गंभीर विषय है और सिर्फ अखबारों की रिपोर्ट्स के आधार पर प्रचार पाने के उद्देश्य से याचिकाएं दायर नहीं की जानी चाहिए। जो लोग इन मुद्दों को लेकर गंभीर हैं और इनके प्रति समर्पित हैं, उन्हें ही याचिकाएं दायर करनी चाहिए। अगर आपने अखबार की रिपोर्ट्स पढ़ी हैं तो आपको पता होना चाहिए कि हाईकोर्ट इस मामले पर सुनवाई कर रहा है और हाईकोर्ट ने इस मामले में कई निर्देश जारी किए हैं। अगली बार सावधान रहें और रिसर्च के बाद ही ऐसा करें।'

दुर्घटना क्षणिक परन्तु दर्द जीवन पर्यन्त : संजय कुदेशिया

अखंड भारत संदेश

इकाई प्रमुख ने दिलाई सुरक्षा विधियों को अपनाने की शपथ

फूलपुर। इफको की फूलपुर इकाई में सोमवार को अग्नि एवं सुरक्षा विभाग द्वारा 53 वां राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस मनाया गया। ईएसजी उत्कृष्टता के लिए सुरक्षा नेतृत्व है। वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक संजय कुदेशिया ने सुरक्षा ध्वजारोहण कर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सुरक्षा विधियों को अपनाने की शपथ दिलायी। उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सुरक्षा नेतृत्व का अर्थ है की साथ में काम करने वाले सभी वर्कर्स की सुरक्षा का ध्यान रखना। उन्होंने कहा कि कार्यस्थल पर कार्य करते हुए सुरक्षा उपकरणों का पहनना अति आवश्यक है क्योंकि दुर्घटना क्षणिक होती है लेकिन उसका कष्ट जीवन पर्यत होता है। महाप्रबंधक (उत्पादन) संजय भंडारी ने कहा कि एक सुरक्षित कार्यस्थल सुरक्षा की नींव है। उन्होंने कहा सुरक्षा एक टीम वर्क है तथा आपकी जिम्मेदारी स्वयं की सुरक्षा ही नहीं बल्कि आपके साथ अंतिम पायदान वाला व्यक्ति/श्रमिक सुरक्षित रहे यह महत्वपूर्ण है। प्रबंधक अग्नि एवं सुरक्षा विभाग अनिल कुमार यादव ने विभाग की वार्षिक रिपोर्ट पेश की तथा बताया की अग्नि एवं सुरक्षा विभाग को इस वर्ष उत्कृष्ट कार्य के लिए ग्रीन टेक सेफ्टी गोल्ड अवार्ड मिला है। कार्यक्रम का संचालन विकास कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन ए.के.निगम ने दिया। इस दौरान महाप्रबंधक संजय वैश्य व एम.डी.मिश्र, संयुक्त महाप्रबंधक क्रमशः ए.पी. राजेन्द्रन, पी.के.सिंह, पी.के.पटेल, रत्नेश कुमार, अरवेन्द्र कुमार एवं एस.के.सिंह,विभागाध्यक्ष मानव संसाधन शम्भू शेखर, इफको ऑफिसर्स एसोसिएशन के महामंत्री स्वयं प्रकाश, इफको इम्पलाइज यूनियन के अध्यक्ष पंकज पाण्डेय व महामंत्री विनय यादव, पवन कुमार वर्मा तथा सभी अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यक्रम में मौजूद रहे। कार्यक्रम उपरातं सुरक्षा एवं स्वच्छता का ध्यान रखने वाले विभाग एवं विभिन्न प्रतियोगिता में भाग लेने वाले कार्मचारियों को पुरस्कृत भी किया गया।

मऊआइमा के अनवारूल उलूम मदरसे का वार्षिक अधिवेशन संपन्न

मऊआइमा। मऊआइमा के मदरसा अनवारूल उलूम का एक दिवसीय वार्षिक अधिवेशन रविवार को आयोजित किया गया और रात को समापन हुआ। मदरसा अनवारूल उलूम में आयोजित जलसे में 23 हाफिज व 12कारियों की दस्तारबंदी कर उन्हें प्रमाण पत्र दिया गया।और चौदह लड़कियों को मौलवी का प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।इस अवसर पर मुफ्ती मोहम्मद अमीन पालनपुरी ने बच्चियों का खत्म बुखारी कराया।जलसे में पूर्व डायरेक्टर अल्पसंख्यक कल्याण लखनऊ फैजुर्रहमान कासमी ने बच्चों और बच्चियों की जिम्मेदारी पर प्रकाश डाले। मौलाना आदम मुस्तफा फिरोजाबाद ने रमजानुल मुबारक महिने के बरकत और पवित्र महीने का एहतराम करने पर जोर दिए।जलसा में मोहम्मद अमीन पालनपुरी,नायब शेखुल हदीस ने दुआ कराते हुए अमन शान्ति देशभक्ति, भाई चारा के लिए दुआ कराई।अन्त में मदरसे के संरक्षक मुफ्ती हबीबुर्रहमान साहब ने आए हुए आगंतुकों के प्रति आभार प्रकट किए।जलसा का कार्यक्रम दस बजे रात तक चला।

उत्तर प्रदेशीय शिक्षक संघ ने खंड शिक्षा धिकारी को सौंपा ज्ञापन

मेजा। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ मेजा ने खंड शिक्षा अधिकारी मेजा कैलाश सिंह को दो सूत्रीय ज्ञापन सौंपा। इस दौरान सैकड़ों की संख्या में उपस्थित शिक्षकों ने शिक्षक एकता जिंदाबाद हमारी मांगे पूरी करो के नारे लगाते रहे। इस अवसर पर शिक्षक संघ मेजा के अध्यक्ष मनीष तिवारी ने कहा कि शिक्षक का काम अपने स्कूल में छात्रों को अच्छी शिक्षा देना है । न की धरना प्रदर्शन करना सड़को पर नारा लगाना लेकिन आज कुछ वर्षो से शिक्षक जब धरना प्रदर्शन करने पर विवश हो जाताहै। धरना शिक्षको की मजबूरी बनती जा रही है क्योंकि शासन ने बीते 30 अक्टूबर और 9 नवंबर 2023 में वार्ता कर आश्वासन दिया था कि शिक्षको की वर्षो से लम्बित सभी मांगे पूरी करने के लिए कमेटी जल्द ही निर्णय लेगी लेकिन कोई मांगे तो आज तक पूरी हुई नहीं हुई बल्कि इसके उल्टा रोज एक न एक अव्यहारिक आदेश जरूर मनवाने पर बाध्य किया जा रहा है। श्री तिवारी ने कहा कि विभाग छात्रों की नियमित उपस्थिति व मध्यान भोजन की सूचना ऑनलाइन भेजने का दबाव शिक्षकों पर बना रही है और न भेजने पर शिक्षको से अमर्यादित व्यवहार करने और वेतन रोकने जैसी कार्यवाही कर रही है। उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा स्कूलों को 2 टैबलेट तो उपलब्ध कराया है लेकिन सिम नही दिया और शिक्षको से कहा हा रहा है कि अपने व्यक्तिगत आई डी से सिम खरीदकर ऑनलाइन सूचना भेजिए जो नियमा कूल नही है। इसी क्रम में शिक्षक संघ के मंत्री हसीब सिद्दीकी ने भी कहा कि शिक्षको को सरकार सिम खरीदकर दे और अन्य मांगे जिस पर सरकार और विभाग ने केवल आश्वासन ही अभी तक दिया उसमे 31 दिन का उपार्जित अवकाश, द्वितीय शनिवार अवकाश, अर्ध आकस्मिक अवकाश चिकित्सीय बीमा जैसे कई लंबित मांगों का शीघ्र निराकरण करे नही तो शिक्षक बड़े धरने पर जाने के लिए बाध्य होगा।

असवां में नंद घर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की

जंघई। असवां गांव में मुख्य यजमान गामा तिवारी के निवास पर आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में कथा वाचक आचार्य कुलगुरु पंडित शीतला प्रसाद मिश्र ने संगीतमय कथा को आगे बढ़ाते गजेंद्र मोक्ष, समुद्र मंथन, वामन अवतार, श्री राम अवतार व श्री कृष्ण जन्मोत्सव प्रसंग का सिलसिलेवार वर्णन कर श्रोताओं को भक्ति रस में सराबोर कर दिया। कथा प्रसंग में श्रीराम अवतार के साथ संक्षिप्त में राम कथा का वर्णन करते हुए महाराज ने कहा कि भगवान कभी जन्म नहीं लेते, अवतार धारण करते हैं, प्रकट होते हैं और प्रकट वहीं होते हैं जो पहले से विद्यमान हों भगवान तो कण कण में मौजूद रहते हैं। टोकरी में भगवान श्री कृष्ण की झांकी एवं जन्मोत्सव देखकर कथा स्थल नंद के घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की के जयकारों गूंजायमान हो गया इस अवसर पर कृष्ण बटुक तिवारी, जयमूर्ति तिवारी, सुरेश चंद तिवारी, गिरीश चंद तिवारी, सुनील कुमार तिवारी, दिलीप कुमार तिवारी, पवन कुमार तिवारी, अरुण कुमार तिवारी, आशीष कुमार तिवारी, अतुल कुमार तिवारी, अभिषेक कुमार तिवारी, विकास कुमार शुक्ला सहायक, आदर्श कुमार तिवारी, आयुष कुमार तिवारी, विष्णु तिवारी, शिवा तिवारी, गौरव तिवारी, शुभम तिवारी, दिव्यांश दुबे, महर्षि दुबे, अरविंद कुमार तिवारी नन्हे, चंद्रमणि तिवारी, भोलानाथ तिवारी कल्लू सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

कथा के पांचवें दिन राम केवट संवाद सुन भाव मंत्र मुग्ध हुए श्रोता

करछना के ताला हथसरा गांव में सोमवार को श्रीराम कथा के पांचवें दिन भगवान श्री राम और केवट का संवाद सुन श्रोता भाव मंत्र मुग्ध हो गए। कथावाचक विनोदानंद जी महाराज ने कहा कि श्री राम को वनवास के दौरान केवट ने गंगा पार कराया था। इस दौरान उनके साथ माता सीता और भाई लक्ष्मण भी थे। उतराई के बदले में अंगूठी भगवान राम ने केवट को दिया। भगवान ने मयार्दा पुरुषोत्तम होने का प्रमाण दिया। इस दुनिया के लोग उनसे सीखें। भगवान की कृपा से ही मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। कार्यक्रम के दौरान पूर्व मंत्री उज्जवल रमण सिंह ने आचार्य विनोदानंद जी महाराज का स्वागत किया। इस दौरान संदीप शर्मा और शिव प्रसाद शर्मा ने अतिथियों का आभार जताया। पूर्व मंत्री उज्जवल रमण सिंह ने कहा कि भगवान राम हम सभी के आदर्श हैं। उनकी पूजा से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। कार्यक्रम के दौरान संदीप शर्मा ने लोगों को प्रसाद बांटा। इस दौरान सागर श्रीवास्तव, अजितेश तिवारी, मुक्तेश्वर सिंह, आदि रहे।

भगवत कथा सुनकर भक्त श्रोता हुए भाव विभोर

सहसों। क्षेत्र के चनई का पूरा सिंगरामऊ निवासी इंजीनियर पंडित विक्रमादित्य द्विवेदी एवं किरण द्विवेदी के संयोजन में चल रही सप्त दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत महापुराण कथा ज्ञान यज्ञ के दूसरे दिन कथा व्यास कामदगिरि पीठ श्री चित्रकूट धाम से पधारे आचार्य स्वामी श्री शशि भूषण दास जी महाराज ने राजा परीक्षित संवाद, शुकदेव जन्म, नारद आख्यान सहित आदि प्रसंगों को अपने अमृतमई मुखारविंद से श्रवण कराते हुए भक्त श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। कथा व्यास ने शुकदेव जी एवं राजा परीक्षित मुक्ति कथा का सजीव वर्णन करते हुए बताया कि जिस तरह से वन में विचरण कर रहे परीक्षित द्वारा समाधिष्ठ ऋषि समीक के पानी मांगने पर कोई प्रक्रिया सामने नहीं आई, राजा परीक्षित ने अपना अपमान समझते हुए क्रोध में आकर मरा हुआ सांप ऋषि के गले में डाल दिया। ऋषि समीक के पुत्रों द्वारा राजा को सातवें दिन तक्षक नाग द्वारा डसने पर मौत का श्राप दे दिया गया। उन्होंने कहा मनुष्य को क्रोध एवं अहंकार को त्यागते हुए प्रभु के चरणों में तन मन से लगन लगाना चाहिए जिससे जीवन को धन्य करते हुए सदा के लिए मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सके। मुख्य यजमान इंजीनियर विक्रमादित्य द्विवेदी एवं किरण द्विवेदी सहित भक्त श्रोताओं द्वारा भागवत भगवान व्यास पीठ एवं आवाहित देवी देवताओं की आरती उतारी गई। तत्पश्चात भक्तों में प्रसाद का वितरण हुआ। इस अवसर पर पंडित जालपा प्रसाद द्विवेदी, जगदंबा प्रसाद द्विवेदी, लालजी द्विवेदी, घनश्याम मिश्रा एवं प्रभाकर पांडे सहित आदि भक्त श्रोता नर-नारियों ने उपस्थित होकर कथा का रसपान किया।

अवन्तिका विकास समिति के प्रबंधकारिणी समिति का हुआ गठन

विनोद शंकर अध्यक्ष व सुनील श्रीवास्तव बने महामंत्री

नैनी। नैनी अवन्तिका विकास समिति के कार्यसमिति की बैठक समिति कार्यालय में संपन्न हुई, जिसमे प्रबन्धकारिणी एवं कार्यकारिणी समिति का गठन सम्पन्न हुआ। बैठक की अध्यक्षता समिति के संयोजक गजेंद्र प्रताप सिंह एवं संचालन सह संयोजक बद्री प्रसाद मिश्र ने किया। चयनित पदाधिकारियों में विनोद शंकर तिवारी अध्यक्ष, डी के सिंह व जगदम्बा प्रसाद शुक्ल उपाध्यक्ष, सुनील श्रीवास्तव महामंत्री, सुनील साहनी मंत्री, अशोक जायसवाल संयुक्त मंत्री, अनिल द्विवेदी कोषाध्यक्ष, आशुतोष मिश्र मीडिया प्रभारी चुने गये। साथ ही कार्यकारिणी सदस्य के रूप में महिला प्रकोष्ठ की मीना जायसवाल, अन्जुम नाज, बिन्दू राठौड़ तथा ए1 ब्लांक से ब्रिजेन्द्र पाठक, ए ब्लॉक से गंगा प्रसाद ठाकुर, बी से अनिल मिश्र, सी से एन पी मिश्र, डी से केएल जायसवाल, विश्व बैंक से दीपक पटेल, ईई से सुभाष चन्द्र, ईएल से एम आर कुशवाहा, आदि का चयन सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

आन लाइन उपस्थिति के विरोध में शिक्षकों ने दिया ज्ञापन

उतरांव। ब्लॉक सैदाबाद के ब्लॉक संसाधन केंद्र सैदाबाद में परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा सोमवार को टेबलेट के माध्यम से विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की उपस्थिति तथा मध्याह्न भोजन की सूचना आन लाइन भेजने का दबाव विभागीय अधिकारियों द्वारा बनाने के विरोध मे प्राथमिक शिक्षक संघ सैदाबाद के ब्लॉक अध्यक्ष राकेश मिश्रा की अध्यक्षता में महानिदेशक को सम्बोधित ज्ञापन खंड शिक्षा अधिकारी सैदाबाद अखिलेश यादव को सौपा गया। इस अवसर पर उपस्थित शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए संघ के ब्लॉक अध्यक्ष ने कहा कि विभाग द्वारा केवल टैबलेट उपलब्ध कराया गया है परन्तु टैबलेट को सक्रिय करने हेतु सरकारी सिम कार्ड नही उपलब्ध कराया गया है। अधिकारियों द्वारा शिक्षकों को अपने व्यक्तिगत आई डी के माध्यम से सिमकार्ड खरीदने के लिए दबाव बनाया जा रहा है। जो कि नियमानुकूल नहीं है। सिर्फ शिक्षकों का शोषण किया जा रहा है। इस दौरान मौके पर मौजूद विभिन्न शिक्षकों ने एक स्वर में कहा, कि यदि इस, पर शासन ने विचार नही किया तो भविष्य में जिले व लखनऊ में धरना प्रदर्शन का आयोजन किया जाएगा।इस अवसर पर सैदाबाद ब्लॉक के कोषाध्यक्ष अनन्त बहादुर सिंह, एवं ब्लॉक कार्यकारिणी के पदाधिकारी टी एन पांडेय, प्रदीप पांडेय, पवन बाजपेयी, राजेश सिंह, सलीमुद्दीन, सुरेश तिवारी,दया शंकर गुप्ता, सिद्धार्थ द्विवेदी, रंजना राय, दीपा शर्मा, इन्द्र जीत गुप्त, कमल पांडेय शैलजा झा, सोनिका यादव अंजू देवी आदि शिक्षक शिक्षिकाये मौजूद रहे।

परोपकार से बढ़कर दुनियां में कोई धर्म नहीं : एसके तिवारी

कोरांव के सुहास गांव में स्थित महुंआंव शिवमन्दिर पर आयोजित हुआ सतचंडी महायज्ञ एवं भागवत कथा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। डॉ संगम मिश्र वरिष्ठ भाजपा के वरिष्ठ नेता डा संगम मिश्र की टीम सेंट्रल एके-डमी के डायरेक्टर एस.के.तिवारी के नेतृत्व में सुहास गांव में स्थित भोलेनाथ मंदिर पर आयोजित सत चंडी महायज्ञ एवं श्रीमद् भागवत कथा में पहुंचकर ब्यास पीठ का आशीर्वाद प्राप्त किया। भागवत कथा के दौरान प्रान्त संस्कृत प्रमुख विश्व हिंदू परिषद काशी प्रान्त शंकर देव त्रिपाठी ने सत्संग की महिमा का विस्तार से वर्णन करते हुए कहा कि सत्संगति दुर्लभ संसारा। निमिष दंड भरि एकउ बारा। उन्होंने ब्यास पीठ के आग्रह से रामचरित मानस के कई प्रसंगों पर विस्तार से प्रकाश डाला। टीम के नेतृत्व कर्ता डायरेक्टर एस.के.तिवारी ने अपने उद्बोधन में भागवत कथा के महत्व को बताते हुए कहा कि इसलोक और परलोक के सुख के लिए जो भी यजमान भागवत कथा का आयोजन करते हैं वह ईश्वर की कृपा से ही संभव हो पाता है। उन्होंने कहा कि चाहते हुए भी बहुत से लोग जीवन में भागवत कथा का श्रवण नहीं कर पाते हैं।भागवत कथा हमें किसी भी शुभ अथवा अशुभ कर्म का बोध कराती है जो हमें अपने जीवन में अवश्य भोगना पड़ता है। श्री तिवारी ने बताया कि अठारहों पुराणों का निचोड़ भागवत पुराण के रचइता महर्षि वेदव्यास ने अपने शिष्यों को यह कथा सुनाई थी। उन्होंने कहा कि परोपकार से बड़ा दुनिया में कोई धर्म नहीं होता है।पर पीड़ा से बड़ा संसार में कोई अधर्म नहीं है। शास्त्रों का उदाहरण देते हुए कई महत्वपूर्ण प्रसंग पर विस्तार से प्रकाश डाला। इसी क्रम में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता दिलीप शुक्ला ने शास्त्रोक्त उदाहरण देते हुए भागवत कथा की महिमा का ब्याख्यन किया। उन्होंने कहा महूआव के भोलेनाथ महादेव पर विशाल मेला हर साल लगा करता है।पूरे क्षेत्र के लोगों का यहां पूजा पाठ एवं मन्नत के लिए साल भर तांता लगा रहता है। इस मौके पर राजा पांडेय,मुन्ना मिश्रा, जगदीप लाल पांडेय, गेंदालाल पांडेय,बैज लाल,जितेंद्र,राम बहादुर पांडेय , अमरेश मिश्र, विजय कुमार, हरिश्चंद्र पांडेय, रमाशंकर पांडेय, हनुमंत दुबे तथा ओमप्रकाश शुक्लआदि के अलावा बहुत बड़ी संख्या में श्रद्धालु भक्तगण उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

कमाण्डेन्ट ने किया वित्तीय साक्षरता सप्ताह का आयोजन

फाफामऊ। सोमवार को 101 आर.ए.एफ. के तत्वावधान में मनोज कुमार गौतम, कमाण्डेन्ट-101 आर.ए.एफ. के दिशा-निर्देशन में वित्तीय साक्षरता सप्ताह का आयोजन किया गया।गौरतलब है कि भारतीय रिर्जव बैंक के द्वारा दिनांक 26/02/2024 से 01/03/2024 तक करो सही शुरूआत बनो फाइनेंशियली स्मार्ट" विषय पर वित्तीय साक्षरता सप्ताह चलाया जा रहा है। इसी कम में 101 आर.ए.एफ. के प्रांगण में भारतीय स्टेट बैंक शाखा-फाफामउ प्रयागराज के शाखा प्रबंधक विकास निर्वाल एवं उनकी टीम द्वारा CAPSP (Central Armed Police Salary Package) के विषय में जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसके तहत 101 आर.ए.एफ. के कार्मिको को CAPSP के विभिन्न फायदों तथा साइबर अपराध और वित्तीय लेन-देन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। उक्त अवसर पर बृजेश कुमार दुबे (उप०कमा०). यज्ञ कुमार सिंह (उप०कमा०), अरूण मिश्रा (उप०कमा०), नीरज कुमार (उप०कमा०), अन्य अधिकारीगण, अधीनस्थ अधिकारी गण व जवान उपस्थित रहे।

पिछड़ों का भला भाजपा सरकार में ही संभव

फाफामऊ। मलाक हरहर में सोमवार को मंडल पांडेश्वर नाथ धाम में ओबीसी मोर्चा के मंडल अध्यक्ष रामेंद्र पटेल के नेतृत्व में पिछड़ा मोर्चा सामाजिक बैठक आयोजित की गई जिसमें मुख्य अतिथि काशी क्षेत्र के अध्यक्ष ओबीसी मोर्चा अश्वनी पटेल रहे। उन्होंने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि पिछड़ों का सम्मान और भला सिर्फ भाजपा सरकार में ही संभव है। साकार पिछड़ों के हित में लगातार कार्य कर रही है। बैठक में गंगापार के जिला अध्यक्ष कविता पटेल, ओबीसी मोर्चा जिला अध्यक्ष विजय पटेल ने भी संबोधित किया। बैठक में अभियान चलाकर अधिक से अधिक ओबीसी को पार्टी से जोड़ने का तथा तीसरी बार लगातार नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए पिछड़े वर्ग के लोगों से अपील किया। बैठक में मंडल अध्यक्ष सुशील महाराज, विधानसभा ओबीसी मोर्चा संयोजक जितेंद्र कुशवाहा, शोध प्रमुख काशी क्षेत्र ओबीसी मोर्चा देवेंद्र गिरी, महिला मोर्चा के जिला संयोजक रूपम त्रिपाठी, शिक्षक प्रकोष्ठ के संयोजक विनोद द्विवेदी, नीरज त्रिपाठी, धीरेंद्र पटेल, सुशील पटेल, रोशन पटेल तथा ओबीसी समाज के भारी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

फाफामऊ पुलिस ने 24 घंटे के अंदर मोटर साइकिल चोरी का किया खुलासा

फाफामऊ। थाना फाफामऊ पुलिस द्वारा 48 घंटे के अंदर बाइक चोरी की घटना का सफल अनावरण करते हुए दो लोगों को गिरफ्तार कर उनके पास से चोरी की एक मोटर साइकिल बरामद कर सोमवार को लिखा पढ़ी के बाद जेल भेज दिया। दो मार्च को थाना फाफामऊ में मोटर साइकिल चोरी के दर्ज मुकदमे में फाफामऊ पुलिस तत्परता दिखाते हुए थाना प्रभारी शांतनु चतुर्वेदी के निर्देशन में एसआई विनय यादव ने अपराध में शामिल दोनों अभियुक्तों को गोहरी रेलवे फाटक के पास से चोरी हुई मोटर साइकिल के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। गिरफ्तारी टीम में वंश नारायण यादव, विक्रम सिंह आदि रहे। पुलिस द्वारा जेल भेजे गए अभियुक्त नवाबगंज थाना क्षेत्र के कौड़िहार का अशीष कुमार पुष्पाकार पुत्र राकेश पुष्पाकर और थरवई थाना क्षेत्र के बहमल पुर चकिया का बदल यादव पुत्र बलवंत यादव है।

त्योहार और चुनाव के मद्देनजर पीस कमेटी की हुई बैठक

मऊआइमा। मऊआइमा थाना परिसर में एससीपी फूलपुर उदय प्रताप सिंह और इंस्पेक्टर मऊआइमा राघवेन्द्र सिंह के नेतृत्व में पीस कमेटी की बैठक सोमवार को हुई।जिसमें सभी को भाई चारा और सौहार्द के साथ पर्वों को मनाने की बात कही गई।तथा चुनाव को भी शांतिपूर्वक सम्पन्न कराने में सहयोग की अपील की गयी।पीस कमेटी की बैठक में दो दिनों तक जो लोग रंग नहीं खेलते वह दो दिनों तक कहीं आने पर परहेज करें।तथा कोई बात होने पर कानून को अपने हाथों में न लेकर पुलिस को सूचना दें। पवित्र महीने रमजानुल मुबारक का ख्याल करें। चुनावों में प्रशासन का सहयोग करें।इस अवसर पर नगर पंचायत अध्यक्ष शोएब अंसारी, मौलाना मुफ्ती हबीबुर्रहमान इमामे ईदगाह मऊआइमा, राम सजीवन पटेल, मुदित खत्री, ग्राम प्रधान रिजवानुल हक, वारिस अली, अमजद हुसैन, प्रदीप कुमार केसरवानी, संतोष कुमार,अजय कुमार,राज कपूर आदि ग्राम प्रधानों के अलावा क्षेत्र के गणमान्य लोग मौजूद थे।

गरीबों को आवास शौचालय व बेटियों के विवाह की सरकार ने ली जिम्मेदारी : राजमणि कोल

मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह कार्यक्रम में 89 जोड़ों ने एक दूजे का थाम हाथ, विधायक, ब्लॉक प्रमुख, एसडीएम, बीडीओ व अन्य जनप्रतिनिधियों ने दिया आशीर्वाद

कोरांव। प्रयागराज ।गरीबों को आवास शौचालय व अन्य सरकारी योजनाओं के साथ-साथ गरीब बेटियों के शादी का जिम्मा सरकार ने लिया है। जिस तरह से हमारी सरकार गरीबों को पक्की छत व खुले में शौच से मुक्ति के लिए शौचालय देने का काम कर रही है। उसी तरह गरीब बेटियों के हाथ पीले करने की भी जिम्मेदारी हमारी सरकार ने लिया है।

यह बातें कोरांव विधायक राजमणि कोल ने कोरांव बाजार के इंद्रप्रस्थ गेस्ट हाउस में आयोजित मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह समारोह में एक साथ एक दूजे के हुए 89 जोड़ों के वर बधुओं को आशीर्वाद देने के दौरान बतौर मुख्य अतिथि कही। विधायक राजमणि कोल ने कहा कि हिंदुस्तान में जिन बेटियों की शादी करने के लिए गरीब पिता कर्ज लेता था। जिसका जीवन कर्ज चुकाने में ही बीत जाता था। आज हिंदुस्तान के आम नागरिकों के द्वारा चुनी गई सरकार ने खुद गरीब बेटियों के शादी का जिम्मा ले लिया है। विधायक ने नव दांपत्य के परिणय सूत्र में बंधे जोड़ों को आशीर्वचन देते हुए कहा कि अब एक बार फिर से देश की सरकार चुनने का समय आ गया है। जिस दिन आप वोट डालने जाएं कमल के निशान पर वोट देते हुए तीसरी बार यशस्वी नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने का काम करें। प्रमुख मुकेश कोल ने मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना की सराहना करते हुए कहा कि प्रयागराज में यमुनापार के सभी विकास खंडों से कोरांव में सर्वाधिक जोड़ों की शादी होना विधायक राजमणि कोल व खंड विकास अधिकारी धीरेंद्र यादव समेत अन्य अधिकारियों की मेहनत का प्रतिफल है। उन्होंने कहा इतनी तादात में सामूहिक विवाह में इतनी बड़ी संख्या में एक मंडप के नीचे सात फेरे लेना विकसित भारत संकल्प यात्रा के उद्देश्य को सार्थक करता दिख रहा है। बीडीओ धीरेंद्र यादव ने बताया कि 85 जोड़े ब्लॉक के विभिन्न गांवों से जिसमें एक जोड़े का निकाह कराया गया। चार जोड़े नगर पंचायत कोरांव के शामिल रहे। उन्होंने बताया कि 35000 रुपए सीधे कन्या के खाते में 10000 रुपए के समान व 6000 रुपए प्रति जोड़े आयोजन पर खर्च किया जाता है। कार्यक्रम को नगर पंचायत अध्यक्ष ओमप्रकाश केसरी ने संबोधित कर वर बधुओं को आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम को युवा भाजपा नेता बबुआन द्विवेदी, महिला मोर्चे की जिला मीडिया प्रभारी संतरा देवी बिंद, एसडीएम अविनाश यादव, सहायक विकास अधिकारी पंचायत विवेक मिश्र, सहायक विकास अधिकारी सांख्यिकी रामेश्वर सिंह,एडीओ समाज कल्याण मोहम्मद आरिफ आदि ने संबोधित किया। सामूहिक विवाह कार्यक्रम का संचालन बबलू सिंह बिहारी ने किया कार्यक्रम में विकासखंड के भारी संख्या में ग्राम प्रधान क्षेत्र पंचायत सदस्य व वर वधुओं के परिजन मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अन्तर्गत नगर निगम के द्वारा 157 व्यस्क जोड़ों का सामूहिक विवाह कार्यक्रम सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

महापौर जी ने नव विवाहित दम्पतियों को विवाह प्रमाणपत्र के साथ आवश्यक सामाग्री व नए जीवन में प्रवेश की शुभकामनाएं दी

प्रयागराज। समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अन्तर्गत नगर निगम प्रयागराज द्वारा सोमवार को नार्दन रीजनल इंस्टीट्यूट आफ प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी परिसर, तेलियरगंज में 157 व्यस्क जोड़ों का सामूहिक विवाह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। महापौर उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी, विधान परिषद सदस्य सुरेन्द्र चौधरी, नगर आयुक्त चन्द्रमोहन गर्ग, अपर नगर आयुक्त अम्बरीश कुमार बिंद, नगर मजिस्टेट विनोद कुमार सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी डॉ0 प्रज्ञा पाण्डेय ने अन्य जनप्रतिनिधियों व अधिकारीगणों के साथ सभी वर-वधू को अपना आशीर्वाद प्रदान किया तथा उनको नए जीवन में प्रवेश की शुभकामना दी। महापौर जी ने नवविवाहित जोड़ों को अपने कर-कमलों से विवाह प्रमाणपत्र के साथ आवश्यक सामाग्री प्रदान किया। इसके पूर्व महापौर जी ने दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।इस अवसर पर कार्यक्रम में उपस्थित लोगो को सम्बोधित करते हुए महापौर उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी जी ने विवाह समारोह को नवदम्पत्तियों के लिए हर्ष व अपने लिए गौरव का क्षण बताते हुए कहा कि मैं आज यहां पर सभी नवदम्पत्तियों को जो अपने नए जीवन की शुरूआत कर रहे है, उनको बधाई व शुभकामनाएं देता हूं। महापौर जी ने कहा कि प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन व प्रेरणा से तथा मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में आज सरकार हमारे प्रदेश की जिन गरीब बेटियों की शादी धनाभाव व दहेज के कारण नहीं हो पा रही थी, उनकी शादी सामूहिक विवाह योजना के अन्तर्गत आयोजित इस पवित्र विवाह समारोह में धूमधाम से हो रही है। प्रधानमंत्री जी ने अपने कुशल नेतृत्व, व्यक्तित्व, आचरण व व्यवहार से लोगो के जीवन में गुणात्मक परिवर्तन करने के साथ अनेक सामाजिक बुराईयों को दूर करने का प्रयास कर रहे है। दहेज जैसी सामाजिक बुराई जिसके कारण लोग बेटियों को गर्भ में ही समाप्त कर देते थे, इस सामाजिक बुराई को खत्म करने व बेटियों के संरक्षण के लिए बेटियों के लिए जन्म से ही अनेक योजनाएं चलायी जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी व मुख्यमंत्री जी की सोच का परिणाम है कि आज हमारी गरीब बेटियों का विवाह हो रहा है। बेटियों को आर्थिक सहायता के साथ ही उपहार भी भेंट किया जा रहा है। इस अवसर पर विधान परिषद सदस्य सुरेन्द्र चौधरी जी ने सामूहिक विवाह समारोह को सम्बोधित किया व नव वर-वधूओं को जीवन की नई शुरूआत पर बधाई व वैवाहिक जीवन सफल होने की शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में नगर आयुक्त ने सभी अतिथियों एवं कार्यक्रम में आये हुए लोगो का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर कार्यक्रम स्थल पर नव विवाहित जोड़ो के साथ उनके परिजन व बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण के अन्तर्गत गठित वीडियो निगरानी टीम को दिया गया प्रथम प्रशिक्षण

प्रयागराज। लोक सभा सामान्य निर्वाचन-2024 के सम्पन्न कराये जाने हेतु भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश के क्रम में निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण के अन्तर्गत गठित वीडियो निगरानी टीम को कोषागार कार्यालय में प्रत्यूष कुमार, नोडल अधिकारी व्यय अनुवीक्षण तंत्र/मुख्य कोषाधिकारी, प्रयागराज एवं श्रीमती मधूलिका सिंह, सहायक नोडल अधिकारी, प्रयागराज द्वारा प्रथम प्रशिक्षण दिया गया। प्रथमतः नोडल अधिकारी व्यय अनुवीक्षण तंत्र/मुख्य कोषाधिकारी द्वारा निर्वाचन आयोग द्वारा राजनैतिक दल/निर्दलीय प्रत्याशियों के निर्वाचन रैलियों से सम्बन्धित सभी वीडियों की रिकार्डिंग सही से लेने के साथ-साथ सम्बन्धित नियमों/आदेशों तथा निर्धारित प्रारूपों में भरे जाने वाले अभिलेखों के रख-रखाव के संबंध में सविस्तार प्रशिक्षित किया गया। उपरोक्त वीडियो निगरानी टीम को निर्वाचन आयोग द्वारा उपलब्ध अनुदेशों के सार-संग्रह की प्रतियां उपलब्ध कराते हुए निर्वाचन आयोग के निदेर्शानुसार दायित्वों के निर्वहन हेतु निर्देशित किया गया।

श्रीरामोत्सव में महापौर और पूर्व आईजी का हुवा स्वागत

झूंसी। मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान राम के 500 वर्षों के पश्चात अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा किए जाने के बाद समूचे देश में हर्ष का माहौल व्याप्त है। उसी के उपलक्ष्य में झूंसी स्थित आरएसएस कार्यालय के प्रांगण में सोमवार की शाम श्री रामोत्सव का कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के अध्यक्षता करते हुए स्वामी हरी चैतन्य ब्रह्मचारी महाराज ने श्री राम के आदर्श जीवन के अविस्मरणीय कार्यों से अवगत कराया। पूर्व आईजी एवं विश्व हिंदू परिषद में काशी प्रांत के अध्यक्ष केपी सिंह ने बतौर मुख्य वक्ता रूप में श्री राम के आदर्शों के विषय में अपना विचार रखा। मुख्य अथिति के रूप में उपस्थित प्रांत प्रचारक रमेश ,राज बिहारी लाल श्रीवास्तव ,महापौर उमेश गणेश चंद्र केसरवानी ,डा. कृष्ण पाल सिंह , शुशील दास महाराज ,आदित्य ,अमिताभ उपाध्याय, परशुराम त्रिपाठी ने भी अपना विचार व्यक्त किया। पार्षद कोहना अनिल यादव उर्फ धुन्नू ने महापौर को अंग वस्त्र भेट कर उनका स्वागत किया। स्वामी आत्मानन्द,अनिल कुमार पाण्डेय, पवन द्विवेदी, डॉ. सुनील विश्वकर्मा,संजीव कुमार पाण्डेय, जीतेन्द्र नारायण गौड़,शिव शंकर दीक्षित, शत्रुघ्न पाठक, मानिक चन्द्र निषाद, सुरेश कुमार निषाद, रवि निषाद, लवकुश पंडित, दिलीप निषाद,राम जी निषाद, ध्रुव निषाद, संजय निषाद, संदीप निषाद, पवन पांडेय आदि मौजूद रहे।

नैनी मंडल में ग्राम परिक्रमा अभियान के अन्तर्गत लोगों को जागरूक किया गया

नैनी। नैनी क्षेत्र के चक भटाई के पार्षद मयंक यादव के मार्गदर्शन में संजय श्रीवास्तव जिला उपाध्यक्ष भाजपा किसान मोर्चा प्रयागराज के नेतृत्व में जनसंपर्क किया गया। इस अवसर पर पार्षद मयंक यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों को विस्तार से बताया और लोगों से एक बार पुनः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विकासोन्मुखी सरकार बनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर संजय श्रीवास्तव ने कहा की मोदी के नेतृत्व में देश का किसान सुखी हो रहा है किसानों की आय बढ़ी है जिसके कारण किसान का बेटा भी पढ़ कर देश का नाम रोशन कर रहा है। इस अवसर पर पंकज तिवारी, अफरोज, प्रदीप कुमार तिवारी, शिवदानी सिंह नीरज शर्मा मंडल अध्यक्ष नैनी, सुनील विश्वकर्मा , उमेश सेन, सुनील कुशवाहा, मोहित अग्रहरि, आदि लोग उपस्थित रहे।

भाजपा मिलन कार्यक्रम आयोजित, कई मुस्लिम भाइयों ने थामा भाजपा का दामन

प्रयागराज। सोमवार को बमरौली तिवारी तालाब पर अल्पसंख्यक मोर्चा महानगर प्रयागराज के तत्वाधान में भाजपा मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा महानगर अध्यक्ष राजेंद्र मिश्रा ने मुस्लिम समाज के लोगों को भाजपा में शामिल किया और कहा कि मोदी और योगी सरकार में बिना किसी भेद भाव के अल्पसंख्यक समाज के लोगों को सर्वाधिक लाभ दिया गया है इसलिए आज अल्पसंख्यक समाज के लोग मोदी सरकार पर विश्वास जता रहे हैं और आने वाले लोकसभा के चुनाव में तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों के ऊपर मुंह पर तमाचा मार कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का संकल्प ले लिया है । मीडिया प्रभारी राजेश केसरवानी ने बताया कि मुस्लिम समाज के 125 लोगों ने भाजपा की सपथ ली जिसमें 45 मुस्लिम महिलाए शामिल रही । कार्यक्रम के संयोजक अल्पसंख्यक मोर्चा महानगर संयोजक नवाब खान रहे। इस अवसर पर राजेश केसरवानी ,नटवरलाल भारती, सैयद उस्मान, रॉबिन साहू, बिलाल अहमद ,एक लक अहमद इम्तियाज ,गुड्डू शरीफ, अनीश, राकेश भारतीय ,मनोज शुक्ला, नीलू ,राजेश गोंड इत्यादि लोग मौजूद रहे।

रात को फसल रखवाली करने गये किसान की ठंड से मौत

प्रयागराज। गंगापार सदरेपुर हनुमानगंज स्त्रायनायत फूलपुर प्रयागराज के निवासी किसान हंसराज सिंह उम्र 55 वर्ष का ठंड लगने से हुई मौत। मिली जानकारी के अनुसार परियोजनो का कहना है कि खेत की रखवाली करते समय सर्दी के चपेट में आने से हालत बिगड़ गयी और सीने में दर्द होने लगा तो मृतक हंसराज ने आग का सहारा लिया लेकिन आग ताप रहा किसान की हालत ठीक नही हुई और किसान हंसराज की हालत और गंभीर हो गया और संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गयी। नजदीक के एक निजी हॉस्पिटल में दिखाया गया जहा डाक्टर उन्हें मृत घोषित कर दिए।इस घटना बच्चे, महिला, और परिवार वालो का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। किसान हंसराज के मृत होने से उनका परिवार अनाथ हो गया हैं। मृतक अपने पीछे बहुत बड़ी जिम्मेदारी छोड़ कर गया हैं। मृतक के ही ऊपर परिवार की सारी जिम्मेदारी रहता था। इस घटना से परिवार व गांवो में मातम छाया हुआ है।

युवती को पीट कर किया घायल

झूंसी। स्थानी थाना क्षेत्र में शौच के लिए गई एक युवती पर उसके पड़ोसी ने धारदार हथियार से वार कर दिया। जिसमे उसके सर व हाथ मे गंभीर चोट आई। परिजनों ने दुराचार के प्रयास का भी आरोप लगाया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पीड़िता की माने तो सोमवार की सुबह वह शौच के लिए गई थी लौटते वक्त पड़ोस का ही युवक उसका पीछा करने लगा भागने पर आरोपी ने हसिया से युवती के सर, गले, हाथ पर कई वार किया। जिससे वह वहीं पर गिरकर बेहोश हो गई परिजनों ने बताया कि आरोपी ने युवती के साथ दुराचार की कोशिश कर रहा था तभी गांव के और लोग आ गए उनको आता देख आरोपी मौके से फरार हो गया। बेहोशी अवस्था में युवती को इलाज के लिए ले जाया गया। थाना प्रभारी उपेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि मामला मारपीट का है। आरोपी की मानसिक हालात ठीक नही है।

थूक चटवाने से आहत युवक ने खाया विषाक्त पदार्थ, मौत

प्रयागराज। घूरपुर थानाक्षेत्र के अंतर्गत एक वीडियो प्रसारित हो रहा है। इरादतगंज गांव के निवासी युवक श्याम यादव ने आरोप लगाया है कि उसके चचेरे भाई विद्याकांत यादव ने व्यापार के लिए शनि जायसवाल व किशन पांडेय से तीन लाख रुपये उधार लिया था। उसी पैसे से चाय-नाश्ता की दुकान खोल लिया। कुछ समय बाद शनि व किशन उसके ऊपर लगातार पैसा देने का दबाव बनाने लगे। दुकान में घाटा होने के कारण विद्याकांत पैसा नहीं दे पाया। आरोप है कि रविवार की दोपहर शनि तीन बजे घूरपुर थाना पर पैसा देने के लिए युवक को बुलाया गया था। जहां उसके साथ गाली-गलौज करने के साथ धमकी दी गई। वहीं, चप्पल पर थूक लगाकर चटवाया गया। इससे आहत होकर विद्याकांत ने घर आकर शाम को विषाक्त पदार्थ खा लिया। जानकारी होने पर स्वजन उसे स्वरूपरानी अस्पताल ले गए, जहां रात में उसकी मौत हो गई। वहीं, घूरपुर थाना के एसओ केशव वर्मा का कहना है कि उनके पास उक्त मामले में पहले कोई शिकायत नहीं आयी। यह व्यक्तिगत लेनदेन का मामला है। अब परिजन थूक चटवाकर प्रताड़ित करने का आरोप लगा रहे हैं। पुलिस उसकी जांच कर रही है। दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

नारी शक्ति वंदन मैराथन" मैं खूब दौड़ी महिलाएं

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। सोमवार को भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा द्वारा नारी शक्ति दौड़ का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम मे प्रयागराज महानगर, क्षेत्र, प्रदेश महिला मोर्चा के जिला पदाधिकारी, पार्षद, मण्डल पदाधिकारी, महिला अधिवक्ता, स्वयं सेवी संस्था, प्रबुद्ध गण, एनजीओ के सामाजिक क्षेत्र मे कार्य कर रहीं सभी बहनों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। महिला मोर्चा नेतृत्व द्वारा नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। जिसमें भाजपा सरकार की नारी सशक्तिकरण की दिशा में किए जा रहे पहलुओं को केंद्र में रखा जाएगा। इसी क्रम में प्रयागराज सहित उत्तर प्रदेश के सभी 75 जिलों में उक्त कार्यक्रम प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती गीता शाक्य के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में संपन्न हो रहा है। इसी क्रम में सोमवार को प्रधानमंत्री मोदी के समर्थन एवं नारी सशक्तिकरण के लिए किए गए उनके प्रयासों के पहलुओं को केंद्र में रखते हुए शक्ति वंदन दौड़ का आयोजन किया गया। भाजपा महिला मोर्चा की बहनों सहित इस दौड़ में समाज के विभिन्न महिलाएं, विभिन्न पदों पर रहने वाली महिलाओं, वकीलों, खेलकूद में प्रतिभाग लेने वाले बच्चों और मुस्लिम महिलाओं व? ई-रिक्शा चलाने वाली महिलाओं ने भी भाग लिया। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी जी के प्रति धन्यवाद ज्ञाप किया और कहा कि मोदी जी ने नारी सशक्तिकरण के लिए बहुत कार्य किया है, हम महिलाएं हैं जो आगे बढ़कर के इस बार प्रण लेते हैं कि हम महिलाएं आगे बढ़कर के मोदी जी को पुरुषों से ज्यादा वोट देंगी और उनका 2024 में रिकार्ड मतों से सदन में पहुंचाएंगे। जिससे कि आगे 2024 में जब वह प्रधानमंत्री बने तब उसके बाद वह हम महिलाओं के लिए और अच्छे कार्य कर सकें, जिससे कि हम सब अपने घर के साथ-साथ अपना जीवन यापन भी कर सके और देश को भी मजबूत करने में अपना योगदान दे सकें। सभी ने दौड़ का प्रारंभ सिविल लाइंस स्थित गिरजाघर से सुभाष चौराहा तक ₹एक दौड़ राष्ट्र के नाम और एक दौड़ मोदी के नाम₹ का नारा लगाते हुए दौड़ लगाई। इस दौड़ में भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश महामंत्री व संयोजक डॉक्टर कीर्तिका अग्रवाल, प्रदेश मंत्री कविता यादव त्रिपाठी, महानगर अध्यक्ष राजेंद्र मिश्रा, पूर्व महापौर अभिलाषा गुप्ता नंदी व? जिला अध्यक्ष शिखा रस्तोगी भी इस दौड़ में शामिल रहे। दौड़ में शामिल होने वालों में प्रमुख रूप से माया द्विवेदी, वंदना सिंह, मीडिया प्रभारी चंद्रा अहलूवालिया, रीता सिंह, दुर्गेश नंदिनी, आभा सिंह, स्मृति श्रीवास्तव, गीता विश्वकर्मा, अर्चना शुक्ला?, शिखा खन्ना, रिचा यादव, वंदना शर्मा सहित जिले के पंद्रह मंडलों के पदाधिकारी व सदस्यों ने दौड़ में प्रतिभाग किया।

शांति भंग करने वालों की खैर नहीं सहायक पुलिस आयुक्त सोरांव

सोरांव। सोमवार को आगामी त्योहारों को लेकर सोरांव थाना परिसर में पीस कमेटी की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता सहायक पुलिस आयुक्त सोरांव जंग बहादुर यादव ने किया। बैठक में क्षेत्र के ग्राम प्रधान संग संभ्रांत लोग मौजूद रहे। बैठक में सभी लोगों को आगामी होने वाले महाशिवरात्रि, होली आदि पर्वों पर शांति व्यवस्था तथा भाई चारा से त्योहार मनाने की विषय पर चर्चा हुई। इतना ही नहीं अध्यक्षता कर रहे एसीपी ने कहा कि अब पुलिस विभाग में कमिश्नरेट प्रणाली लागू हो गई है। सभी सम्मानित और संभ्रांत व्यक्ति जिसके गांव में त्योहारों या फिर किसी भी पर्व पर शांति भंग करने वालों की शंका ही ऐसे लोगों की एक सूची तैयार कर लें तथा हल्का पुलिस को अवगत करा दें। जिससे फोर्स उन पर निगरानी रख सके। त्योहारों और चुनाव में शांति भंग करने वाले दंगाइयों की खैर नहीं होगी। यदि कोई भी व्यक्ति जाए जितना प्रभाव शाली होगा। यदि नियम कानून भंग करेगा तो उसके खिलाफ कठोर से कठोर कार्यवाही की जाएगी। इस बैठक में तेज तर्राक थाना प्रभारी सतीश कुमार, उप निरीक्षक उमेश यादव, उप निरीक्षक मंगला सिंह यादव, उप निरीक्षक घनश्याम यादव, उप निरीक्षक महेश यादव, कांस्टेबल गोविंद संग ग्राम प्रधानपति राम गणेश मौर्य, संजय यादव, प्रधान पुत्र मोनू यादव, ग्राम प्रधान राजेंद्र यादव, ग्राम प्रधान पति श्यामधर पटेल सहित दर्जनों लोग रहे। बैठक की अध्यक्षता कर रहे एसीपी सोरांव।

एक परीक्षा केंद्र डिबार, छह और रडार पर

प्रयागराज। संदिग्ध गतिविधि दिखने पर यूपी बोर्ड के रडार पर छह परीक्षा केंद्र आ गए हैं। आगरा के एक परीक्षा केंद्र से एक परीक्षार्थी कापी लेकर भाग गया था। केंद्र व्यवस्थापक ने इस घटना को छिपा लिया था। मामला खुलने पर इस परीक्षा को केंद्र डिबार कर दिया गया है। केंद्र व्यवस्थापक के खिलाफ कार्रवाई की गई है। इस बीच यूपी बोर्ड के कमांड रूम को सोमवार को प्रदेश के विभिन्न जिलों के परीक्षा केंद्रों की निगरानी के दौरान छह सेंटरों में परीक्षा के दौरान असामान्य हलचल दिखी। बारीकी से जांच करने पर कमांड रूम में बैठे अफसरों ने संदिग्ध गतिविधि की जानकार सचिव को दी।जांच में दो-दो परीक्षा केंद्र प्रयागराज एवं आगरा के हैं। सचिव दिब्यकांत शुक्ला ने सभी परीक्षा केंद्रों को कारण नोटिस जारी कर दिया है। दो दिन के अंदर जवाब मांगा है। संतोषजनक जवाब नहीं मिलने पर सभी छह केंद्रों को डिबार कर दिया जाएगा।

आगरा में उत्तरपुस्तिका लेकर भागा था परीक्षार्थी

गत दो मार्च को द्वितीय पाली इंटर अंग्रेजी की परीक्षा के दौरान आगरा के मां चंद्रबली रामजीलाल इंटर कालेज नगला बहरावती में एक परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका लेकर भाग निकला। यह जानकारी आगरा के पर्यवेक्षक संयुक्त शिक्षा निदेशक मुकेश अग्रवाल को अपने स्त्रोतों से मिली। उन्होंने जांच की तो प्रकरण सही पाया। इस मामले में यहां केंद्र व्यवस्थापक की भूमिका भी संदिग्ध मिली। केंद्र व्यवस्थापक ने पूरे मामले को छुपा लिया था और परीक्षार्थी के खिलाफ कोई विधिक कार्रवाई नहीं की। पर्यवेक्षक ने पूरे मामले की सूचना बोर्ड सचिव दिब्यकांत शुक्ला को दी। रिपोर्ट में केंद्र व्यवस्थापक को भी इस मामले में संलिप्त बताया गया है। सचिव ने फौरी कार्रवाई करते हुए इस परीक्षा केंद्र को काली सूची में डालते हुए डिबार कर दिया है। केंद्र व्यवस्थापक के खिलाफ भी कानूनी कार्रवाई के आदेश दिए हैं।

चोरों के हौसला बुलंद : महा कालेश्वर मंदिर के दान पात्र में रखा एक लाख रूपया हुआ चोरी

अखंड भारत संदेश

झूंसी। थाना क्षेत्र के बसंत विहार कालोनी हवेलियां में स्थित महा कालेश्वर मंदिर में बीती रात घुसकर अज्ञात चोरों ने दान पात्र में रखा एक लाख रूपया चोरी कर फरार हो गए। सोमवार सुबह मंदिर में पूजा अर्चना करने पहुंचे पुजारी ने दान पात्र गायब देखकर तत्काल पुलिस को सूचित किया। मंदिर इससे पूर्व फरवरी में चोरी का प्रयास किया जा चुका है। सूचना मिलने पर पहुंची तहरीर के आधार पर तफ्तीश में जुट गई है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक रमेश दूबे पुत्र स्वर्गीय श्यामा चरण दूबे निवासी बसंत विहार कालोनी हवेलियां महाकालेश्वर मंदिर के महंत है। रविवार रात्रि पूजा पाठ संपन्न होने के रात्रि तकरीबन 9 बजे मंदिर बंद कर घर चले गए थे। सोमवार सुबह मंदिर में पूजा अर्चना करने के लिए पहुंचे तो दान पात्र गायब देखकर दंग रह गए। चोरी की सूचना मिलने पर मंदिर के तमाम भक्तगण भी मौके पर पहुंच गए।

महंत ने तत्काल घटना झूंसी पुलिस को दी तो मौके पर पहुंची पुलिस जांच पड़ताल में जुट गई। मंदिर के महंत रमेश दुबे ने तहरीर देकर बताया कि इससे पूर्व 19 फरवरी को मंदिर में घुसकर चोरी की घटना कारित किया गया था जिसकी तहरीर थाने पर दिया गया था। पूर्व में घटित घटना में विशेष कार्यवाही नही होने से हौसला बुलंद चोरों ने पुनः चोरी की बड़ी घटना को अंजाम दिया है।

पांच साल में तीसरे परीक्षा नियंत्रक पर गिरी गाज

एक पर सीबीआई तो दूसरे पर एसटीएफ ने दर्ज कराया था मुकदमा

प्रयागराज। भर्ती परीक्षाओं में गड़बड़ी के कारण पांच वर्षों के दौरान उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) के तीसरे परीक्षा नियंत्रक पर गाज गिरी है। इससे पूर्व एपीएस भर्ती परीक्षा-2010 में हुई धांधली पर सीबीआई ने पूर्व परीक्षा नियंत्रक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था और एलटी ग्रेड शिक्षक भर्ती-2018 में पेपर लीक मामले में तत्कालीन परीक्षा नियंत्रक को एसटीएफ ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। एपीस भर्ती में गड़बड़ी का मामला बाकी दोनों परीक्षाओं से अलग था। इस बार आरओ/एआरओ प्रारंभिक परीक्षा-2023 में पेपर लीक विवाद में परीक्षा नियंत्रक अजय कुमार तिवारी पर गाज गिरी है। अजय कुमार तिवारी को जून-2022 में आयोग के परीक्षा नियंत्रक के पद पर शासन ने नियुक्त किया था। यहां आने से पहले वह मुजफ्फरनगर में अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व के पद पर तैनात थे।इससे पूर्व एलटी ग्रेड शिक्षक भर्ती-2018 में हिंदी और सामाजिक विज्ञान के प्रश्न पत्र प्रिंटिंग प्रेस से लीक होने के आरोप लगे थे। मामले में एसटीएफ ने तत्कालीन परीक्षा नियंत्रक अंजू कटियार को मई-2019 में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। अंजू कटियार को आयोग परिसर से गिरफ्तार किया गया था और बाद में उन्हें न्यायालय से जमानत मिल गई थी। इसके साथ ही प्रिंटिंग प्रेस संचालक को भी गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था।वहीं, अपर निजी सचिव (एपीएस) भर्ती परीक्षा-2010 में कुछ अभ्यर्थियों को फायदा पहुंचाने के लिए नियमों से छेड़छाड़ के आरोप में सीबीआई ने अगस्त-2021 में पूर्व परीक्षा नियंत्रक प्रभुनाथ के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था। सीबीआई को परीक्षा में हुई इस धांधली के सुबूत मिले थे। इसी कार्रवाई के आधार पर आयोग ने एपीएस भर्ती परीक्षा-2023 को बीच में ही निरस्त कर दिया था और कुछ दिनों पहले यह परीक्षा दोबारा कराई गई।

सिर्फ परीक्षा नियंत्रक को पता होता है, कहां छप रहा पेपर

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) की कोई भी परीक्षा हो, यह बात केवल परीक्षा नियंत्रक को मालूम होती है कि प्रश्नपत्र देश की किस प्रिंटिंग प्रेस में छप रहा है। आयोग के अध्यक्ष को भी यह जानकारी नहीं होती है कि पेपर छपने के लिए किस प्रिंटिंग प्रेस में भेजा गया है। प्रश्नपत्रों के कई सेट तैयार किए जाते हैं और अलग-अलग बंद लिफाफों में परीक्षा नियंत्रक के पास भेज दिए जाते हैं। परीक्षा नियंत्रक उनमें से किसी एक सेट को छपने के लिए प्रिंटिंग प्रेस को भेजता है। हालांकि, परीक्षा नियंत्रक को भी यह जानकारी नहीं होती है कि बंद लिफाफे में कौन सा सेट है। इतनी गोपनीयता के बावजूद पेपर लीक होने और परीक्षा नियंत्रक को अचानक हटा दिए जाने से परीक्षा केंद्रों के साथ अब आयोग और प्रिंटिंग प्रेस की भूमिका भी अब संदेह के घेरे में है।

रेलवे क्रासिंगों पर तीसरी आंख का पहरा

प्रयागराज। रेलवे क्रासिंग पर जाम, हंगामा, लापरवाही, मारपीट के बढ़ते मामलों को देखते हुए रेलवे ने सीसीटीवी कैमरे लगाने की तैयारी की थी। इस योजना को आगे बढ़ाते हुए रेलवे ने पहले चरण में अहम क्रासिंगों पर कैमरे लगाने शुरू कर दिए हैं। उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज मंडल, आगरा और झांसी मंडलों की सौ से अधिक रेलवे क्रासिंगों पर सीसीटीवी लगा दिए गए हैं। यूं तो रेलवे लेवर क्रासिंगों को खत्म ही कर आरयूबी, आरओबी तैयार करा रहा है लेकिन जो क्रासिंग फिलहाल बंद नहीं होंगी वहां की सुरक्षा के मद्देनजर सीसीवीटी कैमरे लगाए जाने लगे हैं। खासकर प्रयागराज मंडल में महाकुंभ के दौरान लेवल क्रासिंग पर बढ़ने वाली भीड़ का आकलन इस कैमरों के माध्यम से ही होगा। इससे भीड़ प्रबंधन में मदद मिलेगी साथ ही रेलवे क्रासिंग पर होने वाली गतिविधियों पर नजर रखी जा सकेगी। हर क्रासिंग पर दो-दो सीसीटीवी कैमरे लगेंगे। एक कैमरा रेलवे ट्रैक व वहां से गुजरने वाले वाहनों की गतिविधियां देखेगा। जबकि दूसरा कैमरा क्रासिंग पर स्थित केबिन में लगेगा। कैमरे से अंदर और बाहर की रिकार्डिंग होगा। रिकार्डिंग को निर्धारित समय तक सुरक्षित रखा जाएगा। प्रयागराज मंडल के पीआरओ अमित सिंह ने बताया कि मंडल की हर रेलवे क्रासिंग पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। टेंडर प्रक्रिया पूरी कर यह काम शुरू भी हो गया है।

सीबीएसई की इंटर फिजिक्स में 3200 परीक्षार्थियों ने दी परीक्षा, सात परीक्षा केन्द्रों पर सम्पन्न हुई परीक्षा

न्यू एंजिल्स स्कूल से परीक्षा देकर बाहर निकलते परीक्षार्थी।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सीबीएसई बोर्ड की 12वीं फिजिक्स की परीक्षा जिले के सात परीक्षा केंद्रों न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल, संगम इंटरनेशनल स्कूल, संस्कार ग्लोबल स्कूल, डॉल्फिन पब्लिक स्कूल, जवाहर नवोदय विद्यालय, पंडित नागेश दत्त पब्लिक स्कूल तथा आइंस्टीन पब्लिक स्कूल में सुबह 10 बजे से दोपहर डेढ़ बजे तक आयोजित की गई जिसमें जिले के लगभग 3200 परीक्षार्थियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। सभी केंद्रों पर परीक्षा सकुशल सम्पन्न हुई।

इस साल सीबीएसई ने शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत में ही फिजिक्स का सैंपल पेपर जारी कर दिया था। इससे छात्रों को बहुत मदद मिली और उन्हें पता चल गया कि हर एक विषय से उनके प्रश्न पत्र में किस प्रकार के प्रश्नों की अपेक्षा की जा सकती है। परीक्षा देकर निकले छात्रों में से कुछ ने पेपर को आसान, कुछ ने मॉडरेट तो कुछ ने ईजी से मॉडरेट लेवल का बताया। फिजिक्स का पेपर सीबीएसई की ओर से जारी सैंपल पेपर की तरह था। कुल मिलाकर यह एक स्टैण्डर्ड और एनसीईआरटी के पाठयक्रम पर आधारित प्रश्नपत्र था। न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल की चेयरपर्सन डा0 शाहिदा व सिटी कोआर्डिनेटर/प्रधानाचार्य बीके सोनी ने बताया कि सीबीएसई 12वीं फिजिक्स की परीक्षा के क्वेश्चन पेपर में कुल 5 सेक्शन थे। इस सब्जेक्ट में कुल 33 सवाल पूछे गए। फिजिक्स का पूरा पेपर कुल 70 अंकों का था। फिजिक्स में पहला सेक्शन बहुविकल्पीय सवालों का था। इस सेक्शन में कुल 16 सवाल थे। इसमें हर सवाल के लिए एक अंक निर्धारित था। इस पूरे सेक्शन में कुल 16 अंकों के सवाल पूछे गए। फिजिक्स के पेपर में दूसरा सेक्शन शॉर्ट आंसर के लिए था। इसमें कुल 5 सवाल थे। हर एक सवाल के लिए दो अंक निर्धारित थे। ऐसे में पेपर का यह सेक्शन 10 अंकों का था। सीबीएसई बोर्ड 12वीं फिजिक्स के पेपर में तीसरा सेक्शन 7 सवालों का था। इस सेक्शन में क्वेश्चन सॉल्व करने के लिए कहा गया था। इसमें हर एक सवाल के लिए तीन अंक निर्धारित थे। ऐसे में पूरा सेक्सन 21 अंकों का था। न्यू एंजिल्स की प्रबन्धक डॉ शाहिदा ने बताया कि सीबीएसई बोर्ड कक्षा 10वीं की परीक्षा 13 मार्च और कक्षा 12वीं की परीक्षा 2 अप्रैल को समाप्त होगी। सीबीएसई कक्षा 12 वीं साइंस की अगली परीक्षा रसायन विज्ञान 9 मार्च को होगी।

हाईस्कूल अंग्रेजी में 4357 परीक्षार्थी रहे अनुपस्थित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। माध्यमिक शिक्षा परिषद के हाईस्कूल व इंटर की परीक्षा में आज हाईस्कूल में अंग्रेजी का प्रश्न पत्र था जिसमें 48754 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। जबकि 4357 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। इसी प्रकार इंटर में कम्प्यूटर व कृषि का प्रश्न पत्र था जिसमें 315 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। जबकि 12 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। हाईस्कूल व इंटर की परीक्षाएं कड़ी निगरानी में सम्पन्न हो रही है। हाईस्कूल अंग्रेजी में कहीं भी नकलची के पकड़े जाने की सूचना नहीं है।

नारी शक्ति दौड़ कार्यक्रम में मौजूद महिला मोर्चा की पदाधिकारी व अन्य।

महिला सशक्तिकरण को लेकर भाजपा महिला मोर्चा ने निकाला जुलूस

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा द्वारा रन फार मोदी-रन फार नारी शक्ति के तहत नारी शक्ति दौड़ का कार्यक्रम कंपनी गार्डन से प्रारंभ होकर अंबेडकर चैराहा से कंपनी गार्डन में समाप्त किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद संगम लाल गुप्ता रहे। कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिला अध्यक्ष रुचि केसरवानी, क्षेत्रीय कोषाध्यक्ष प्रतिभा सिंह, जिला पंचायत सदस्या पूनम इंसान, राम आसरे पाल, कुसुम सिंह, सारिका श्रीवास्तव प्रतिभा श्रीवास्तव, सुष्मिता, मनप्रीत, मंजू त्रिपाठी, कामिनी श्रीवास्तव ,सरोज सिंह और सैकड़ो की संख्या में बहने उपस्थिति रही।

क्राकरी की दुकान में लगी आग, लाखों का नुकसान

चार घंटे की मशक्कत के बाद फायद ब्रिगेड ने बुझाई आग

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी ब्लाक के पास अनिल क्रॉकरी स्टोर में आग लग गई। आग की सूचना पर तत्काल एफएस पट्टी की यूनिट घटना स्थल पर पहुंची।

इस दौरान दुकान में लगी आग को एफएस यूनिट द्वारा बुझाया गया। आग की भयावहता को देखते हुए एफएस सदर, रानीगंज की यूनिट को भी बुलाया गया। प्रभारी अगिनशमन अधिकारी अतुल त्रिपाठी के नेतृत्व में ली0फा0मैन राधेश्याम दूबे, फायरमैन-अतुल पाण्डेय, प्रवीण सिंह, मणिसेन, मंजेकर एवं अन्य एफएस यूनिट द्वारा काकरी स्टोर के पिछले हिस्से से बड़ी ही सूझ-बूझ व कड़ी मशक्कत के बाद आग पर पूर्ण रूप से काबू पा लिया गया। जिससे स्टोर के पिछले हिस्से में रखा कॉकरी व अन्य घरेलू सामान बचा लिया गया। इस दौरान अनिल कॉकरी स्टोर में रखा सामान जैसे-प्लास्टिक की बाल्टिया, बॉटल, मिक्सर, प्लेट इत्यादि सामग्री जलकर क्षतिग्रस्त हो गये। घटनास्थल पर चार फायर टेण्डरों द्वारा पम्पिंग करके लगभग चार घंटों में आग को पूर्ण रूप से बुझा दिया गया एवं अगल-बगल की अन्य दुकानों को आग लगने से बचा लिया गया। मौके पर क्षेत्राधिकारी लालगंज एवं स्थानीय पुलिस भी मौजूद थी।

क्राकरी की दुकान में आग लगने से उठता धुआं।

ध्रुव चरित्र की कथा सुन भावविभोर हुए श्रद्धालु

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर पंचायत के सांगीपुर वार्ड में चल रही श्रीमदभागवत कथा में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ रही है। कथा व्यास आचार्य केसरीनाथ तिवारी ने ध्रुव चरित्र की कथा सुनाई। उन्होने कहा कि भागवत कथा अमृत के समान है। इस कथा का श्रवण करने से मनुष्य मोक्षगामी बनता है। उन्होने कहा कि बाल्यावस्था में ध्रुव भगवान नारायण की भक्ति में लीन रहता था। उसकी भक्ति को देखकर भगवान नारायण ने उसे दर्शन दिया। कथाव्यास आचार्य केसरीनाथ ने कहा कि निर्मल हृदय से सच्ची भक्ति करने पर मनुष्य को परमात्मा की कृपा अवश्य प्राप्त होती है और उसकी समस्त मनोकामनाएं भी पूर्ण होती हैं। मनुष्य को अपने मन, वाणी से परमात्मा के प्रति आस्था रखते हुए उनकी उपासना करनी चाहिए। कथा के मुख्य यजमान कृपाशंकर द्विवेदी ने रोली चंदन से व्यासपीठ का पूजन किया और श्रद्धालुओं का स्वागत किया। संयोजक शिवाकांत द्विवेदी ने श्रद्धालुओं के प्रति आभार जताया। इस मौके पर कृष्णा द्विवेदी, उमाकांत द्विवेदी, श्रीकांत, शशिकांत, शौर्य द्विवेदी, डा. शक्तिधरनाथ पाण्डेय, ज्ञानप्रकाश शुक्ल, विकास मिश्र, आचार्य राजेश मिश्र आदि मौजूद रहे।

बेल्हा के साहित्यकार हरीलाल को मिला सुब्रमण्यम भारती पुरस्कार

साहित्यकारों ने हर्ष जताते हुए दी बधाई

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के ग्राम पूरे गुलाबराय, पत्रालय बाबूगंज (लक्ष्मणपुर) निवासी प्रतिष्ठित साहित्यकार हरीलाल मिलन को उत्तर प्रदेश राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान लखनऊ का सुब्रमण्यम भारती पुरस्कार एक लाख रुपए तथा स्मृति चिन्ह सहित उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा से लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में मिला।

पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता श्री जितेन्द्र कुमार आई ए एस अपर मुख्य सचिव (भाष) ने की। यह पुरस्कार हरीलाल मिलन को उनके चर्चित कहानी संग्रह आखिरी झूठ के उत्कृष्ट लेखन के लिए प्रदान किया गया। महाकाव्य, उपन्यास, बाल साहित्य, देशभक्ति गीत, खंडकाव्य सहित श्री मिलन की दर्जनों कृतियां प्रकाशित हैं। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ से उन्हें साहित्य भूषण, कबीर नामित पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

उनके साहित्य पर जीवाजी विश्वविद्यालय मध्य प्रदेश व छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर से शोध भी हो चुका है। पुरस्कार की खबर सुनकर बेल्हा सहित देश के साहित्यकारों में खुशी की लहर दौड़ गई। श्री मिलन डॉ. दयाराम मौर्य रत्न के आवास सृजनाकुटीर आते रहते हैं। एक बैठक आहूत करके मिलन जी को बधाई दी गई। डॉ. दयाराम मौर्य रत्न की अध्यक्षता में हुई बैठक में रोशन लाल ऊमरवैश्य, अम्मा साहब ट्रस्ट के ट्रस्टी आनन्द मोहन ओझा, राजीव कुमार आर्य, श्रीनाथ मौर्य सरस, राधेश्याम दीवाना, कुंज बिहारी लाल मौर्य काकाश्री, अनिल कुमार निलय, राकेश कनौजिया, सुनील कुमार सिंह, जितेंद्र कुमार मौर्य ने हर्ष व्यक्त करते हुए बधाई और शुभकामनाएं दीं।

साहित्यकार हरीलाल को सम्मानित करते मुख्य अतिथि।

स्काउट गाइड प्रशिक्षण की जानकारी देते संजीव कुमार।

डिग्री कालेज कालाकांकर मे पांच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण शुरु

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास खण्ड कालाकांकर के मदन मोहन मालवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कालाकांकर मे पांच दिवसीय स्काउट गाइड का स्पेशल इंट्रोडक्ट्री प्रशिक्षण रानी नीलिमा सभागार कक्ष मे प्रारम्भ किया गया जिसमें बी एड व डी एल एड के प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर कालेज के प्राचार्य प्रो0 शिवम श्रीवास्तव ने प्रशिक्षणार्थियों को स्काउट गाइड के बारे मे कुछ महत्व पूर्ण जानकारी दिया। स्काउट गाइड के प्रशिक्षण संजीव कुमार शर्मा व निखिल चैरसिया ने रोवर्स-रेंजर्स के प्रशिक्षार्थियों को आपात स्थिति से निपटने के लिए कई विधाओं का प्रशिक्षण दिया। इस मौके पर प्रो रामकरन, प्रो रेखा सिंह, सर्वेश कुमार सिंह (रोवर रेंजर प्रभारी), डा ज्योति गुप्ता, आशुलता, सूरज सिंह आदि लोग रहे।

वरिष्ठ अधिवक्ता कन्हैया लाल के निधन पर हुई शोक सभा, प्रमोद व मोना ने भी जताया दुख

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जिले के वरिष्ठ अधिवक्ता कन्हैया लाल पाण्डेय के आकस्मिक निधन पर सोमवार को यहां वकीलो ने शोक सभा कर न्यायिक कामकाज से खुद को विरत रखा। वही राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी तथा क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने भी स्व. कन्हैया लाल के निधन को विधिक सेवा के क्षेत्र में रिक्तता कहा है। संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश की अध्यक्षता मे हुई बैठक मे स्वर्गीय पाण्डेय के निधन पर गहरा दुख जताया गया। बैठक का संचालन महामंत्री धीरेन्द्र शुक्ल व संयोजन वरिष्ठ उपाध्यक्ष शैलेन्द्र चतुर्वेदी ने किया। उपाध्यक्ष लाल विनोद सिंह ने स्वर्गीय पाण्डेय के निधन पर फुल कोर्ट रिफ्रेंस आनर का प्रस्ताव रखा। बैठक में ज्ञानप्रकाश शुक्ल, विकास मिश्र, देवी प्रसाद मिश्र, रमेश पाण्डेय, राममोहन सिंह, केबी सिंह, प्रमोद सिंह, विपिन शुक्ल, दीपेन्द्र तिवारी, शहजाद अंसारी, रमेश पाण्डेय, हरकेश पटेल, जितेन्द्र सिंह, जान्हवी प्रताप सिंह, मो. असलम, शैलेन्द्र मिश्र, राजेश तिवारी, आशीष तिवारी, संदीप सिंह, विनय जायसवाल, संतोष पाण्डेय, हरिश्चंद्र पाण्डेय, सूर्यकांत निराला, घनश्याम मिश्र, विनोद मिश्र, बीडी पटेल, सुरेश मिश्र मदन, राहुल मिश्र, टीपी यादव, शिवाकांत उपाध्याय, कमलेश तिवारी, सुशील शुक्ल, राव वीरेन्द्र सिंह, ललित गौड, उदयराज पाल, राजेश सरोज, प्रभाकर पाल, रामकिंकर शुक्ल, सत्येन्द्र श्रीवास्तव, कालिका प्रसाद पाण्डेय, बृजेन्द्र पाण्डेय आदि अधिवक्ता रहे।

रसूख के चलते नौ वर्ष बाद भी अधीक्षक का नही हुआ तबादला

तबादला नीति के दायरे में है सीएचसी के आधा दर्जन कर्मचारी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। तबादला नीति कहीं भी लागू हो लेकिन स्थानीय सीएचसी पर इसका कोई प्रभाव नहीं दिखाई देता है। यहां कोई नौ वर्षों से तो कोई एक दशक से सेवा कर रहा है,लेकिन लंबी रसूख के चलते इनका तबादला नहीं हो रहा है।

स्थानीय सीएचसी में लगभग आधा दर्जन ऐसे डॉक्टर व कर्मचारी है जिन्हे यहां पर सेवा करते वर्षों बीत गए है, लेकिन उनका तबादला नहीं हो रहा है।इसे रसूख कहे या फिर विभागीय खेल? लंबे अरसे से सेवा कर रहे सीएचसी अधीक्षक को नौ वर्ष तो वही रानीगंज कैथौला पीएचसी के डॉ0 प्रेमशंकर को सात वर्ष एक ही स्थान पर बीत गए ड्यूटी करते हुए। एक फार्मास्टि है जिसे लगभग एक दशक हो गए है। यही नहीं इस तरह के कई लोग है जो तबादले के दायरे में है, लेकिन इनका स्थानांतरण नही हो रहा है। जब कि तबादला नीति के तहत तीन वर्ष बाद तबादले का नियम है। इन चिकित्सकों व कर्मचारियों की क्षेत्र में अच्छी पकड़ होने के कारण यह लोग मनमानी पर उतारू हो गए है। कुछ प्रभावशाली लोगो को मैनेज करके आराम से ड्यूटी कर रहे है।आम जनता को सरकारी सुविधाएं नही मुहैया हो पा रही है। सूत्रों की माने तो इनकी शिकायत भी चाहे जहां करो कोई भी कार्रवाई नही होती है।

इस संबंध में अधीक्षक ने बताया की स्थानांतरण शासन की तरफ से किया जाता है, रही बात जांच की तो जो भी यहां सुविधाएं है वह लोगो को दी जाती है।

प्राइवेट जांच पर है सरकारी चिकित्सकों को भरोसा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय चिकित्सकों को खुद की जांच से कहीं अधिक प्राइवेट जांच पर भरोसा है। वह किसी के इलाज करने से पहले एक जांच लिखना उनकी मजबूरी बन गई है, इसमें निजी स्वार्थ छिपा है या फिर रोगी का हित? सूत्रों की माने तो जो जांच अस्पताल में मौजूद है उसे भी बाहर के लिए लिखा जाता है।चिकित्सकों की मनमानी की वजह से गरीब लोग परेशान हो रहे हैं।

कोतवाली पुलिस ने वांछित को किया गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने वांछित को गिरफ्तार कर सोमवार को न्यायालय भेज दिया। कोतवाल अवन दीक्षित ने बताया कि गश्त के दौरान सोमवार को दोपहर करीब साढे बारह बजे रानीगंज कैथौला चैकी इंचार्ज सुरेन्द्र सिंह ने कैथौला बाजार से वांछित शरीफ उर्फ इकबाल हुसैन निवासी छोटा राजा का पुरवा बरीबोझ को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार किये गये आरोपी को न्यायालय भेज दिया गया।

पन्द्रह मार्च तक चलेगा संयुक्त अधिवक्ता संघ के चुनाव में सदस्यता अभियान

चुनाव समिति की बैठक मे प्रथम चरण के कार्यक्रमो की घोषणा को लेकर बढ़ी सरगर्मी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। संयुक्त अधिवक्ता संघ के चुनाव को लेकर सोमवार को सदस्यता अभियान के तहत प्रथम चरण के कार्यक्रम की घोषणा हुई है। सदस्यता अभियान की घोषणा होते ही तहसील व दीवानी न्यायालय परिसर मे अधिवक्ताओ के बीच चुनाव सरगर्मी बढ़ गयी दिखी। समिति की ऐल्डर कमेटी के अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद मिश्र की अध्यक्षता मे हुई बैठक मे चुनाव कराए जाने की घोषणा की गयी।

चुनाव समिति के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने प्रथम चरण के कार्यक्रमो को जारी करते हुए बताया कि पांच मार्च से आगामी पन्द्रह मार्च तक सदस्यता अभियान संचालित किया जाएगा। उन्होने बताया कि मौजूदा सत्र के चुनाव में 2022 वर्ष के पंजीकृत अधिवक्ता मतदान में शामिल होगे। उन्होने यह भी ऐलान किया कि समिति उन्ही अधिवक्ताओ के आवेदन स्वीकार करेगी जो लालगंज तहसील एवं दीवानी न्यायालय मे नियमित वकालत किया करते हैं। मतदाता बनने वाले अधिवक्ताओ को बार कौंसिल आफ उत्तर प्रदेश के प्रमाण पत्र अथवा पहचान पत्र की छायाप्रति भी आवेदन के साथ संलग्नक करनी होगी। वही समिति के प्रवक्ता विकास मिश्र ने बताया कि आगामी ग्यारह मार्च को समिति की बैठक में मौजूदा मतदाता सूची का पुनरीक्षण किया जाएगा। बैठक का संचालन चुनाव समिति के महामंत्री देवी प्रसाद मिश्र ने किया। बैठक मे चुनाव समिति के उपाध्यक्ष अजय शुक्ल गुडडू, कोषाध्यक्ष शिवाकांत उपाध्याय, आयव्यय निरीक्षक बेनीलाल शुक्ल एवं ऐल्डर कमेटी के महामंत्री वीरेन्द्र सिंह, उपाध्यक्ष रामलगन यादव के साथ पूर्व अध्यक्ष राममोहन सिंह, पूर्व अध्यक्ष टीपी यादव, पूर्व अध्यक्ष संतोष पाण्डेय आदि मौजूद रहे।

बेमौसम की बारिश से आम, सरसों, मटर को भानी नुकसान, गंगा कछार क्षेत्र में कही कही गिरे ओले

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। मार्च का शुरुवाती समय किसानों के लिए खतरे की घण्टी साबित हुआ है, बीते दो दिनों मे रह रहकर हुयी बारिश से आम की फसल, मटर और सरसों की खेती के लिए नुकसान दायक साबित हो रही है। गंगा के कचारी इलाकों मे कई जगह ओले गिरने की सूचना है। हालांकि इसे कुदरत की मेहरबानी ही कहेगे की यदि नन्हे ओलों की जगह अगर बड़े आकार के ओले गिरते तो भारी नुकसान हो सकता था।

बता दें कि कुण्डा क्षेत्र में आम की बड़ी-बड़ी बागे हैं। इन बागों में आम की बौर आ गई थी। इस बरसात से उसको भी क्षति पहुंची है। मौसम विभाग की चेतावनी के अनुसार ही बारिश हुयी और इससे आलू की फसल जो बिना खोदे खेतों मे पड़ी है उसको भी नुकसान हुआ है। कुंडा तहसील क्षेत्र आम की फसलों के बागों के लिए मशहूर है ऐसे मे बौर आने के समय मे इस तरह का मौसम आम की फसलों के लिए प्रतिकूल ही कहा जा सकता है। शहावपुर गांव के रहने वाले विनीत पांडे ने फोन पर बताया की बीती रात मटर के दानों के आकार वाले ओले गिरे थे जिससे फसलों का आंशिक नुकसान हुआ है वहीं ये ओले आम की फसलों के लिए भी घातक साबित होंगे, मार्च महीने मे आम के पेड़ो पर बौर आने का समय होता है इस समय हलकी बारिश, धुंध और ओले गिरने से आम की फसल गंभीर रूप से प्रभावित होती है। कुल मिलाकर बे मौसम की बारिश कृषि कार्य से जुड़े लोगों के लिए सिरदर्द से कम नहीं है।

ब्लाक सभागार में महिला आजीविका प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ शुभारम्भ

लालगंज, प्रतापगढ़। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के नेतृत्व मे एएफसी संस्था द्वारा सोमवार को ब्लाक लालगंज सभागार मे दो दिवसीय लखपति महिला आजीविका प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ। बीडीओ इंदुप्रकाश श्रीवास्तव एवं पर्यावरण सेना प्रमुख अजय क्रांतिकारी ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में विकासखण्ड के तिरपन ग्राम पंचायतों से समूह की महिलाएं शामिल हुई। पर्यावरण सेना प्रमुख ने इस मिशन के उददेश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस कार्यक्रम का उददेश्य गांव में समूह से जुडी महिलाओं की आय बढ़ाना है। समूह से जुडी महिलाएं विभिन्न उद्यमों जैसे-पशुपालन, सिलाई-कढ़ाई, छोटे उद्योग आदि के द्वारा अपनी आय बढ़ाकर एक लाख रूपये वार्षिक कर सकती है। इसी उददेश्य को लेकर यह प्रशिक्षण कराया जा रहा है। बीडीओ ने बताया कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से समूह की महिलाएं अपनी आय को बढ़ाकर लखपति महिला बन सकती है। उन्होने बताया कि वार्षिक एक लाख रूपये की आय करते हुए आज समूह से जुडी बहुत सी महिलाएं लखपति दीदी का खिताब हासिल कर चुकी है। इस मौके एडीओ आईएसबी आत्माराम मौर्य, ब्लाक मिशन प्रबन्धक बीएमएल रंजना पटेल, सुधा कुशवाहा, दिनेश कुमार, नेहा देवी, नीलम देवी, मंजूलता, गीता, निर्मला आदि मौजूद रहीं।

नम आंखों से परिजनों ने युवक के शव का किया अंतिम संस्कार

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। संदिग्ध दशा में फांसी के फंदे से हुई युवक की मौत की घटना में रविवार की शाम पीएम के बाद मृतक का शव घर लाया गया। परिवार के लोगों ने देर शाम गांव स्थित बाग में शव को दफन कर दिया। पीएम रिपोर्ट मे युवक की मौत फांसी के फंदे से लटकने से हुई बतायी गयी है। लीलापुर थाना के छेमर सरैंया के घासी का पुरवा निवासी बीस वर्षीय रितिक गौतम पुत्र श्यामलाल गौतम का शव रविवार की सुबह घर के कमरे में फांसी के फंदे से लटकता मिला था। एसओ लीलापुर नरेन्द्र सिंह का कहना है कि पीएम रिपोर्ट के अनुसार फन्दे से लटकने से युवक की मौत हुई है। घटना को लेकर अभी पीडित पक्ष से कोई तहरीर नही मिली है। तहरीर मिलने पर उचित कार्रवाई की जाएगी।

आगामी लोकसभा निर्वाचन को सकुशल सम्पन्न कराने के लिए अपर पुलिस महानिदेशक एवं मण्डलायुक्त ने की बैठक

कौशाम्बी। अपर पुलिस महानिदेशक भानु भाष्कर एवं मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत द्वारा उदयन सभागार में आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 को निष्पक्ष,पारदर्शी,शांतिपूर्ण एवं सकुशल सम्पन्न कराने के लिए प्रभारी अधिकारियों के साथ बैठक की गई बैठक में अपर पुलिस महानिदेशक एवं मण्डलायुक्त ने प्रभारी अधिकारियों से अब तक की गई तैयारियों की जानकारी प्राप्त करते हुए कहा कि अपने दायित्वों का जिम्मेदारीपूर्वक निर्वहन कर टीम भावना के साथ कार्य कर निर्वाचन सकुशल सम्पन्न करायी जाय। अपर पुलिस महानिदेशक ने सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए निर्देशित किया की आवश्यकतानुसार निरोधात्मक/ पाबन्द की कार्यवाही कर लिया जाय। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर पैनी नजर रखी जाय तथा गलत सूचनाओं व अफवाहों पर तत्काल नियमानुसार कार्यवाही की जाय। उन्होंने कहा कि यह

सुनिश्चित किया जाय कि जनपद में कही भी अवैध शराब न बनने पाये। पोलिंग पार्टी रवानगी के दिन एवं मतदान समाप्ति के पश्चात पोंलग पार्टियों के आगमन के समय यातायात की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित किया जाय। पोलिंग पार्टियों के रवानगी स्थल पर सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित किया जाय। मण्डलायुक्त ने कहा कि जोनल/सेक्टर मजिस्ट्रेट एवं कार्मिकों का प्रशिक्षण भारत निर्वाचन आयोग की गाइड लाइन के अनुसार विधिवत कराया जाय। उन्होंने सभी उप जिलाधिकारियों एवं क्षेत्राधिकारियों से कहा कि अपने-अपने क्षेत्र के सभी मतदान केंद्रों का निरीक्षण कर मूलभूत सुविधाओं यथा-रैम्प, शौचालय, पानी, प्रकाश व्यवस्था आदि को सुनिश्चित कर लिया जाय, कोई कमी पायी जाती है तो समय से ठीक करा लिया जाय। उन्होंने कहा कि मतदाता जागरूकता कार्यक्रम निरन्तर चलाया जाय तथा सोशल मीडिया पर विशेष निगरानी रखी जाय। बैठक में अपर पुलिस महानिदेशक एवं मण्डलायुक्त को जिला निर्वाचन अधिकारी राजेश कुमार राय एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 को सकुशल सम्पन्न कराने के लिए अब तक की गई तैयारियों की विस्तृत जानकारी दी गई।इस अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक प्रेम कुमार गौतम,मुख्य विकास अधिकारी डाॅ0 रवि किशोर त्रिवेदी जिलाधिकारी अरूण कुमार गोंड एवं अपर पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार वर्मा सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जोनल सेक्टर मजिस्ट्रेट के साथ लोकसभा चुनाव की बैठक

कौशाम्बी जिला निर्वाचन अधिकारी राजेश कुमार राय एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा उदयन सभागार में आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 को निष्पक्ष,पारदर्शी एवं सकुशल सम्पन्न कराने के लिए सभी जोनल/सेक्टर मजिस्ट्रेट के साथ बैठक की गई। बैठक में जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी सेक्टर मजिस्ट्रेट को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी दिशा-निदेर्शों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित किया जाय। इसके साथ ही उन्होंने सभी सेक्टर मजिस्ट्रेट को मतदान केन्द्रों का भ्रमण कर आवश्यक मूलभूत सुविधाओं आदि का सत्यापन कर आख्या उपलब्ध कराने के निर्देश दिए पुलिस अधीक्षक ने सेक्टर मजिस्ट्रेट एवं पुलिस अधिकारियों को आश्यक दिशा-निर्देश दिए इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी,अपर जिलाधिकारी अरूण कुमार गोंड एवं सभी एसडीएम सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

रेल लाइन में आत्महत्या करने जा रही महिला को पुलिस कर्मचारियों ने बचाया

कोखराज कौशाम्बी पति की प्रताड़ना से त्रस्त महिला बच्चो को लेकर ट्रेन के सामने कूदकर आत्महत्या करने जा रही थी मामले की जानकारी ग्रामीणों को लगी तो सूचना पुलिस को दी गयी पुलिस के सहयोग से ग्रामीणों ने महिला और उसके बच्चो को समझा बुझा कर आत्महत्या करने से रोक दिया है जानकारी के मुताबिक मनीता पाल पत्नी इंद्रपाल निवासी परसरा थाना कोखराज सोमवार को अपने तीन बच्चो के साथ रेल लाइन पर कट कर आत्महत्या करने जा रही थी 112 डायल को ग्रामीणों ने सूचना दिया जिस पर रेल लाइन में कटने जा रही महिला व तीन बच्चों को समझा बुझाकर कर ग्रामीणों के सहयोग से पुलिस द्वारा वापस लाया गया महिला ने बताया कि उसका पति लगातार मार पीट करता रहता है जिससे आजिज आ कर अपने तीन छोटे छोटे बच्चों को लेकर आत्म हत्या करने गयी थी रोहित तिवारी व ब्रजेश मिश्रा सिपाही अपनी up 32 dg3653 से पहुंच कर पति की प्रताड़ना से निजात दिलाने का महिला को अश्वासन दिया और महिला बच्चो को चौकी प्रभारी भरवारी की सुपुर्दगी में दिया गया है।

दलित नाबालिग बालिका की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

कोखराज कौशांबी कोखराज थाना क्षेत्र के काशिय पश्चिम गांव के बगला पर दलित नाबालिक बालिका की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है परिजनों का कहना है कि बालिका ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया है मामले की सूचना मिलते ही मौके पर पुलिस पहुंची है और बालिका के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है घटनाक्रम के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के कासिया पश्चिम गांव के मजरा बांग्ला पर निवासी दलित बालिका कविता देवी उर्फ पुल्ली उम्र 14 वर्ष पुत्री राधेश्याम कोरी का शव सोमवार को घर में मिला है परिजनों के मुताबिक बालिका मानसिक बीमारी से तंग थी और रसोई घर के अंदर धन्नी से लटक कर फांसी लगाकर उसने आत्महत्या कर लिया है जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने बालिका के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है।

व्यापारी के अंतिम संस्कार में उमड़ा जन समुदाय

मनौरी कौशाम्बी मनौरी बाजार के व्यापारी श्री राम केसरवानी उम्र 70 वर्ष पुत्र स्व0 मोती लाल केसरवानी का बीती रात लंबी बीमारी के कारण देहांत हो गया व्यापारी की मौत की जानकारी मिलती ही उसके घर पर लोगों की भीड़ लगी लोगों ने शोक सम्बेदना व्यक्त करते हुए परिजनों को सांत्वना दी है सोमवार की दोपहर में गंगा नदी के किनारे फतेहपुर घाट पर उनका अंतिम संस्कार किया गया व्यापारी के अंतिम संस्कार में हजारों लोगों ने अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित किया

प्राथमिक विद्यालय बलकरनपुर में वार्षिक उत्सव का आयोजन

कौशाम्बी विकास खण्ड मूरतगंज के प्राथमिक विद्यालय बलकरनपुर में सोमवार को वार्षिक उत्सव का आयोजन बड़े धूमधाम से किया गया कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती की वंदना से हुआ। तत्पश्चात विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में शानदार नृत्य प्रदर्शन और एक आकर्षक बच्चों द्वारा फैशन शो का आयोजन किया गया। छात्रों की प्रस्तुति देखकर उपस्थित दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए और भूरी भूरी प्रशंसा की है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष अशोक कुमार द्विवेदी, महामंत्री खीन्द्र सिंह, जूनियर शिक्षक संघ के अध्यक्ष रत्नेश सिंह, ए० आर०पी० बृजेश पाण्डेय, कम्पोजिट विद्यालय अमनी लोकीपुर के प्र० अ अरविन्द नारायण शुक्ला ग्राम प्रधान-पति मान सिंह उपस्थित रहें।विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती आस्था साहू ने अतिथियों एवं अभिभावकों का स्वागत किया।

गौकशी को लेकर विहिप ने कोखराज थाना पर धरना प्रदर्शन कर की कार्यवाई की मांग

कोखराज कौशाम्बी जिले में गौकशी को लेकर विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओ ने कोखराज थाना पर धरना प्रदर्शन किया है,विहिप कार्यकर्ताओ ने प्रदर्शन कर आरोपियों पर कार्यवाई की मांग की है।कोखराज थाना क्षेत्र के ननमई गांव गौकशी को लेकर प्रख्यात है,लगातार उस गांव में गौकशी की जाती है,लेकिन पुलिस महज फर्ज अदायगी कर मामले को ठंडे बस्ते में डाल देती है,जिसके लिए विहिप लगातार धरना प्रदर्शन कर कार्यवाई की मांग करता रहा है।सोमवार को विश्व हिंदू परिषद के नेता शिव पूजन राही के नेतृत्व में विहिप के जिला संयोजक विवेक जायसवाल एवम दर्जन भर कार्यकर्ता कोखराज थाना पहुंचे और कर्यवाई की मांग को लेकर धरना प्रदर्शन किया।विहिप कार्यकर्ताओ ने पुलिस पर गौकशी करने वालो के खिलाफ कार्यवाई में लापरवाही पूर्ण रवैया अपनाने का आरोप लगाते हुए प्रदर्शन किया है।

सीएम के निर्देश पर शुरू हुई पटाखा फैक्ट्री मौत की जांच बनी औपचारिकता

कौशाम्बी कोखराज थाना क्षेत्र के भरवारी कस्बे में 4 दिन पहले पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट के बाद लाशों के ढेर लग जाने के मामले को मुख्यमंत्री ने गंभीरता से लिया मुख्यमंत्री ने टीम गठित कर पूरे प्रकरण की जांच कर रिपोर्ट भेजने के निर्देश दिया मुख्यमंत्री के निर्देश पर पटाखा फैक्ट्री की जाच शुरू हुई विस्फोट के बाद भी दर्जनों पटाखा फैक्ट्री जिले में अवैध तरीके से संचालित हो रही है कई दिन बीत जाने के बाद भी अवैध पटाखा फैक्ट्री के संचालन में दोषी अधिकारियों की चिन्हित नहीं किया जा सकता है अभी तक किसी दोषी पर कार्रवाई नहीं हुई है जिससे जांच टीम की लचर व्यवस्था का अंदाजा लगाया जा सकता है जिले के पश्चिमी छोर से लेकर पूर्वी छोर तक और उत्तरी छोर से लेकर दक्षिणी छोर तक विभिन्न कस्बो में अवैध पटाखा फैक्ट्री का संचालन हो रहा है जहां भारी तादाद में बारूद का भंडारण है पटाखा फैक्ट्री की जांच के लिए अफसर की टीम पूरे दिन सड़क पर घूम रही है लेकिन हकीकत में उसकी जांच मुख्यमंत्री को गुमराह कर महज औपचारिकता तक सीमित रह गई है 5 दिन से शुरू हुई पटाखा फैक्ट्री की जांच में अभी तक उसे बारूद नहीं बरामद हो सका है जबकि कई दर्जन पटाखा फैक्ट्री अवैध तरीके से चल रही है जिनमें बड़ी तादाद में बारूद का भंडारण है। पटाखा फैक्ट्री का लाइसेंस दिए जाने की बात पर प्रत्येक विभाग के अफसर का कहना कि जिला अधिकारी द्वारा लाइसेंस दिया गया लेकिन पटाखा फैक्ट्री का लाइसेंस भारत सरकार के पेट्रोलियम मंत्रालय के एक्सक्लूसिव विभाग द्वारा दिया जाता है जिला अधिकारी को लाइसेंस दिए जाने का कानून में कहा नियम है इसके सवाल पर भी अफसर

पटाखा फैक्ट्री विस्फोट के बाद पटाखा फैक्ट्री से कितना बरामद हुआ बारूद के सवाल पर निरुत्तर है अफसर

निरुत्तर हो जाते हैं भारत सरकार के पेट्रोलियम मंत्रालय द्वारा एक्सक्लूसिव लाइसेंस दिए जाने के नियम के बावजूद जिले में कई दर्जन पटाखा फैक्ट्रियां अवैध तरीके से बीते कई वर्षों से संचालित हो रही है स्थानीय थाना पुलिस चौकी पुलिस श्रम विभाग अग्निशमन विभाग उद्योग निदेशालय के साथ-साथ तहसील के अधिकारियों की भूमिका सवालों में है बताया जाता है कि छोटे पटाखा बिक्री का लाइसेंस रिन्यूअल के नाम से पटाखा फैक्ट्री संचालकों से बड़ी वसूली होती है और इसी वसूली की जिंदा रखने के लिए हमेशा पटाखा निर्माण करने वालों को संरक्षण दिया गया जिससे उन्होंने पटाखा बिक्री के साथ नियम विरुद्ध पटाखा का निर्माण शुरू कर दिया है सुरक्षा के व्यापक प्रबंध न होने से लगातार विस्फोट की घटनाएं हो रही है और निर्दोष लोगों की मौत हो रही है अवैध तरीके से संचालित पटाखा फैक्ट्री को बंद कराया जाना होगा निदोर्षों के मौत को रोकना होगा लेकिन मुख्यमंत्री के निर्देश पर शुरू हुई जांच के बाद भी अभी तक ठोस कार्रवाई होती नहीं दिख रही है पटाखा फैक्ट्री संचालन करने वालों से वसूली के चलते उन्हें बचाने के प्रयास हो रहा है योजना में वसूली में लगे लोगों को चिन्हित करना होगा उन पर कठोर कार्रवाई करनी होगी तब पटाखा फैक्ट्री के संचालक को शासन प्रशासन रोकने में सफल होगा वरना प्रशासन की कार्यवाही की धज्जियां उड़ाने में वसूली में लगे लोग पीछे नहीं रहेंगे।

लव जिहाद के आरोप को लेकर जिला पुलिस मुख्यालय में प्रर्दशन, कार्यवाही का आश्वासन

मामला पिपरी थाना क्षेत्र का, अखण्ड भारत संकल्प परिषद् के लोगों ने उठाई आवाज

मनौरी कौशाम्बी। जिले में धर्म विशेष के लोगों द्वारा सनातन धर्म को मानने वालों के साथ लगातार उत्पीड़न हो रहा है इसके बाद भी पुलिस के कुछ जिम्मेदारों द्वारा धन के लालच में इनके खिलाफ कार्रवाई नहीं की जा रही है, जो कि वर्तमान सरकार को बदनाम करने की साजिश जैसा है। उक्त बातें अखंड भारत संकल्प परिषद के जिला संयोजक वेद प्रकाश सत्यार्थी ने सोमवार को मुख्यालय स्थित पुलिस कार्यालय में पिपरी थाना पुलिस के गैर जिम्मेदाराना रवैया के खिलाफ प्रर्दशन के दौरान कही। उन्होंने कहा कि जिस तरीके से पिपरी थाना क्षेत्र में लगातार हिंदू महिलाओं के साथ वर्ग विशेष के लोगों द्वारा उनके इज्जत के साथ खिलवाड़ किया जाता है इसके बाद भी पुलिस के द्वारा कार्रवाई नहीं किया जाता है यह काफी निराशाजनक है। इस मौके पर उन्होंने थाना क्षेत्र के मनौरी से गायब नाबालिक बालिका की बरामदगी वा इसी थाना क्षेत्र के परई गांव स्थित एक अस्पताल संचालक द्वारा अनुसूचित जाति की महिला के साथ अभद्रता के मामले में रिपोर्ट दर्ज करने की मांग उठाई। इस मौके पर संगठन के लोगों ने आवाज उठाते हुए कहा कि यदि 24 घंटे के अंदर दोनों मामलों में संतोष जनक कार्रवाई नहीं की गई तो संगठन को आगे प्रदर्शन करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। जिसकी पूरी जिम्मेदारी जिले की पुलिस प्रशासन की होगी। इस मौके पर प्रमुख रूप से चंचल सोनी, शिवम पांडे, दीपक मौर्य, रजत पाण्डेय, सर्वेश पटेल सहित सैकड़ो की संख्या में हिंदूवादी लोग मौजूद हैं।

टैबलेट को सक्रिय करने हेतु सिम कार्ड उपलब्ध कराए जाने की मांग

चायल कौशाम्बी सरकार की व्यवस्था भी अजीबोगरीब होती है परिषदीय विद्यालयों में शिक्षकों को टैबलेट तो अधिकारियों ने उपलब्ध करा दिया लेकिन इस टैबलेट में सिम कार्ड की व्यवस्था सरकार की ओर से नहीं की गई है जिससे टैबलेट डिब्बा बनकर रह गया है टैबलेट देने के बाद ऑनलाइन सूचनाए देने का शिक्षकों पर दबाव बनाया जा रहा है सिम के अभाव में जो शिक्षक सूचना नहीं दे पाते हैं उनके वेतन रोकने की कार्रवाई अधिकारियों द्वारा की जाती है जिससे शिक्षकों में रोष व्याप्त है उत्तर प्रदेश प्राथमिक शिक्षक संघ चायल के पदाधिकारी ने खंड शिक्षा अधिकारी चायल के माध्यम से शिक्षा महानिदेशक को ज्ञापन भेज कर टैबलेट सक्रिय करने के लिए सिम कार्ड उपलब्ध कराए जाने की मांग की है। महानिदेशक शिक्षा को भेजे गए ज्ञापन के माध्यम से शिक्षकों ने कहा है कि बेसिक शिक्षा परिषद विद्यालयों को विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए टैबलेट के माध्यम से दोपहर भोजन और छात्र-छात्राओं की उपस्थिति ऑनलाइन

उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के पदाधिकारियों ने खंड शिक्षा अधिकारी के माध्यम से शिक्षा महानिदेशक को सौंपा ज्ञापन

भेजने का दबाव बनाया जा रहा है शिक्षकों के साथ अभद्र भाषा का प्रयोग किया जा रहा है सिम कार्ड के अभाव में सूचना न देने वाले शिक्षकों के वेतन रोकने की कार्रवाई अधिकारियों द्वारा की जा रही है परंतु टैबलेट को सक्रिय करने हेतु सरकारी सिम उपलब्ध नहीं कराया गया है अधिकारियों द्वारा शिक्षकों को अपने निजी संसाधन से सिम कार्ड खरीदने का दबाव बनाया जा रहा है जो नियमानुकूल नहीं है और शिक्षकों का उत्पीड़न है ज्ञापन के माध्यम से शिक्षको ने टैबलेट में सिम कार्ड उपलब्ध कराए जाने की मांग की है ज्ञापन देने वालों में रमेश सिंह अध्यक्ष, अजय सिंह कोषाध्यक्ष, सुखालाल चौधरी महामंत्री, सहित दर्जनों शिक्षक मौजूद रहे।

रिटायर्ड उप निरीक्षक के बंद पड़े घर में ताला काटकर लाखों उठा ले गए चोर

भरवारी कौशाम्बी कोखराज थाना क्षेत्र के शिशु मंदिर कालोनी भरवारी में रिटायर्ड उपनिरीक्षक के घर को चोरों ने निशाना बनाया और घर के अंदर से लाखों का सामान उठा ले गए हैं उप निरीक्षक रिश्तेदार के घर शादी कार्यक्रम में शामिल होने परिवार सहित मेरठ गए थे पड़ोसियों ने उन्हें मामले की सूचना फोन से दी है घर बंद कर दावत में जाने और बारिश का फायदा उठाते हुए सूने घर में एक के बाद एक लगातार पांच ताला को काट कर चोर घर के अंदर घुसे हैं अलमारी बक्सा बेड की तलाशी लेते हुए चांदी की करधनी सोने की अंगूठी कान का बाला चांदी की पायल और 11हजार रुपए नगद आदि सामान चोर उठा ले गए हैं भरवारी क्षेत्र में लगातार चोरी की घटनाएं हो रही है मामले का खुलासा नहीं हो रहा है जिससे लोग भयभीत बताए जाते हैं पुलिस ग्रस्त भी भरवारी क्षेत्र में कमजोर हो गई है जिसका फायदा चोर उठा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के भरवारी कस्बे में पुलिस विभाग से रिटायर्ड उप निरीक्षक जगजीवन राम अपनी रिश्तेदारी में शादी समारोह में शामिल होने के लिए मेरठ गए थे,और शनिवार की रात पड़ोस के घर से भी बारात गई हुई थी,मोहल्ले के कई लोगो के घर बंद थे,देर रात बारिश और सुनसान मोहल्ला देख चोर गेट का ताला काटकर अंदर घुस गए और घर की आलमारी पलंग आदि खंगाल ले गए।सुबह तड़के मोहल्ले के लोग बारात से वापस लौटे तो जगजीवन राम के घर के गेट का ताला खुला देखा तो हड़कंप मच गया,लोगो ने पड़ोसी जगजीवन राम और पुलिस को जानकारी दी,जानकारी मिलने के बाद डायल 112 और भरवारी चौकी पुलिस पहुंची और जांच की,लेकिन पीड़ित परिवार के नही होने पर चोरी की पूरी जानकारी नहीं हो पाई है मामले में पुलिस चौकी प्रभारी सत्य प्रकाश सिंह ने बताया कि चोरी की घटना हुई है,परिजन बाहर गए हुए है,अभी उनके घर पर पड़ोस के लोगो द्वारा दूसरा ताला लगवा दिया गया है,उनके आने और तहरीर मिलने के बाद आगे की विधिक कार्यवाई की जायेगी।

दावत खाने रिश्तेदारी में परिवार सहित उप निरीक्षक गए थे मेरठ

सर्वे कराकर अवशेष रह गये सभी पात्र लोगों को व्यक्तिगत शौचालय से लाभान्वित करने के निर्देश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी राजेश कुमार राय की अध्यक्षता में उदयन सभागार में स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अंतर्गत जिला स्वच्छता समिति की बैठक सम्पन्न हुई।बैठक में जिलाधिकारी ने वित्तीय वर्ष 2022-23 के अवशेष एवं वित्तीय वर्ष 2023-24 में प्राप्त धनराशि से कराये गए कार्यों की समीक्षा के दौरान जिला पंचायतराज अधिकारी को सर्वे कराकर अवशेष रह गये सभी पात्र लोगों को व्यक्तिगत शौचालय से लाभान्वित करने के निर्देश दिए। इसके साथ उन्होंने कहा कि लाभार्थियों द्वारा व्यक्तिगत शौचालय का उपयोग किया जा रहा है या नहीं, नियमित सत्यापन कराकर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने जिला पंचायतराज अधिकारी से कहा कि नियमित भ्रमण कर सुनिश्चित किया जाय कि माडल ग्राम के अन्तर्गत ग्राम पंचायत में किये जा रहें सभी गतिविधियाँ क्रियाशील रहें।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला स्वच्छता समिति की बैठक सम्पन्न

बैठक में जिला समन्वयक स्वच्छ भारत मिशन सुजीत शुक्ला ने बताया है कि भारत सरकार के पोर्टल पर प्राप्त आवेदनों में से 19405 व्यक्ति पात्र पायें गयें, जिनकी एम0आई0एस0 करा दी गयी है, जिसमें से 15541 लाभार्थियों की विभिनन चरणों में पी0एफ0एम0एस0 के माध्यम से प्रथम किश्त एवं 12227 लाभार्थियों को दोनों किश्त की धनराशि लाभार्थियों के खाते में अवमुक्त कर दी गयी है एवं अभी भी 7163 लाभार्थियों को प्रथम किश्त एवं 3304 लाभार्थियों की द्वितीय किश्त की धनराशि अवमुक्त किया जाना अवशेष है। उन्होंने कहा कि व्यक्तिगत शौचालयों की रेट्रोफिटिंग के अन्तर्गत पंचायत सहायको द्वारा अभियान में कुल चयनित 351944 लाभार्थियों के शौचालयां का सत्यापन कराया जाना था, जिसके सापेक्ष 301568 लाभार्थियों का सत्यापन किया जा चुका हे, अवशेष 50376 लाभार्थियों के शौचालायों का सत्यापन प्रक्रियाधीन है। उन्होंने कहा कि अब तक वित्तीय वर्ष-2022-23 में कुल 59 ग्राम पंचायत तथा वित्तीय वर्ष-2023-24 में कुल 52 ग्राम पंचायत मॉडल ग्राम हो चुकें है। बैठक में बताया गया कि गंगा एक्शन प्लान के तहत गंगा के किनारे अवस्थित 31 ग्राम पंचायतों को माडल घोषित किया जाना है, जिसमें 30 ग्राम पंचायतों के अन्तर्गत 41 ग्रामों को मॉडल ग्राम घोषित किया जा चुका है, अवशेष एक ग्राम में कार्य प्रारम्भ है,जिसे 31 मार्च, 2024 तक पूर्ण कराते हुये समस्त ग्रामों को मॉडल ग्राम घोषित कर दिया जायेंगा।बैठक में वित्तीय वर्ष 2022-23 के अवशेष एवं वित्तीय वर्ष 2023-24 में प्राप्त धनराशि से कराए गए कार्यों पर विचार-विमर्श, व्यक्तिगत शौचालय के निर्माण पर विचार-विमर्श, व्यक्तिगत शौचालयों की रेट्रोफिटिंग कराए जाने पर विचार-विमर्श,वित्तीय वर्ष 2023-24 में आईईसी/प्रचार-प्रचार मद में उपलब्ध धनराशि के व्यय पर विचार-विमर्श,वित्तीय वर्ष 2023-24 में प्रशासनिक मद में किए गए कार्य पर विचार-विमर्श,वित्तीय वर्ष 2022-23 के अंतर्गत 35 ग्राम पंचायत को मॉडल गांव घोषित किए जाने पर विचार- विमर्श,वित्तीय वर्ष-2023-24 के अन्तर्गत गंगा के किनारे अवस्थित 31 ग्राम पंचायतों को मॉडल ग्राम बनाये जाने पर विचार। वित्तीय वर्ष-2023-24 के अन्तर्गत 217 ग्राम पंचायतों के अन्तर्गत 294 ग्रामों को मॉडल ग्राम बनाये जाने पर विचार-विमर्श किया गया।इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकरी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी एवं जिला पंचायतराज अधिकारी रवि शंकर द्विवेदी सहित अन्य सम्बधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

संपादक की कलम से

राम युग से अमृतकाल तक भारतीय नारी

स्त्री सभी स्वरूप में भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुसार वन्दनीय, पूजनीय और अनुकरणीय मानी गई है। शास्त्रों में उल्लेखित सभी आधारों पर स्त्री के पूजन या सम्मान को सर्वोपरि रखा गया है, शक्ति स्वरूपा की आराधना को पर्वाधिराज के रूप में स्वीकार किया गया है। उसी स्त्री को दिए वचनों की अनुपालना के लिए राघवेंद्र को भी महल त्याग कर वन गमन करना ही पड़ा और असुरराज रावण के वध के कारक में भी स्त्री की भूमिका महनीय मानी जाती है। सृष्टि को राक्षसों के आतंक से मुक्त करने के लिए भी स्त्री को केन्द्र में रखकर रघुकुल नंदन ने रावण से युद्ध किया। चाहे सूर्पणखा हो, चाहे जनकनंदिनी सीता, चाहे मंदोदरी हो चाहे मंथरा, कैकेई हो या कौशल्या सभी स्त्रियों ने धरती को अनाचार के बढ़ते ताप से मुक्ति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राम के युग में स्त्रियों की स्वतंत्रता पर प्रश्नचिह्न लगाने वाले इस बात से अनभिज्ञ हैं कि उस काल में जितनी स्वतंत्र स्त्रियाँ रही हैं, शायद वर्तमान में भी उतनी स्वच्छंद नहीं। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि उस काल में मातृशक्ति को भी समान स्वच्छंदता प्राप्त थी, इस बात से अंदाजा लगाइए कि रानी कैकेई को दिए गए राजा दशरथ के वचनों का ही परिणाम था कि राम वनवास गए। उस काल में यदि स्त्री की स्थिति ऐसी होती कि वह बाहर नहीं निकल सकती थी तो रानी कैकई देवासुर संग्राम में राजा दशरथ की सहायता कैसे करतीं? और फिर राजा दशरथ उन्हें दो वर प्रदान क्यों करते? रामायण काल में स्त्रियों के कंधों पर उनके उत्तरदायित्वों को निभाने का कार्य था जिसे वे भलीभाँति किया करती थीं, ऐसा वाल्मीकि रामायण से ज्ञात होता है।

यह प्रकरण है, जब महाराज मनु द्वारा स्थापित अयोध्या नगरी का वर्णन करते हुए वाल्मीकि लिखते हैं कि-

"वधू नाटक सन्घैः च संयुक्ताम् सर्वतः पुरीम् ।
उद्यान आम्र वणोपेताम् महतीम् साल मेखलाम्।"

यानी उस नगरी में ऐसी कई नाट्य मंडलियाँ थीं, जिनमें मात्र स्त्रियाँ ही नृत्य एवं अभिनय करती थीं और सर्वत्र जगहझजगह उद्यान थे तथा आम के बाग नगरी के शोभा बढ़ा रहे थे। नगर के चारों ओर साखुओं के लम्बेझलम्बे वृक्ष लगे हुए ऐसे जान पड़ते थे मानो अयोध्या रूपिणी स्त्री करधनी पहने हो अर्थात अयोध्या नगरी में स्त्रियों की नाट्य समितियाँ थीं, मतलब साफ है कि उस काल में स्त्रियों के पास यह स्वतंत्रता थी कि वह अभिनय आदि क्षेत्रों में कार्य कर सकें।

भारत की समृद्ध सनातन परंपराओं में स्त्री सदा से ही पूजनीय मानी गई है, और यही कारण है कि हमारे देश में प्रथम दृष्टया स्त्री को मातृरूपेण ही माना गया।

वाल्मीकि जी रामायण में बालकाण्ड के षष्ठम सर्ग में लिखते हैं कि-

"कामी वा न कदर्यो वा नृशंसः पुरुषः क्वचित ।
द्रष्टुम शक्यम् अयोध्यायाम् न अविद्वान् न च नास्तिकः।"

यानी अयोध्या ऐसी नगरी है जहाँ पर कोई भी पुरुष कामी, कृपण, क्रूर, मूर्ख एवं नास्तिक नहीं था। अर्थात अयोध्या की हर स्त्री हर उस अत्याचार से मुक्त थी। स्त्रियों का आदर इसीलिए था क्योंकि पुरुषों ने उन संस्कारों का निर्वहन किया, जो उन स्त्रियों ने उन्हें प्रदान किए थे। इसी तरह जब उस युग की तुलना में वर्तमान का भारत देखें तो यह समन्वयशील भारत भी उसी राघव के राज्य के अनुशासन का परिणाम है।

अब बात रामझयुग के संस्कारों से अमृतकाल के भारत की करें तो हम भारत के शीर्षस्थ पदों पर महिलाओं का नेतृत्व देख रहे हैं। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू मातृशक्ति के रूप में सर्वोच्च पद पर है, वहीं वर्तमान में नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्रित्वकाल में केन्द्र में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति जुबिन ईरानी, ग्रामीण विकास मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति, वाणिज?य एवं उद्योग मंत्री अनुप्रिया सिंह पटेल, कृषि एवं किसान कल?याण मंत्री शोभा कारान्दलाजे, कपड़ा मंत्री दर्शना विक्रम जरदोश, संस्कृति राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी, शिक्षा मंत्री अन्नपूर्णा देवी, सामाजिक न?याय एवं अधिकारिता मंत्री प्रतिमा भौमिक और जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. भारती प्रवीण पवार है यानी कि कुल 10 केन्द्रीय मंत्री महिला हैं।

देश के कई राजनैतिक दलों में अहम भूमिका में मातृशक्ति का नेतृत्व स्वीकार किया जा रहा है जैसे कांग्रेस में सोनिया गांधी, सर्वभारतीय तृणमूल कांग्रेस में ममता बनर्जी, बसपा में मायावती, पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की नेता महबूबा मुफ़्ती, राष्ट्रीय जनता दल में राबड़ी देवी आदि इस समय अपने राजनैतिक दलों का नेतृत्व कर रही हैं। कॉरपोरेट में भी कई भारतीय कंपनियों के शीर्ष नेतृत्व में महिलाओं का दखल बराबर है। भारतीय कंपनियों के बोर्ड रूम में महिलाओं की क?या स?थि?ति है, इसको लेकर ईवाय रिपोर्ट जारी हुई, रिपोर्ट कहती है, भारतीय कंपनियों के बोर्ड में महिलाओं की स्थिति में 5 फीसदी का सुधार हुआ है। 2013 में बोर्ड में उनकी मौजूदगी 6 फीसदी थी जो 2017 में बढ़कर 13 फीसदी हुई। वहीं, 2022 में इसमें सुधार हुआ और आँकड़ा 13 फीसदी तक पहुँच गया। वैश्विक परिपेक्ष में आईबीएम की सीईओ गिन्नी रोमेटी से लेकर ओरेकल की सीईओ सफ़्रा कैटज तक, महिलाएँ व्यवसाय में ऐसा प्रभाव डाल रही हैं जैसा पहले कभी नहीं हुआ। प्रतिभाशाली और सक्षम महिलाओं को शीर्ष पर पहुँचते और भावी पीढ़ियों के लिए उदाहरण स्थापित करते हुए देखना बहुत अच्छा लगता है।

शिव लोक कल्याणकारी हैं तो संकट विनाशक भी

-: ललित गर्ग :-

सम्पूर्ण ब्रह्मांड शिव के अंदर समाया हुआ है। जब कुछ नहीं था तब भी शिव थे जब कुछ न होगा तब भी शिव ही होंगे। शिव को महाकाल कहा जाता है, अर्थात समय। शिव अपने इस स्वरूप द्वारा पूर्ण सृष्टि का भरण-पोषण करते हैं। इसी स्वरूप द्वारा परमात्मा ने अपने ओज व उष्णता की शक्ति से सभी ग्रहों को एकत्रित कर रखा है। परमात्मा का यह स्वरूप अत्यंत ही कल्याणकारी माना जाता है क्योंकि पूर्ण सृष्टि का आधार इसी स्वरूप पर टिका हुआ है। भगवान शिव भोले भण्डारी है और जग का कल्याण करने वाले हैं। भगवान शिव आदिदेव है, देवों के देव है, महादेव हैं। सभी देवताओं में वे सर्वोच्च हैं, महानतम हैं, दुःखों को हरने वाले हैं। प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि का पर्व फाल्गुण मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है, जो शिवत्व का जन्म दिवस है। यह शिव से मिलन की रात्रि का सुअवसर है। इसी दिन निशीथ अर्धरात्रि में शिवलिंग का प्रादुर्भाव हुआ था। इसीलिये यह पुनीत पर्व सम्पूर्ण देश एवं दुनिया में उल्लास और उमंग के साथ मनाया जाता है। यह पर्व सांस्कृतिक एवं धार्मिक चेतना की ज्योति किरण है। इससे हमारी चेतना जाग्रत होती है, जीवन एवं जगत में प्रसन्नता, गति, संगति, सौहार्द, ऊर्जा, आत्मशुद्धि एवं नवप्रेरणा का प्रकाश परिव्याप्त होता है। यह पर्व जीवन के श्रेष्ठ एवं मंगलकारी व्रतों, संकल्पों तथा विचारों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

शिव सभी देवताओं में वे सर्वोच्च हैं, महानतम हैं, दुःखों को हरने वाले हैं। वे कल्याणकारी हैं तो संहारकर्ता भी हैं। सृष्टि के कल्याण हेतु जीर्ण-शीर्ण वस्तुओं का विनाश आवश्यक है। इस विनाश में ही निर्माण के बीज छुपे हुए हैं। इसलिये शिव संहारकर्ता के रूप में निर्माण एवं नव-जीवन के प्रेरक भी है। सृष्टि पर जब कभी कोई संकट पड़ा तो उसके समाधान के लिये वे सबसे आगे रहे। जब भी कोई संकट देवताओं एवं असुरों पर पड़ा तो उन्होंने शिव को ही याद किया और शिव ने उनकी रक्षा की। समुद्र-मंथन में देवता और राक्षस दोनों ही लगे हुए थे। सभी अमृत चाहते थे, अमृत मिला भी लेकिन उससे पहले हलाहल विष निकला जिसकी गर्मी, ताप एवं संकट ने सभी को व्याकुल कर दिया एवं संकट में डाल दिया, विष ऐसा की पूरी सृष्टि का नाश कर दें, प्रश्न था कौन ग्रहण करें इस विष को। भोलेनाथ को याद किया गया गया। वे उपस्थित हुए और इस विष को ग्रहण कर सृष्टि के सम्मुख उपस्थित संकट से रक्षा की। उन्होंने इस विष को कंठ तक ही रखा और वे नीलकंठ कहलाये। इसी प्रकार गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिये भोले बाबा ने ही सहयोग किया। क्योंकि गंगा के प्रचंड दबाव और प्रवाह को पृथ्वी कैसे सहन करें, इस समस्या के समाधान के लिये शिव ने अपनी जटाओं में गंगा को समाहित किया और फिर अनुकूल गति के साथ गंगा का प्रवाह उनकी जटाओं से हुआ। ऐसे अनेक सृष्टि से जुड़े संकट और उसके विकास से जुड़ी घटनाएं हैं जिनके लिये शिव ने अपनी शक्तियों, तप और साधना का प्रयोग करके दुनिया को नव-जीवन प्रदान किया। शिव का अर्थ ही कल्याण है, वही शंकर है, और वही रुद्र भी है। शंकर में शं का अर्थ कल्याण है और कर का अर्थ करने वाला। रुद्र में रु का अर्थ दुःख और द्र का अर्थ हरना- हटाना। इस प्रकार रुद्र का अर्थ हुआ, दुःख को दूर करने वाले अथवा कल्याण करने वाले।

शिवरात्रि का पर्व भी दुःखों को दूर करने एवं सुखों का सृजन करने का प्रेरक है। भोलेनाथ भाव के भूखे हैं, कोई भी उन्हें सच्ची श्रद्धा, आस्था और प्रेम के पुष्प अर्पित कर अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना कर सकता है। दिखावे, ढोंग एवं आडम्बर से मुक्त विद्वान-अनपढ़, धनी-निर्धन कोई भी अपनी सुविधा तथा सामर्थ्य से उनकी पूजा और अर्चना कर सकता है। शिव न काठ में रहता है, न पत्थर में, न मिट्टी की मूर्ति में, न मन्दिर की भव्यता में, वे तो भावों में निवास करते हैं।

शिवरात्रि का व्रत करने वाले इस लोक के समस्त भोगों को भोगकर अंत में शिवलोक में जाते हैं। शिवरात्रि की पूजा रात्रि के चारों प्रहर में करनी चाहिए। शिव को बिल्वपत्र, धतूरे के पुष्प तथा प्रसाद में भांग अति प्रिय हैं। लौकिक दृष्टि से दूध, दही, घी, शकर, शहद- इन पाँच अमृतों (पंचामृत) का पूजन में उपयोग करने का विधान है। महामृत्युंजय मंत्र शिव आराधना का महामंत्र है। शिवरात्रि वह समय है जो पारलौकिक, मानसिक एवं भौतिक तीनों प्रकार की व्यथाओं, संतापों, पाशों से मुक्त कर देता है। शिव की रात शरीर, मन और वाणी को विश्राम प्रदान करती है। शरीर, मन और आत्मा को ऐसी शान्ति प्रदान करती है जिससे शिव तत्व की प्राप्ति सम्भव हो पाती है। शिव और शक्ति का मिलन गतिशील ऊर्जा का अन्तर्जगत से एकात्म होना है। लौकिक जगत में लिंग का सामान्य अर्थ चिह्न होता है जिससे पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग की पहचान होती है। शिव लिंग लौकिक के परे है। इस कारण एक लिंगी है। आत्मा है। शिव संहारक हैं। वे पापों के संहारक हैं। शिव की गोद में पहुंचकर हर व्यक्ति भय-ताप से मुक्त हो जाता है।

भगवान शिव को रूद्र नाम से जाना जाता है रुद्र का अर्थ है रुत दूर करने वाला अर्थात दुखों को हरने वाला अतः भगवान शिव का स्वरूप कल्याण कारक है। शिव शक्ति के प्रतीक ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की निशीथ काल में हुआ था। शिव पुराण के अनुसार सृष्टि के आरंभ में ब्रह्मा ने इसी दिन रुद्र रूपी शिव को उत्पन्न किया था। शिव एवं हिमालय पुत्री पार्वती का विवाह भी इसी दिन हुआ था। अतः यह शिव एवं शक्ति के पूर्ण समरस होने की रात्रि भी है। वे सृष्टि के सर्जक हैं। वे मनुष्य जीवन के ही नहीं, सृष्टि के निमार्ता, पालनहार एवं पोषक हैं। उन्होंने मनुष्य जाति को नया जीवन दर्शन दिया। जीने की शैली सिखलाई। शिवरात्रि जागृति का पर्व है, जिसमें आत्मा का मंगलकारी शिव से मिलना होता है। यह आत्म स्वरूप को जानने की रात्रि है। स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार का दुर्लभ आध्यात्मिक अनुभव है। यह स्वयं के भीतर जाकर अथवा अंतश्चेतना की गहराइयों में उतरकर आत्म साक्षात्कार करने का प्रयोग है। यह आत्मयुद्ध की प्रेरणा है, क्योंकि स्वयं को जीत लेना ही जीवन की सच्ची जीत है, शिवत्व की प्राप्ति है। काल के इस क्षण की सार्थकता शिवमय हो जाने में है। शक्ति माया नहीं है, मिथ्या नहीं है, प्रपंच नहीं है। इसके विपरीत शक्ति सत्य है। जीव और जगत भी सत्य है। सभी तत्वतः सत्य हैं। सभी शिवमय हैं।

सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति एवं संहार के अधिपति शिव हैं। त्रिदेवों में भगवान शिव संहार के देवता माने गए हैं। शिव अनादि तथा सृष्टि प्रक्रिया के आदि स्रोत हैं और यह काल महाकाल ही ज्योतिषशास्त्र के आधार हैं। शिवरात्रि भोगवादी मनोवृत्ति के विरुद्ध एक प्रेरणा है, संयम की, त्याग की, भक्ति की, संतुलन की। सुविधाओं के बीच रहने वालों के लिये सोचने का अवसर है कि वे आवश्यक जरूरतों के साथ जीते हैं या जरूरतों से ज्यादा आवश्यकताओं की मांग करते हैं। इस शिवभक्ति एवं उपवास की यात्रा में हर व्यक्ति में अहंकार नहीं, बल्कि शिशुभाव जागता है। क्रोध नहीं, क्षमा शोभती है। कष्टों में मन का विचलन नहीं, सहने का धैर्य रहता है। यह तपस्या स्वयं के बदलाव की एक प्रक्रिया है। यह प्रदर्शन नहीं, आत्मा के अभ्युदय की प्रेरणा है। इसमें भौतिक परिणाम पाने की महत्वाकांक्षा नहीं, सभी चाहों का संन्यास है।

शिव ने संसार और संन्यास दोनों को जीया है। उन्होंने जीवन को नई और परिपूर्ण शैली दी। पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति की जीवन में आवश्यकता और उपयोगिता का प्रशिक्षण दिया। कला, साहित्य, शिल्प, मनोविज्ञान, विज्ञान, पराविज्ञान और शिक्षा के साथ साधना के मानक निश्चित किए। सबको काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष की पुरुषार्थ चतुष्टयी की सार्थकता सिखलाई। वे भारतीय जीवन-दर्शन के पुरोधा हैं। आज उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व सृष्टि के इतिहास का एक अमिट आलेख बन चुका है। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरणास्रोत है। लेकिन हम इतने भोले हैं कि अपने शंकर को नहीं समझ पाए, उनको समझना, जानना एवं आत्मसात करना हमारे लिये स्वाभिमान और आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला अनुभव सिद्ध हो सकता है। मानवीय जीवन के सभी आयाम शिव से ही पूर्णत्व को पाते हैं। प्रेषकः

(ललित गर्ग)
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार
ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट
25 आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92
फोनः 22727486, 9811051133

असुरक्षित आधी आबादी

झारखंड में ब्राजील की एक महिला पर्यटक के साथ हुए कथित तौर पर सामूहिक बलात्कार की घटना से पूरे देश का सिर शर्म से झुक जाना चाहिए। हालांकि मौजूदा माहौल को देखते हुए लगता नहीं कि बलात्कार के एक और मामले पर देश में बैठी सरकार और पूरा समाज यह विचार करेगा कि आखिर इस नैतिक पतन के कारण क्या हैं। फिलहाल इस गंभीर अपराध का विश्लेषण या तो अतिथि देवो भव के दायरे में किया जा रहा है, या फिर इसे झारखंड सरकार की अपराध को रोकने की नाकामी के तौर पर देखा जा रहा है। झारखंड में पिछले महीने ही हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी के बाद भाजपा ने सरकार पलटने की कोशिश की, लेकिन उसमें उसे नाकामी मिली और चंपाई सोरेन ने झामुमो और कांग्रेस की गठबंधन सरकार को बचा लिया। अब इस घटना के बाद भाजपा झारखंड की कानून व्यवस्था पर सवाल उठा रही है। साफ तौर पर बलात्कार जैसे गंभीर अपराध के राजनीतिकरण की यह बेहूदा कोशिश है।

भाजपा को सवाल उठाने ही हैं तो केवल अपने विरोधी दल की सरकार पर न उठाए, बल्कि पूरे समाज पर उठाए कि आखिर क्या वजह है कि भारत में किसी भी उम्र, जाति और धर्म की लड़कियां सुरक्षित नहीं हैं। देश की आधी आबादी खुलकर न जी पा रही है, न सांस ले पा रही है, तो क्या इसे सामान्य माना जा सकता है। हम चाहें मंगल पर झंडे गाड़ लें या चांद पर चहलकदमी कर आएं, अगर लड़कियों को धरती पर बेखौफ घूमने नहीं दे सकते, तो फिर विकास और गुरुता की सारी दलीलें बेकार हैं।

ब्राजील की जिस महिला के साथ सामूहिक बलात्कार का शर्मनाक कांड हुआ, वह जानकारी में इसलिए आ गया क्योंकि पीड़िता ने अपने पति के साथ मिलकर खुद इस घटना की जानकारी सोशल मीडिया के जरिए साझा की। यह दंपती मोटर साइकिल से विश्व भ्रमण पर निकला है और अब तक 1 लाख 70 हजार से ज्यादा किमी का सफर अपनी-अपनी मोटर साइकिलों से करते हुए झारखंड पहुंचा था। 66 देशों से गुजरते हुए ये लोग भारत पहुंचे थे और पिछले छह महीनों में अलग-अलग राज्यों से होते हुए झारखंड पहुंचे थे, भारत के बाद उन्हें नेपाल जाना था। झारखंड में सात लोगों ने इन पर तब हमला कर दिया, जब ये अपने शिविर में सो रहे थे। पीड़िता के मुताबिक अपराधियों ने इनके साथ मारपीट की, उनका कुछ सामान भी लूटा, लेकिन उनका असली मकसद बलात्कार करना था, जिसे चाकू की नोंक पर उन्होंने किया।

इस घटना की जानकारी उन्होंने स्थानीय पुलिस को दी, लेकिन भाषा की दिक्कत के कारण शुरूआती कार्रवाई में दिक्कत आई, बाद में गूगल ट्रांसलेशन की मदद से पीड़िता ने आपबीती बताई। झारखंड पुलिस ने उन्हें अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती किया है और अब तक चार आरोपियों को पकड़ा जा चुका है, जबकि तीन की तलाश बाकी है। इस घटना के बाद कई लोगों ने नाराजगी प्रकट करते हुए याद दिलाया कि हमारी संस्कृति अतिथि देवो भव की है। यह बिल्कुल सही है कि हमारी संस्कृति में अतिथि को देवता की तरह माना गया है। यहां यह भी याद किया जाना चाहिए कि हमारी संस्कृति में नारी को देवी का दर्जा भी दिया गया है। लेकिन संस्कृति की बातों और समाज के संस्कारों में अब जमीन-आसमान का अंतर दिख रहा है। यह पहली बार नहीं है जब किसी विदेशी महिला के साथ ऐसा व्यवहार हुआ है। अभी पिछले साल दिल्ली के पहाड़गंज इलाके में एक जापानी महिला के साथ 3 लड़कों ने जबरदस्ती होली खेली थी। इस घटना से परेशान होकर महिला भारत छोड़कर बांग्लादेश चली गई। 11 मार्च को उसने इस पूरी घटना के बारे में कई ट्वीट किए थे। इससे पहले मुंबई में एक दक्षिण कोरियाई महिला यू ट्यूबर जब रात को स्ट्रीमिंग कर रही थी, इसी दौरान दो युवकों ने उसके साथ छेड़खानी की थी, यह मामला भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसके बाद पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार किया था। मुंबई में ही एक अमेरिकी महिला के सामने अश्लील हरकत करने के आरोप में पुलिस ने एक टैक्सी ड्राइवर को गिरफ्तार किया था।

टिकट वितरण में 'अग्रो-अग्रो भाजपा'

@ राकेश अचल

लोकसभा चुनाव 2024 का आधिकारिक कार्यक्रम घोषित होने से पहले भाजपा ने 195 प्रत्याशियों की सूची घोषित कर दी। कांग्रेस हमेशा की तरह इस मामले में फिर पिछड़ गयी। कांग्रेस में निर्णय लेने की अपनी शैली है। अब आप कह सकते हैं 'अग्रो-अग्रो भाजपा'। भाजपा की हमेशा आगे बने रहने की ललक ही है जो कांग्रेस को लगातार सत्ता से दूर रखे हैं।

भाजपा की पहली सूची में मप्र के तमाम दिग्गजों को टिकट दे दिया गया और अनेक का टिकट काट भी दिया गया। ये कतर-ब्योंत कोई नयी बात नहीं है। ये न हो तो नये लोगो को मौका ही न मिले। लेकिन भाजपा ने पहली सूची में मप्र के कुछ ऐसे कार्यकताओं पर भी दांव लगाया है, जो किसी भी दृष्टि से जीतने लायक नहीं है।

मप्र में पिछले आम चुनाव में 29 में से 28 सीटें जीतीं थी, लेकिन पहली सूची से लगता है कि भाजपा इस बार मप्र के भरोसे नहीं है। या फिर भाजपा के पास ऐसा कोई जादू है जिसके बल पर किसी भी प्रत्याशी को जिताया जा सकता है। ग्वालियर - चंबल संभाग से ही शुरू करें तो मुरैना सीट से पूर्व विधायक शिवमंगल सिंह तोमर को प्रत्याशी बनाया गया है।

मुरैना से अब तक मप्र विधानसभा के नये अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर सांसद थे। पार्टी ने तोमर को संसद से विधानसभा चुनाव में इस्तेमाल कर लिया। शिवमंगल इन्हीं नरेन्द्र सिंह तोमर के समर्थक हैं। शिवमंगल की छवि नरेन्द्र सिंह तोमर के एजेंट जैसी है। पार्टी में उनका अपना कोई खास वजन नहीं है। कांग्रेस शिवमंगल को आसानी से पराजित कर सकती हैं, लेकिन यदि मुरैना में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी खुद चुनाव लड़ें तो बात अलग है। क्योंकि मुरैना -श्योपुर संसदीय क्षेत्र में आने वाले 8 विधानसभा क्षेत्रों में से आधे पर कांग्रेस का कब्जा है।

भाजपा के गढ़ ग्वालियर सीट पर वर्तमान सांसद विवेक नारायण शेजवलकर का टिकट काट कर हाल ही में विधानसभा चुनाव हारे पूर्व मंत्री भारत सिंह कुशवाहा को प्रत्याशी बनाया है। भारत सिंह भी पूर्व केंद्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर के समर्थक हैं। मिडिल पास हैं। वे शेजवलकर के मुकाबले बेहतर कैसे मान लिए गए, ये समझना मुश्किल है। कांग्रेस यदि यहां समझदारी से प्रत्याशी लाए तो पासा पलटा जा सकता है। यहां भी मोदी जी का चेहरा दांव पर लगा दिया गया है।

गुना सीट से पिछले चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में चुनाव हारे केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को टिकट दिया गया है। सिंधिया को हराने वाले भाजपा के वर्तमान सांसद केपी सिंह ही नहीं भाजपा के तमाम कार्यकर्ता भी अवाक हैं। जिन कार्यकताओं ने सिंधिया को हराया था उन्ही के कंधों पर अब सिंधिया को जिताने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। जाहिर है भाजपा अपने कार्यकताओं को बंधुआ समझती है।

आपको याद होगा कि भाजपा ने 2020 में कांग्रेस से भाजपा में आए ज्योतिरादित्य सिंधिया इस समय राज्य सभा के सदस्य हैं। उनके स्थान पर सिंधिया के बेटे या बुआ को भी चुनाव लड़ाकर जीत तय की जा सकती थी, लेकिन ऐसा नहीं किया गया।अब सिंधिया के बेटे को पांच साल और प्रतीक्षा करना होगी। इस चुनाव में सिंधियाशाही की अग्निपरीक्षा है। ज्योतिरादित्य सिंधिया को खुद भी जीतना है और बाकी की तीन सीटें भी जिताना है।

भाजपा के शीर्ष नेता चाहकर भी पूर्व मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान को मैदान से नहीं हटा सके । फग्गनसिंह कुलस्ते की जरूरत भाजपा को फिर पड़ी। भोपाल में स्थानीय कार्यकताओं की भावनाओं का सम्मान करते हुए पूर्व महापौर आलोक शर्मा को प्रत्याशी बनाना पड़ा। जाहिर है कि भाजपा नेतृत्व पर मिशन 400 का भारी दबाव है।

भाजपा को मप्र की सभी 29 सीटों पर विजय के लिए अब जादू ही करना होगा, अन्यथा खजुराहो सीट से भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा भी उलझ सकते हैं। कांग्रेस ने ये सीट समाजवादी पार्टी को दी है। दोनों मिलकर चुनौती तो दे ही सकते हैं। उन्हें भी मोदी नाम ही जिता सकता है।

मप्र की राजनीति की धुरी रहे शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल में अपने खास सिपहसालार आलोक शर्मा की लोकसभा में इंट्री सुनिश्चित करने का रास्ता बना दिया तो होशंगाबाद सीट से अपने समर्थक दर्शन सिंह चौधरी को भी टिकट दिला दिया। चौधरी इन दिनों भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष हैं और उनके ही समाज (किरार) के हैं। राजगढ़ सीट से सांसद रोडमल नागर को भी पुनः टिकट दिलाने में वे सफल रहे। नागर भी किरार समाज से आते हैं।

सागर से लता वानखेड़े को टिकट दिलाने में भी तोमर-शिवराज की जोड़ी की ही भूमिका रही है। खरगोन सांसद गजेंद्र सिंह के भारी विरोध के बाद भी दोनों नेताओं ने उन्हें फिर लोकसभा का टिकट दिलवा दिया। सतना से विधानसभा चुनाव में पराजय झेलने वाले गणेश सिंह के लिए भी शिवराज ने ही जोर लगाया।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा अपने समर्थक आशीष दुबे को जबलपुर, सीधी से राजेश मिश्रा, रतलाम से अनीता चौहान को टिकट दिलाने में सफल रहे। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के कोटे में उनके अपने टिकट के अलावा कुछ नहीं है। टिकट वितरण में सिंधिया को उनकी हैसियत दिखा दी गई। भले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें अपना दामाद कहा था लेकिन दामाद को उनके अपने टिकट के अलावा दिया कुछ नहीं। इसे कहते है 'भई गति सांप - छछूंदर केरी'।

विकास का लाभ वंचितों को भी मिले

- अंजन रॉय

अर्थव्यवस्था अपने दम पर है और कोई भी सरकार वास्तव में विकास पथ को काफी आगे नहीं बढ़ा सकती है। यह निश्चित रूप से इसे पटरी से उतार सकता है और खस्ताहाल अर्थव्यवस्था वाले देश के लिए अभिशाप ला सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि महत्वपूर्ण कारक सरकार के कृत्य और अकृत्य हैं जो अर्थव्यवस्था की दिशा निर्धारित करते हैं- अल्पावधि के साथ-साथ दीर्घावधि में भी।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने शुक्रवार को जारी सकल घरेलू उत्पाद में चौथी तिमाही में 8.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाकर अर्थशास्त्रियों, विशेषज्ञों और वित्तीय बाजारों को भ्रमित कर दिया है। इन जीडीपी आंकड़ों के जारी होने से अर्थशास्त्रियों और टिप्पणीकारों के बीच यह साबित करने के लिए एक-दूसरे को मात देने का दौर शुरू हो गया है कि वे सांख्यिकीय बाजीगरी और कमियां ढूंढने में कितने अच्छे हैं।

इस बार विस्तृत आंकड़ों ने लोगों को चौंका दिया है। आगामी संभावित विकास आंकड़े क्या हो सकते हैं, इस पर अर्थशास्त्री अपना अनुमान और आकलन देते हैं। यह एक स्थापित खेल बन गया है और समाचार पत्र से लेकर समाचार एजेंसियां और अन्य लोग विकास की संभावनाओं पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। यह अब एक मानक खेल है हुआ यह कि कोई भी अपने पूवार्नुमानों में वास्तविक आंकड़ों के करीब नहीं पहुंच सका। लगभग हर अनुमान 6 से 6.5प्रतिशत के बीच था। अब यह अनुमान से कहीं बहुत अधिक 8.4प्रतिशत हो गया है, जैसा कि एनएसओ ने दिखाया है। अब सवाल यह है कि आंकड़ों में इस अन्तर का समाधान कैसे किया जाये?

इससे सवाल उठता है कि एनएसओ की गणना कितनी सही है। यह चुनावी मौसम में सिर्फ एक सांख्यिकीय हेरफेर भी हो सकता है। आखिरकार, अगले दो महीनों में आम चुनाव होने वाले हैं और उस दौरान बढ़ती अर्थव्यवस्था सरकार के लिए सहायक साबित होगी। सरकार भारतीय अर्थव्यवस्था को उच्च विकास पथ पर ले जाने में अपनी सफलता का दावा कर सकती है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ रही है। विकास की गति है और यदि आप किसी बाजार में जाते हैं तो आप इसे अपने चारों ओर देख सकते हैं। दुकानें भरी हुई हैं और भीड़भाड़ है, लोग सामान खरीद रहे हैं, कुछ वर्गों के बीच खर्च करने की होड़ चल रही है। यदि आप मेट्रो ट्रेनों में यात्रा कर रहे हैं, तो आपको अच्छे कपड़े पहने हुए और अच्छे कपड़े पहनने वाले लोग मिलेंगे।

पुराने दिनों के विपरीत, आपको ऐसे बहुत से लोग नहीं मिलेंगे जो वास्तव में बुनियादी न्यूनतम से वंचित हैं। 'हैव-नॉट्स' का पुराना मुहावरा गायब हो गया है और अब टीवी सेटों सहित कोई आकर्षण नहीं रह गया है।

मामले की सच्चाई यह है कि अर्थव्यवस्था अपने दम पर है और कोई भी सरकार वास्तव में विकास पथ को काफी आगे नहीं बढ़ा सकती है। यह निश्चित रूप से इसे पटरी से उतार सकता है और खस्ताहाल अर्थव्यवस्था वाले देश के लिए अभिशाप ला सकता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि महत्वपूर्ण कारक सरकार के कृत्य और अकृत्य हैं जो अर्थव्यवस्था की दिशा निर्धारित करते हैं- अल्पावधि के साथ-साथ दीर्घावधि में भी।

दो उदाहरण लीजिये। वर्तमान सरकार द्वारा मुद्रा विमुद्रीकरण का अचानक लिया गया कदम अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा झटका था और इससे ऐसी स्थिति पैदा हो गयी जिसमें खिलाड़ियों का एक बड़ा हिस्सा बुरी तरह प्रभावित हुआ। अर्थव्यवस्था के कुछ हिस्से- मुख्य रूप से अनौपचारिक छोटे पैमाने के खिलाड़ी-रुक गये थे। वह अल्पावधि में था। बाद में अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ लेकिन बहुत कुछ नुकसान हुआ।

दूसरा उदाहरण- दीर्घकालिक नुकसान का-जो अधिक विवादास्पद है और कई लोग इससे इनकार करेंगे। भारत की पूर्व की संरक्षणवादी और अनेक निषेधों वाली अर्थव्यवस्था, जो आर्थिक प्रगति की ऊंचाइयों को सुरक्षित रखने के लिए थी, भी आपदा साबित हुई थी। दूरसंचार क्षेत्र को आरक्षित रखने से पूरा क्षेत्र प्रभावित हुआ। हम सभी को याद है- यानी, जो अब बूढ़े हो गये हैं- एकमात्र टेलीफोन कनेक्शन प्राप्त करना या उसके बाद कॉल करना कितना मुश्किल हुआ करता था।

उत्पीडन बन्द न होने पर शिक्षक देंगे धरना

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ दिनेश चंद्र शर्मा के आवाहन पर ब्लाक मऊ के ब्लॉक अध्यक्ष वीरभान सिंह की अगुवाई में ब्लाक के शिक्षकों ने खंड शिक्षा अधिकारी को समस्या निराकरण को ज्ञापन सौंपा।

सोमवार को बेसिक शिक्षा परिषदीय विद्यालय में दिये गये टैबलेट से विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों को मध्यान्ह भोजन सूचना ऑनलाइन भेजने का दबाव विभागीय अधिकारी कर रहे हैं। विभागीय अधिकारियों के शिक्षकों के साथ अमर्यादित बर्ताव कर रहे हैं। विभाग ने टैबलेट दिये हैं, जबकि टैबलेट को सक्रिय करने को सिम नही है। निरीक्षणकर्ता अधिकारियों ने शिक्षकों को

एबीएसए को ज्ञापन देते जाते शिक्षक।

व्यक्तिगत तौर पर सिम खरीदने का दबाव बनाया जा रहा है। नियमानुसार मानसिक व आर्थिक उत्पीड़न है। प्रमुख सचिव बेसिक व प्राथमिक शिक्षक संघ के प्रान्तीय प्रतिनिधि मंडल की 30 अक्टूबर व नवम्बर 2023 में हुई वार्ता में शिक्षकों की समस्याओं के निराकरण को समिति बनी थी। चार माह बाद भी समस्या का समाधान नही हो रहा।

शिक्षकों ने सौंपे ज्ञापन में मांग किया कि विभाग से दिये टैबलेट को सक्रिय करने को सिम दी जाये। शिक्षकों को राज्य कर्मचारियों की भांति कैलेंडर वर्ष में अवकाश, प्रत्येक माह द्वितीय शनिवार अवकाश आदि मंजूर किये जायें। शिक्षकों का उत्पीड़न बंद कर मांगों का न मानने पर बीएसए कार्यालय व शिक्षा निदेशालय में शिक्षक धरना देने को बाध्य होंगे। इस मौके पर ब्लॉक अध्यक्ष वीरभान सिंह, ब्लॉक मंत्री शारदेंदु शुक्ला, जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष आलोक गर्ग, जिला प्रवक्ता संकल्प पांडे, डॉ अखिलेश मिश्रा, दिलीप शुक्ला, गुलाब तिवारी, तबस्सुम बेगम, अजय भारतीय, दनुज सिंह, वेद प्रकाश सोनी, धर्मेंद्र सिंह खोहर, अच्युत तिवारी, इंद्रेश गौतम, सुशील पांडे, अजीत पांडे, हरिलाल साकेत, दिनेश कुमार कुशवाहा, सुशील कुमार विश्वकर्मा, राजकुमार केसरवानी व आलोक श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

हादसे में दम्पति की मौत, दामाद व नाती घायल

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। झांसी-मिर्जापुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक वाहन के बेकाबू होकर पलटने पर वाहन में सवार दम्पति की मौत हो गई। गाड़ी में बैठे अन्य लोग घायल हो गए।

ये हादसा सोमवार को सवेरे पांच बजे झांसी-मिर्जापुर राजमार्ग पर हुआ। बताया गया कि सोमवार को सवेरे पांच बजे प्रयागराज से मऊ के यमुना प्रसाद सपरिवार आ रहे थे। राजमार्ग के मऊ थाने के कटिया गांव के पास कार के सामने अचानक पशु आने से उसे बचाने के प्रयास में गाड़ी बेकाबू होकर पलट गई। गाड़ी में सवार मऊ गायत्रीनगर के यमुना प्रसाद (60) पुत्र छेदीलाल, मीना देवी (55) पत्नी यमुना प्रसाद की मौके पर मृत्यु हो गई। गाड़ी में बैठे यमुना प्रसाद के दामाद प्रदीप कुमार (30) पुत्र गुलाब चंद्र निवासी जोगिया शेखपुर व नाती मोहित (14) पुत्र

मृतक दम्पति की फाइल फोटो।

पुष्पेंद्र, नातिन वैष्णवी (11) पुत्री पुष्पेंद्र घायल हो गए। घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के बाद प्रयागराज रेफर किया। मौके पर पहुंची पुलिस ने दम्पति के शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा। मृतक के पुत्र पुष्पेंद्र व परिजनों का रो-रोकर हाल बेहाल है।

चार के कब्जे से बरामद हुई 109 क्वार्टर शराब

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में पुलिस ने चार लोगों के कब्जे से 109 क्वार्टर देशी शराब बरामद की है। सोमवार को चैकी प्रभारी सरैंया यदुवीर सिंह की टीम ने चुन्नू पुत्र नत्थू निवासी दुधवनियां थाना बहिलपुरवा के कब्जे से 18 क्वार्टर देशी शराब बरामद कर गिरफ्तार किया। पहाडी थाने के दरोगा सुरेश प्रताप सिंह ने श्यामलाल कहार पुत्र भैरव प्रसाद निवासी परसौंजा के कब्जे से 40 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया। पहाडी थाने के दरोगा परशुराम यादव ने रामलाल पुत्र कुटिया निवासी कलवारा खुर्द के कब्जे से 30 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया। इसी क्रम में पहाडी थाने के दरोगा सुरेश प्रताप सिंह ने रज्जन पुत्र रामकिशोर यादव निवासी बनवारीपुर मोड के कब्जे से 21 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया।

बुद्ध त्रिशरण पंचशील लागू करने वाले का होता कल्याण

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राष्ट्रीय बौद्ध चेतना संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष कैलाश बौद्ध ने पुरानी कोतवाली मैदान में पांचवां राष्ट्रीय बौद्ध महोत्सव वरिष्ठ शिक्षक उदयभान सिंह पटेल की अध्यक्षता में किया। बतौर मुख्य अतिथि प्रयागराज हाईकोर्ट के अधिवक्ता हृदयलाल मौर्य व गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय नोएडा के प्रो डा शिवकरण रविदास रहे।

रविवार को पुरानी कोतवाली के बाहर हुए कार्यक्रम में भारी संख्या में मौजूद बौद्ध धर्म के भंतेगण ने बुद्ध की त्रिशरण पंचशील ग्रहण कराई। बुद्ध के त्रिशरण पंचशील जो व्यक्ति जीवन में लागू कर लेता है, उसका कल्याण हो जाता है। संस्थान अध्यक्ष कैलाश बौद्ध ने कहा कि ये पांचवां बौद्ध महोत्सव है। इससे पहले बांदा, फतेहपुर, कौशाम्बी में हो चुका है। भारी तादाद में लोग बुद्ध के विचारों से

मान सिंह पटेल का स्वागत करते बौद्धिष्ठ।

जुड़ रहे हैं। जीडी इंटर कॉलेज प्रधानाचार्य रामसेवक प्रजापति ने कहा कि देश आज भी बुद्ध के विचारों पर है। बुद्ध के विचारों को सभी को अपनाना चाहिए। अश्वनी यादव फतेहपुर, प्रवक्ता लालमणि, प्रवक्ता वीपी निर्मल, प्रवक्ता आलोक बौद्ध, मुख्य संरक्षक मान सिंह पटेल, डा बद्री विशाल, प्रवक्ता सुनील सविता, प्रशासनिक अधिकारी उदयभान, डीके वर्मा, धनंजय पासी ने विचार व्यक्त किये। इस मौके पर मंटू देवी कोटार्य, रिंकू देवी, रामसिंह मौर्य, रामबाबू पटेल, अमित पटेल, डा दिनेश आर्टिस्ट, आरसी कोटार्य, महेश कबीर, संतोष बौद्ध, भंते धम्म सागर, भंते अशोक बोधि, शिवगोपाल कुशवाहा, अवधेश बक्सी समेत भारी तादाद में बौद्ध धर्म के संत व अनुयाई मौजूद रहे।

पुलिस ने दम्पति को किया एक, विवाद भूल गये घर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर सामाजिक रिश्तों को बचाने को जारी प्रयास में पुलिस कार्यालय परिवार परामर्श केन्द्र ने दम्पति के आपसी विवाद को समाप्त कराकर परिवार को टूटने से बचाया। सोमवार को कोतवाली कर्वी के तरौंहा की श्रीमती जुबीना बानो पत्नी मो लतीफ ने पति मो लतीफ व ससुरालीजनों के विरुद्ध गाली-गलौज, मारपीट व घर से निकाल देने बाबत पत्र पुलिस अधीक्षक को सौंपा था। एसपी ने पत्र निस्तारण को प्रभारी परिवार परामर्श केन्द्र भेजा था। केन्द्र प्रभारी श्रीमती गुड्डी देवी, महिला सिपाही शिवांगिनी श्रीवास्तव व महिला सिपाही अनामिका सिंह ने शिकायत को सुन-समझकर दूसरे पक्ष को पुलिस कार्यालय बुलाया। दोनों पक्षों को भविष्य में विवाद न करने व पारिवारिक कर्तव्यों का पालन करने की बात कही। आपसी सुलह होने पर दम्पति ने तालमेल से रहने का भरोसा दिया।

सपा सरकार की भांति किसानों को मिले मुआवजा: विधायक

विधायक ने सीएम व मुख्य सचिव को भेजा पत्र

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सपा के सदर विधायक अनिल प्रधान ने जिले में हुई भारी बारिश व ओला गिरने से फसलों को हुई क्षति का सर्वे कराकर तत्काल मुआवजा देने की सूबे के मुख्यमंत्री से मांग की है। मुख्य सचिव को भेजे पत्र में कहा कि जिले में बीते माह में तीन बार हुई ओलावृष्टि से क्षति का सर्वे नहीं हो सका है। मौसम ने फिर करवट लेकर कई जगहों पर तेज हवाओं के साथ बारिश से किसानों की हाडतोड़ मेहनत से उगाई फसल गेहूं, सरसों, चना, मसूर, अलसी, अरहर को नुकसान

सदर विधायक अनिल प्रधान।

पहुंचाया है। सोमवार को सदर विधायक अनिल प्रधान ने जिले में बारिश व ओला गिरने से कोई ऐसा गांव नहीं है, जहां किसानों की फसलों को क्षति नहीं पहुंची। पूरे जिले के किसान एक माह में कई बार ओला गिरने व बेमौसम बारिश से बर्बाद हो चुके हैं। दो व तीन मार्च को अलग-अलग जगहों पर तेज हवाओं के साथ बारिश व ओला गिरने से किसानों की कमर तोड़ दी है। इतनी तेज ओला गिरे हैं कि फसल समेत घरों को भी क्षति पहुंची है। डबल इंजन सरकार व खासतौर से प्रदेश सरकार से मांग किया कि प्रदेश का बजट पूरे देश के अन्य राज्यों की तुलना में कई गुना है। कम से कम किसानों की पूरी मदद की जाये, ताकि ओला व बेमौसम बारिश से तबाह किसान भुखमरी की कगार पर न पहुंचे। ऐसा न होने पर किसान कर्ज के बोझ से दब जायेगा। किसानों ने उन्हें बताया कि ओलावृष्टि से मटर, मसूर, सरसो की फसल बर्बाद हो गई है। 2012 से 2017 तक सपा सरकार में बारिश व ओला गिरने से नष्ट फसलों की क्षति पर किसानों को 18-18 हजार रूपये मुआवजा दिया गया था। उसी प्रकार से प्रभावित किसानों को वित्तीय मदद की जाये। विधायक ने कहा कि जिम्मेदार अधिकारियों से स्थलीय सत्यापन कराकर फसल क्षति का मुआवजा दिलाया जाये।

जलभराव-गड्ढे में गिरकर लोग होते घायल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कोतवाली कर्वी के वार्ड छह तुलसीनगर ज्ञान भारती इंटर कॉलेज के पीछे के बाबूलाल सोनी पुत्र स्व लक्ष्मी प्रसाद सोनी ने जिलाधिकारी को लिखे पत्र में कहा कि मुख्य सडक में जलभराव होने से गड्ढों में तब्दील हो गई है। स्ट्रीट लाइट न होने से लोगों को आवागमन में भारी परेशानी हो रही है। सोमवार को वार्ड छह तुलसीनगर ज्ञान भारती इंटर कालेज के पीछे के निवासी बाबूलाल सोनी पुत्र स्व लक्ष्मी प्रसाद सोनी ने जिलाधिकारी को लिखे पत्र में कहा कि उसके घर के ठीक सामने से गुजरने वाली मुख्य सडक कई महीने से गड्ढे में बदल गई है। नाली का गंदा पानी भरने से छात्र-छात्राओं व आमजनता को आवागमन में परेशानी होती है। मुख्य सडक से प्रतिदिन पांच से दस हजार लोग गुजरते हैं। सडक पर बिजली के खम्भे लगे हैं, लाइट नहीं जलती। रात के अंधेरे में गड्ढे में लोग वाहन लेकर गिर जाते हैं। जलभराव व बिजली न होने से बड़ा हादसा हो सकता है। जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों को समस्या समाधान की याचना कर चुका है। कोई समाधान नहीं हुआ।

अशोक पब्लिक स्कूल के निदेशक पर घर में घुसकर छेडखानी दर्ज

लखनऊ की शिक्षिका ने लिखाई रिपोर्ट

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। अशोक पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर आकाश गुप्ता पर कोतवाली कर्वी में पीडिता शिक्षिका ने गम्भीर धाराओं में मामला दर्ज कराया है। पीडिता ने कहा कि घर में घुसकर आकाश गुप्ता ने छेडखानी की घटना अंजाम दी है।

ये मामला कोतवाली कर्वी में सोमवार को दर्ज हुआ। बताया गया कि बिजनौर रोड लखनऊ की रहने वाली शिक्षिका ने कोतवाली कर्वी में दी तहरीर में कहा कि 17 मार्च 2023 को अशोक पब्लिक स्कूल में बतौर प्रधानाचार्य तैनात थी। स्कूल निदेशक आकाश गुप्ता उस पर बुरी नीयत रखता था। कई मौकों पर मानसिक-शारीरिक शोषण किया। आकाश गुप्ता ने तीस अप्रैल 2023 की शाम स्कूल परिसर स्थित घर में जबरियां घुसकर छेडखानी का प्रयास किया। उसका हाथ पकडकर बिस्तर पर धकेलने का प्रयास किया। उनके सख्ती से विरोध व चिल्लाने पर कमरे से भाग गया। घटना के बाद से उन्हें जान-बूझकर परेशान कर नाजायज दबाव डालने को आये दिन अकारण स्पष्टीकरण व वेतन कटौती करते रहे। अक्सर स्कूल कर्मचारियों के सामने बेईज्जत कर प्रताडित करते रहे। पूरे घटना की जानकारी आकाश गुप्ता के पिता/ विद्यालय प्रबंधक अशोक गुप्ता, काशी प्रसाद शुक्ला, मुस्कान गुप्ता को फोन व व्हाट्सअप से दी गई। प्रबंध तंत्र ने आकाश के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की। उसे और भी प्रताडित किया जाने लगा। बढती मानसिक-शारीरिक उत्पीडन से तंग आकर तीन जनवरी 2024 को त्याग पत्र दे दिया। पत्र के साथ लखनऊ चली आई। त्याग पत्र देने के बाद भी विद्यालय निदेशक व प्रबंधक ने शैक्षिक दस्तावेज व वेतन भुगतान नहीं किया। मांगने पर धमकी देते रहे। क्षुब्ध होकर पीडिता ने पुलिस कार्यवाही की है। पुलिस ने तहरीर के मुताबिक धारा 452, 354 व 506 के तहत मामला दर्ज कर लिया है। विवेचना दरोगा गौरव तिवारी को सौंपी है। मामला दर्ज होने से जाहिर हो गया कि अशोक पब्लिक स्कूल में शिक्षकों व शिक्षिकाओं के साथ उत्पीडन की घटनायें होती हैं। संकोच व दबाववश लोग नहीं कहते थे, अब लोगों में साहस आ गया है। जल्द ही अशोक पब्लिक स्कूल का और भी भंडाफोड हो तो कोई ताज्जुब नहीं है।

पहले भी दर्ज हुआ था मामला.....

अशोक पब्लिक स्कूल लम्बे समय से छात्राओं व शिक्षिकाओं के उत्पीडन का अड्डा रहा है। इस बात के सबूत 2008 में भी मिले हैं। यहां प्रशासनिक अधिकारी रहे-की पुत्री के साथ भी ऐसी ही कुछ गम्भीर किस्म की घटना हुई थी। मामले में रिपोर्ट होने के बाद भी प्रबंध तंत्र खुद को बचा ले गया था।

पुलिस गिरफ्त में जुआरी।

चार जुआरी जुआ खेलते दबोचे

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक पहाड़ी श्याम प्रताप पटेल की अगुवाई में दरोगा विपिन कुमार मिश्रा की टीम ने चार जुआरियों को रंगेहाथ जुआ खेलते दबोचा है। सोमवार को पहाडी थाने के विपिन कुमार मिश्रा की टीम ने कमल सिंह कुशवाहा पुत्र गजराज सिंह निवासी मंटा थाना बबेरु जिला बांदा, राजनारायण रैदास पुत्र राममूरत, राजकुमार रैदास पुत्र रिक्खी व गजेन्द्र सिंह पुत्र श्रीपाल सिंह निवासी सिकरी थाना पहाड़ी को ताश के पत्तों से हार-जीत की बाजी लगाकर जुआ खेलते गिरफ्तार किया। जुआरियों के कब्जे से मालफड़ से 1030 रुपये व ताश के 52 पत्ते तथा जामा तलाशी में 430 रुपये बरामद किये। जुआरियों का जुआ अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में दरोगा विपिन कुमार मिश्रा, सिपाही विनोद कुमार, मृत्युन्जय व सचिन कुमार शामिल रहे।

किसानों की नष्ट फसलों का जल्द दें मुआवजा: पूर्व सांसद

पूर्व सांसद ने सीएम व डीएम को लिखा पत्र

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। ताकत अपने शब्दों में डालो आवाज में नहीं, क्योंकि फसल बारिश से उगती है बाढ से नहीं- कुछ इस अंदाज में पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र ने सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व जिलाधिकारी को भेजे पत्र में कहा कि बांदा-चित्रकूट के किसानों की अतिवृष्टि व ओला गिरने से नष्ट हुई फसलों की क्षति का आंकलन कर मुआवजा दिया जाये। सोमवार को पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र ने सूबे के मुख्यमंत्री व बांदा-चित्रकूट के जिलाधिकारी को भेजे पत्र में कहा कि बीते एक माह में कई बार ओलावृष्टि व बारिश

पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र।

हो चुकी है। किसानों की फसलों को भारी क्षति पहुंची है। ज्यादातर किसानों ने बीमा नहीं कराया। ऐसे किसानों का सर्वे ब्लाक व तहसीलवार लेखपाल कम क्षति दिखा रहे हैं। जबकि खेतों में सौ फीसदी क्षति हुई है। कई स्थानों पर ओलावृष्टि व बारिश से साठ फीसदी से लेकर सौ फीसदी तक फसलें नष्ट हुई हैं। किसान हताश व मायूस है।

उन्होंने सूबे के मुख्यमंत्री से मांग किया कि अधिकारियों को निर्देश दें कि खेतों में फसलों की हुई क्षति का सही आंकलन कर सरकारी अनुदान जल्द किसानों को दिया जाये तथा बीमा की धनराशि बीमा कम्पनियों को जल्द देने के निर्देश भी दिये जायें। पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र ने जिलाधिकारी चित्रकूट व जिलाधिकारी बांदा को लिखे पत्र में कहा कि पिछले एक माह में बारिश व ओला गिरने से किसानों को भारी नुकसान पहुंचा है। क्षेत्र भ्रमण में देखा कि ओला-बारिश से कहीं-कहीं सौ फीसदी तो कहीं 80 फीसदी फसलें नष्ट हुई हैं। फसलों की वास्तविक दशा का आंकलन कराकर खेत के हिसाब से स्वीकृत अनुदान किसानों को जल्द दिया जाये।

पुलिस ने दबोचे दो वारंटी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरूण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में पुलिस ने दो वारंटी दबोचे हैं। सोमवार को पहाडी थाने के दरोगा परशुराम यादव ने सिपाही आनन्द प्रताप सिंह के साथ आबकारी अधिनियम के वारंटी वीर कुमार पुत्र कल्लू राम निवासी बछरन को गिरफ्तार किया। कोतवाली कर्वी के दरोगा गौरव तिवारी ने सिपाही आकाश पटेल के साथ विद्युत अधिनियम के वारंटी बुआराम पुत्र रामसजीवन निवासी मरजादपुर कोलगदहिया को गिरफ्तार किया।

एनडीपीएस आरोपी को हुई एक वर्ष की सजा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। न्यायालय में लम्बित वादों में गहन पैरवी कर अपराधियों को सजा दिलाने को पुलिस अधीक्षक अरूण कुमार सिंह के निर्देशों के अनुपालन में प्रभारी राजापुर मनोज कुमार व पैरोकार आकाश कुमार की पैरवी से न्यायालय ने एनडीपीएस आरोपी को एक वर्ष की सजा व पांच हजार रुपये के जुर्माना से दंडित किया। सोमवार को सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता सनद कुमार मिश्रा की प्रभावी बहस के चलते न्यायालय अपर जनपद न्यायधीश/एफटीसी (न्यू) सुशील कुमार वर्मा ने राजापुर थाने में दर्ज एनडीपीएस एक्ट के आरोपी छोटा पुत्र चैबा निवासी तीरधुमाईगंगू को एक वर्ष की सजा व पांच हजार रूपये के जुर्माना से दंडित किया। ज्ञात है कि 17 मई 2022 को वरिष्ठ दरोगा योगेश तिवारी की टीम ने छोटा को डेढ किलो गांजा समेत गिरफ्तार किया था। उस पर थाने में एनडीपीएस एक्ट दर्जकर विवेचना दरोगा प्रभाकर उपाध्याय ने कर आरोपी के खिलाफ न्यायालय में 16 जून 2022 को आरोप पत्र दाखिल किया था।

गांवों में भ्रमण करती पुलिस।

निर्भीक होकर करें मतदान: सीओ राजापुर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर लोकसभा चुनाव को शान्तिपूर्ण व भयमुक्त सम्पन्न कराने को सीओ राजापुर श्रीमती निष्ठा उपाध्याय की देखरेख व प्रभारी निरीक्षक राजापुर मनोज कुमार की अगुवाई में एसएसबी फोर्स के जवानों ने थाना क्षेत्र के विभिन्न गांवों में भ्रमण कर मतदान केन्द्रों का जायजा लिया।सोमवार को सीओ श्रीमती निष्ठा उपाध्याय की देखरेख में थानाध्यक्ष मनोज कुमार के साथ पुलिस बल ने कनकोटा, रायपुर, कस्बा राजापुर, महुवा, खटवारा, मलवारा, सगवारा गांव के मतदान केन्द्रों में भ्रमण कर मतदान केन्द्रों को देखा। आम जनता को भरोसा दिया कि शत-प्रतिशत लोग मतदान करें। मतदान करने में कोई दबंग भयभीत करे तो तत्काल पुलिस को जानकारी दें। निर्भीक होकर मतदान करें। किसी के दबाव व लालच में न आयें।

कृषि 2047 तक देश को 'विकसित भारत' बनाने में अग्रणी भूमिका निभाएगी: पीयूष गोयल

नई दिल्ली। केंद्रीय उपभोक्ता मामले के मंत्री पीयूष गोयल ने सोमवार को कहा कि कृषि क्षेत्र 2047 तक राष्ट्र को 'विकसित भारत' बनाने की दिशा में आधार स्तंभ होगा। वह नई दिल्ली में वेयर हाउसिंग डेवलपमेंट एंड रेगुलेटरी अथॉरिटी (डब्ल्यूडीआरए) के ई-किसान उपज निधि' (डिजिटल गेटवे) के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे।

गोयल ने लाखों भारतीयों के जीवन को सुरक्षित करने के लिए किसानों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि 'ई-किसान उपज निधि' पहल के साथ प्रौद्योगिकी की सहायता से किसानों की भंडारण व्यवस्था सुगम हो जाएगी और किसानों को उनकी उपज के लिए उचित मूल्य प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

इस अवसर पर उन्होंने घोषणा की कि ज्यादा किसानों, विशेषकर छोटे किसानों को जमा शुल्क जल्द ही कम किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इन गोदामों में किसानों को पहले अपनी उपज का भंडारण करने के लिए 3 फीसदी सुरक्षा जमा राशि का भुगतान करना पड़ता था, अब केवल एक फीसदी सुरक्षा जमा राशि के भुगतान करने की जरूरत होगी।

गोयल ने कहा, "डिजिटल गेटवे पहल खेती को आकर्षक बनाने के हमारे प्रयास में एक महत्वपूर्ण कदम है।" उन्होंने कहा कि बिना किसी संपत्ति को गिरवी रखे, अतिरिक्त सुरक्षा जमा नीति, 'ई-किसान उपज निधि' किसानों द्वारा संकट के समय में उनकी उपज बिक्री को रोक सकती है, जिन्हें फसल के बाद भंडारण की अच्छी रखरखाव सुविधाओं के न होने के कारण अक्सर अपनी पूरी फसल को सस्ती दरों पर बेचना पड़ता है।

उन्होंने कहा कि डब्लूडीआरए के तहत गोदामों की अच्छी तरह से निगरानी की जाती है, इनकी स्थिति बहुत अच्छी है। ये बुनियादी ढांचे से सुसज्जित हैं, जो कृषि उपज को अच्छी हालत में रखते हैं तथा खराब नहीं होने देते और इस तरह ये किसानों के कल्याण को बढ़ावा देते हैं। गोयल ने डब्ल्यूडीआरए के तहत राज्यों में भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) द्वारा उपयोग किए जाने वाले गोदामों के अनिवार्य पंजीकरण और राज्यों के गोदामों से संबंधित बुनियादी ढांचे को पूरी तरह से तैयार रखने के लिए एक रोडमैप तैयार करने पर बल दिया।

गोदामों का उपयोग करने और उनकी आय बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए डब्ल्यूडीआरए पंजीकृत गोदामों पर सुरक्षा

गाजा में युद्धविराम के लिए काहिरा में इजराइल के बिना शुरू हुई वार्ता

काहिरा। गाजा में जारी इजराइली हमले को रोकने के लिए मिस्र की राजधानी काहिरा में एक वार्ता शुरू हो गई है। हालांकि इस वार्ता में इजराइल शामिल नहीं है। हमास के साथ इस वार्ता में मध्यस्थ मिस्र, कतर, अमेरिका के अधिकारी शामिल हैं। इजराइल ने बंधकों के नामों की सूची नहीं मिलने के कारण वार्ता से दूर रहने का फैसला किया है। लेकिन मध्यस्थ वार्ता की प्रगति से इजराइल को अवगत करा रहे हैं।

इस बीच, अमेरिका की उप राष्ट्रपति कमला हैरिस ने गाजा में छह हफ्ते का अविलंब युद्धविराम लागू किए जाने की आवश्यकता जताई है। उन्होंने कहा कि वहां पर आमजनों का बुरा हाल हाल है और वे अमानवीय स्थितियों में रह रहे हैं।

फलस्तीनी सूत्रों के अनुसार युद्धविराम को लेकर दोनों पक्षों में मतभेद बना हुआ है। इजराइल केवल बंधकों की रिहाई के लिए सीमित युद्धविराम चाहता है, यह युद्धविराम छह हफ्ते का हो सकता है, जबकि हमास गाजा में स्थायी युद्धविराम चाहता है जिसके लिए इजरायल तैयार नहीं है

अमेरिका की उप राष्ट्रपति ने कहा है कि गाजा के कई इलाकों में भुखमरी की स्थिति है, इसलिए वहां राहत सामग्री की समुचित आपूर्ति सुनिश्चित होनी चाहिए। इसमें इजराइल की कोई बहानेबाजी नहीं चलेगी। इजराइल की नेतन्याहू सरकार को कड़ा संदेश देते हुए बाइडन प्रशासन ने विपक्ष के नेता एवं इजरायल की वार कैबिनेट के सदस्य बेनी गेंट्ज का स्वागत किया। गेंट्ज प्रधानमंत्री नेतन्याहू के साथ मतभेदों के बाद घनिष्ठ सहयोगी देश अमेरिका के नेताओं से मिलने के लिए वाशिंगटन गए हैं। इस बीच रफाह और गाजा के अन्य इलाकों में इजराइली हमले जारी हैं। इन हमलों में बड़ी संख्या में लोगों के मारे जाने की सूचना है।

अमेरिकी उच्चतम न्यायालय ने ट्रंप को कैपिटल दंगों के लिए जवाबदेह ठहराने के प्रयासों को खारिज किया

वाशिंगटन। अमेरिका के कैपिटल (संसद परिसर) दंगे के लिए पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को जवाबदेह ठहराने संबंधी प्रयासों को उच्चतम न्यायालय ने खारिज कर दिया। इसके बाद अब ट्रंप का नाम प्राथमिक मतपत्र पर दिखाई देगा। अदालत ने ट्रंप को कोलोराडो के रिपब्लिकन प्राथमिक मतदान से अयोग्य घोषित कर दिया था। उच्चतम न्यायालय ने सुपर मंगलवार प्राइमरी से एक दिन पहले यह फैसला सुनाया।

न्यायाधीश ने सर्वसम्मति से निचली अदालत के उस फैसले को पलट दिया कि ट्रंप को छह जनवरी, 2021, कैपिटल दंगा मामले में उनकी कथित भूमिका के कारण 14 वें संशोधन के तहत सार्वजनिक पद धारण करने से अयोग्य घोषित कर दिया गया था।

कोलोराडो के सर्वोच्च न्यायालय ने अपनी तरह के पहले फैसले में कहा था कि प्रावधान, धारा 3, ट्रंप पर लागू की जा सकती है। इससे पहले किसी भी अदालत ने राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार पर धारा 3 लागू नहीं की थी। कोलोराडो, मेन और इलिनोइस में ट्रंप का नाम मतपत्रों से बाहर कर दिया गया था, लेकिन तीनों फैसलों पर उच्चतम न्यायालय का फैसला आना था। ट्रंप के वकीलों ने दलील दी कि छह जनवरी का दंगा विद्रोह नहीं था और अगर ऐसा था भी, तो ट्रंप दंगाइयों में शामिल नहीं हुए थे।

देश में 29 फरवरी तक हुआ 255.38 लाख टन चीनी का उत्पादन, 3.1 लाख टन की गिरावट

नई दिल्ली। देश में चालू चीनी विपणन सत्र 2023-24 में 29 फरवरी तक चीनी का उत्पादन 255.38 लाख टन रहा है। इससे पिछले चीनी विपणन वर्ष में इस अवधि के दौरान 258.48 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था। सालाना आधार पर इसमें 3.1 लाख टन की गिरावट आई है। चीनी मिलों के संगठन इंडियन शुगर मिल एसोसिएशन (इस्मा) ने सोमवार को जारी एक बयान में बताया कि चीनी विपणन सत्र 2023-24 में 29 फरवरी तक 255.38 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ है। इससे पिछले चीनी विपणन वर्ष 2022-23 की समान अवधि में 258.48 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था। इस्मा के मुताबिक पिछले चीनी विपणन की तुलना में अभी तक 3.1 लाख टन कम चीनी का उत्पादन हुआ है। इस्मा के मुताबिक चालू चीनी विपणन वर्ष में 29 फरवरी तक चालू चीनी मिलों की संख्या 466 थी, जबकि पिछले चीनी सीजन के दौरान इसी तारीख (28 फरवरी, 2023) तक 447 चीनी मिलें संचालित थीं। उद्योग निकाय इस्मा के मुताबिक चालू सीजन में महाराष्ट्र और कर्नाटक में चीनी मिलों के बंद होने की दर पिछले सीजन की तुलना में धीमी है। इस साल अब तक इन दोनों राज्यों में कुल 49 फैक्ट्रियां बंद हो चुकी हैं, जबकि पिछले साल समान तारीख को 74 फैक्ट्रियां बंद हो चुकी थीं।इंडियन शुगर मिल एसोसिएशन के मुताबिक कुल मिलाकर, 29 फरवरी के अंत तक देशभर में 65 चीनी मीलों ने अपना पेराई का कार्य बंद कर दिया है, जबकि पिछले साल की समान अवधि के दौरान 86 चीनी मिलें बंद हो चुकी थीं। इस्मा के मुताबिक राज्यों में चालू चीनी विपणन वर्ष में चीनी उत्पादन में महाराष्ट्र सबसे अव्वल है। उसके बाद उत्तर प्रदेश दूसरे नंबर पर है। महाराष्ट्र में अबतक 90.92 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ है, उत्तर प्रदेश में अबतक 78.16 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

रूस-यूक्रेन के बीच शांति के लिए मेदवेदेव ने जेलेंस्की से वार्ता करने से किया इनकार

मास्को। रूस-यूक्रेन के बीच पिछले 2 साल से जारी युद्ध के बीच शांति वार्ता के लिए राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के सहयोगी और रूसी सुरक्षा परिषद के उपाध्यक्ष दिमित्री मेदवेदेव ने सोमवार को मौजूदा यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की के साथ शांति वार्ता से इनकार कर दिया। मेदवेदेव ने यह भी कहा कि यूक्रेन रूस का हिस्सा है।

दक्षिणी रूस में मेदवेदेव ने कहा कि रूस अपना विशेष सैन्य अभियान जारी रखेगा, जब तक कि दूसरा पक्ष आत्मसमर्पण नहीं कर देता। मेदवेदेव ने कहा कि यूक्रेन के पूर्व नेताओं में से एक ने कहा था कि यूक्रेन रूस नहीं है। उस अवधारणा को हमेशा के लिए खत्म कर देना चाहिए। यूक्रेन निश्चित रूप से रूस है। उन्होंने राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के नेतृत्व वाले वर्तमान यूक्रेनी नेतृत्व के साथ शांति वार्ता से इन्कार कर दिया। पूर्व-पश्चिम संबंधों पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि मास्को और वाशिंगटन के बीच संबंध 1962 के क्यूबा मिसाइल संकट से भी बदतर है।

क्रेमलिन ने सोमवार को कहा कि जर्मन सैन्य चचाओं की कथित रिकार्डिंग से पता चलता है कि जर्मनी के सशस्त्र बल रूसी क्षेत्र पर हमले की योजना पर चर्चा कर रहे थे। उन्होंने सवाल किया कि क्या चांसलर ओलाफ स्कोल्ज का स्थिति पर नियंत्रण है। इसे लेकर रूस ने सोमवार को जर्मनी के राजदूत को तलब किया। दरअसल, इंटरनेट मीडिया पर लीक 38 मिनट की रिकार्डिंग में सैन्य अधिकारी यह चर्चा कर रहे हैं कि कैसे लंबी दूरी की क्रूज मिसाइल टारस का इस्तेमाल कीव द्वारा रूसी सेनाओं के खिलाफ किया जा सकता है। जर्मनी की वायु सेना के प्रमुख इंगो गेरहार्ट्ज सहित चार अधिकारियों को टारस तैनाती पर चर्चा करते सुना जा सकता है। इसमें कहा गया है कि टारस की शीघ्र डिलीवरी और तेजी से तैनाती केवल जर्मन सैनिकों की मदद से संभव है। इससे यह भी पता चलता है कि जर्मन सरकार ने यूक्रेन द्वारा मांगी गई क्रूज मिसाइलों की डिलीवरी के लिए सहमति नहीं दी है। वहीं, जर्मन अधिकारियों ने कहा कि वे रिकार्डिंग की जांच कर रहे हैं। यह भी जांच कर रहे हैं कि कैसे संभव है कि शीर्ष जर्मन सैन्यकर्मियों की बातचीत को रूसियों द्वारा सुना और लीक किया जा सकता है।

रूस के समारा शहर के पास एक रेलवे पुल पर धमाका हुआ। रूस के दक्षिण-पश्चिम में वोल्गा नदी पर स्थित समारा क्षेत्र देश के औद्योगिक केंद्रों में से एक है। रूस ने हाल के महीनों में अपने औद्योगिक और बुनियादी ढांचे पर हमलों की एक श्रृंखला की सूचना दी है, जिसके लिए उसने यूक्रेन को जिम्मेदार ठहराया है। किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है, लेकिन रेलवे परिचालन पर असर पड़ा है।

वित्त मंत्री ने किया जीएसटी प्रवर्तन प्रमुखों के सम्मेलन का उद्घाटन

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को यहां वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) प्रवर्तन प्रमुखों के सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस सम्मेलन में कर चोरी रोकने के उपायों पर चर्चा हुई।

वित्त मंत्रालय ने ह्यएक्सह्ल पोस्ट पर जारी बयान में बताया कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने यहां एक दिवसीय जीएसटी प्रवर्तन प्रमुखों के सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस सम्मेलन में कर चोरी रोकने के उपायों पर चर्चा हुई। इसके साथ ही सुचारु व्यापार वातावरण बनाने और निवारक प्रवर्तन उपायों को लागू करने के बीच संतुलन पर भी चर्चा की गई। इसके अलावा इस सम्मेलन में कारोबार सुगमता को भी संतुलित करने पर चर्चा हुई। जीएसटी प्रवर्तन प्रमुखों के इस

सम्मेलन में केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी, राजस्व विभाग के सचिव, केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) के अध्यक्ष तथा आयकर विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ राज्य और केंद्रीय जीएसटी संरचनाओं के प्रमुख भी मौजूद रहे।

ओला इलेक्ट्रिक टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड को मिला पहला पीएलआई-ऑटोमोटिव सर्टिफिकेट

नई दिल्ली। इंटरनेशनल सेंटर फॉर ऑटोमोटिव टेक्नोलॉजी (आईसीएटी) मानेसर ने सोमवार को ओला इलेक्ट्रिक टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड को पहला पीएलआई-ऑटोमोटिव सर्टिफिकेट दे दिया। आईसीएटी मानेसर, भारी उद्योग मंत्रालय (एमएचआई) सरकार के तहत राष्ट्रीय ऑटोमोटिव बोर्ड (एनएबी) के प्रभागों में से एक है।

यह प्रमाणपत्र एमएचआई के अतिरिक्त सचिव डॉ. एस.जे.धींगर द्वारा ओला इलेक्ट्रिक के इंजीनियरिंग प्रमुख और सीनियर वीपी डॉ. हनीफ कुरैशी को आईसीएटी के निदेशक सौरभ दलेला की मौजूदगी में सौंपी गई। आईसीएटी से यह प्रमाणपत्र 'मेक इन भारत' अभियान के प्रति उनके समर्पण और घरेलू उत्पादन पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए मिला है।

भारी उद्योग मंत्रालय ने सोमवार को जारी बयान में कहा कि एमएचआई ने 2021 में ऑटोमोबाइल और ऑटो कंपोनेंट उद्योग के लिए पीएलआई योजना शुरू की थी। इस योजना के तहत ओला इलेक्ट्रिक की बैटरी इलेक्ट्रिक वाहन ने ऑटोमोटिव पीएलआई प्रमाणपत्र के लिए 50 प्रतिशत (न्यूनतम) डीवीए के मानदंडों को पूरा किया है। इस क्रांतिकारी योजना का उद्देश्य उन्नत ऑटोमोटिव टेक्नोलॉजी (एएटी) उत्पादों के स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देना और निवेश आकर्षित करना है।

फ्रांस की महिलाओं को मिला गर्भपात का संवैधानिक अधिकार

पेरिस। फ्रांस महिलाओं को विशेष अधिकार देते हुए गर्भपात को संवैधानिक अधिकार का दर्जा देने वाला दुनिया का पहला देश बन गया है। राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रां द्वारा बुलाए गए संसद के दोनों सदनों के विशेष सत्र में गर्भपात को संवैधानिक अधिकार का दर्जा दिया गया है। जानकारी के मुताबिक फ्रांस की संसद में इस प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया गया। इससे पहले राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रां ने कहा कि उन्होंने महिलाओं को गर्भपात का संवैधानिक अधिकार देने का वादा किया था। इस ऐतिहासिक फैसले के बाद प्रधानमंत्री गेब्रियल अटाल ने पेरिस में वर्सेल्स पैलेस में एकत्र हुए सांसदों और सीनेटरों से कहा कि हम सभी महिलाओं को एक संदेश भेज रहे हैं। उन्होंने कहा कि महिलाओं का शरीर उनका है और कोई भी उनके बदले निर्णय नहीं ले सकता है। उल्लेखनीय है कि अमेरिका और कई अन्य देशों की तुलना में फ्रांस में गर्भपात के अधिकारों को बहुत अधिक स्वीकार्यता प्राप्त है। फ्रांस की करीब 80 प्रतिशत आबादी इस तथ्य का समर्थन करती है कि उनके देश में गर्भपात कानूनी है।

नेपाल में सत्ता गठबन्धन के तीन नए मंत्रियों को राष्ट्रपति ने दिलाई शपथ

नेपाल। राष्ट्रपति भवन ह्यशीतल निवासह्ल में सोमवार शाम को तीन नये मंत्रियों को शपथग्रहण कराई गई। चार दलों के गठबन्धन में से तीन दलों ने सरकार में अपना एक-एक प्रतिनिधि भेजा है। जनता समाजवादी पार्टी ने आज शपथग्रहण में अपना प्रतिनिधि नहीं भेजा।

आज शाम को राष्ट्रपति भवन शीतल निवास में राष्ट्रपति रामचन्द्र पौडेल ने प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल ह्यप्रचंडह्ल की ओर से नियुक्त तीन मंत्रियों को शपथग्रहण कराई। शपथग्रहण करने वालों में एमाले पार्टी से पदम गिरी, माओवादी पार्टी से हितराज तामांग और राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी से डोल प्रसाद अर्याल हैं। फिलहाल तीनों नए मंत्रियों को बिना विभाग के ही रखा गया है। इस समय सारे मंत्रालय प्रधानमंत्री ह्यप्रचंडह्ल ने अपने पास रखे हैं। बाकी मंत्रियों का शपथग्रहण गठबन्धन दलों के बीच मंत्रालय को लेकर सहमति जुटने के बाद किया जाएगा।

प्रधानमंत्री ने इससे पहले आज अपने मंत्रिमंडल के पुराने सभी मंत्रियों को पदमुक्त कर दिया था। पिछले कुछ दिनों से नेपाली कांग्रेस के साथ विश्वास का संकट होने के कारण आज सुबह औपचारिक रूप से गठबंधन टूट गया था।

नेपाल में बदला सत्ता का गठबन्धन, प्रचण्ड और ओली ने फिर मिलाया हाथ

नेपाल। नेपाल का सत्तारूढ़ गठबंधन अंततः टूट गया। करीब एक वर्ष पुराने नेपाली कांग्रेस के साथ बना गठबन्धन तोड़ते हुए प्रधानमंत्री प्रचण्ड ने प्रमुख विपक्षी दल केपी ओली के साथ नये गठबन्धन का ऐलान कर दिया। पिछले कुछ दिनों से चल रहे सत्तारूढ़ गठबन्धन की खींचतान के बीच प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचण्ड ने बीती देर रात विपक्षी पार्टी के नेताओं के साथ बैठक कर नए सत्ता समीकरण का फैसला किया है। इस समीकरण में माओवादी के नेतृत्व में नेकपा एमाले, राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी, जनता समाजवादी पार्टी सहभागी है। नया समीकरण बनने के बाद आज सुबह बुलाई गई पुराने गठबन्धन की बैठक रद्द कर दी गई। उसके बाद नए गठबन्धन की बैठक आज सुबह हुई। नए समीकरण की घोषणा के साथ ही प्रचण्ड ने इस कदम को देश में वामपंथी दलों के ध्रुवीकरण और वाम एकता की तरफ महत्वपूर्ण कदम बताया है। नेकपा एमाले के अध्यक्ष केपी शर्मा ओली ने भी नए गठबन्धन बनने के बाद आज ही नए मंत्रियों के शपथ ग्रहण की जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि बदली हुई परिस्थिति में माओवादी के साथ गबन्धन बनाने का फैसला किया गया है।

पाकिस्तान में बर्फबारी और बारिश से 27 लोगों की मौत

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के विभिन्न हिस्सों में हुई मूसलाधार बारिश और बर्फबारी से मरने वालों की संख्या रविवार को 27 तक पहुंच गई। इनमें 18 बच्चे भी शामिल हैं। डॉन समाचार पत्र ने प्रांतीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अफसरों के हवाले से अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी है।

अधिकारियों ने कहा है कि इसके अलावा पिछले दो दिनों में बारिश और बर्फबारी से 20 बच्चों सहित कम से कम 38 लोग घायल हो गए। इस बीच, गिलगित-बाल्टिस्तान में प्रमुख सड़कें बंद रहीं। इस वजह से हजारों लोग रास्तों में फंसे रहे। कई इलाकों में बिजली, पानी की आपूर्ति के साथ संचार सेवाएं बुरी तरह प्रभावित हुईं। दूसरी ओर क्वेटा और बलूचिस्तान के अन्य हिस्से ठंड की चपेट में रहे। तापमान शून्य से नीचे चला गया।

टाटा मोटर्स दो हिस्सों में बंटेगी, कंपनी के बोर्ड ने डीमर्जर को दी मंजूरी

नई दिल्ली। वाहन निमार्ता कंपनी टाटा मोटर्स लिमिटेड (टीएमएल) अपने कारोबार को दो हिस्सों में बांटने वाली है। टाटा मोटर्स बोर्ड ने इसकी मंजूरी दे दी है। इसके तहत कंपनी कमर्शियल और पैसेंजर व्हीकल्स के अपने कारोबार को दो अलग-अलग लिस्टेड कंपनियों में बांटेगी। सभी शेयरहोल्डर्स को दोनों कंपनियों के शेयर मिलेंगे। टाटा मोटर्स ने सोमवार को शेयर बाजार को बताया कि कंपनी अपने कारोबार को दो हिस्सों में बांटेगी। कंपनी के मुताबिक टाटा मोटर्स के बोर्ड ने कंपनी के बिजनेस ऑपरेशंस को दो यूनिट में बांटने की मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही टाटा मोटर्स के पैसेंजर और कमर्शियल व्हीकल्स के अपने कारोबार को अलग करने का रास्ता साफ हो गया है। यह दोनों कंपनियां शेयर बाजार में लिस्ट होंगी। कंपनी के मुताबिक उसके वाणिज्यिक वाहन व्यवसाय और उससे संबंधित निवेश एक इकाई में रखा जाएगा। दूसरी इकाई में पैसेंजर वाहन (पीवी), ईवी (इलेक्ट्रिक वाहन) और जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) सहित यात्री वाहन के व्यवसाय और इससे संबंधित निवेश रहेंगे। टाटा मोटर्स ने कहा है कि डिमर्जर को एनसीएलटी व्यवस्था योजना के माध्यम से लागू किया जाएगा। एनसीएलटी योजना को टाटा मोटर्स बोर्ड, शेयर होल्डर्स, लेनदारों और नियामकों से मंजूरी की आवश्यकता है, जो सभी 12-15 महीनों में पूरा किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि टाटा मोटर्स भारत में व्यावसायिक वाहन बनाने वाली सबसे बड़ी कंपनी है। कंपनी का पुराना नाम टेल्को था। ये टाटा समूह की प्रमुख कंपनियों में से एक है। इसकी उत्पादन इकाइयां भारत में जमशेदपुर, पुणे और लखनऊ सहित अन्य कई देशों में हैं।